Vol.24, Issue 4 | Annual Subscription ₹ 480

फ़रवरी 2025

@NewsRotary /RotaryNewsIndia

रोटरी समाचार

भारत

www.rotarynewsonline.org

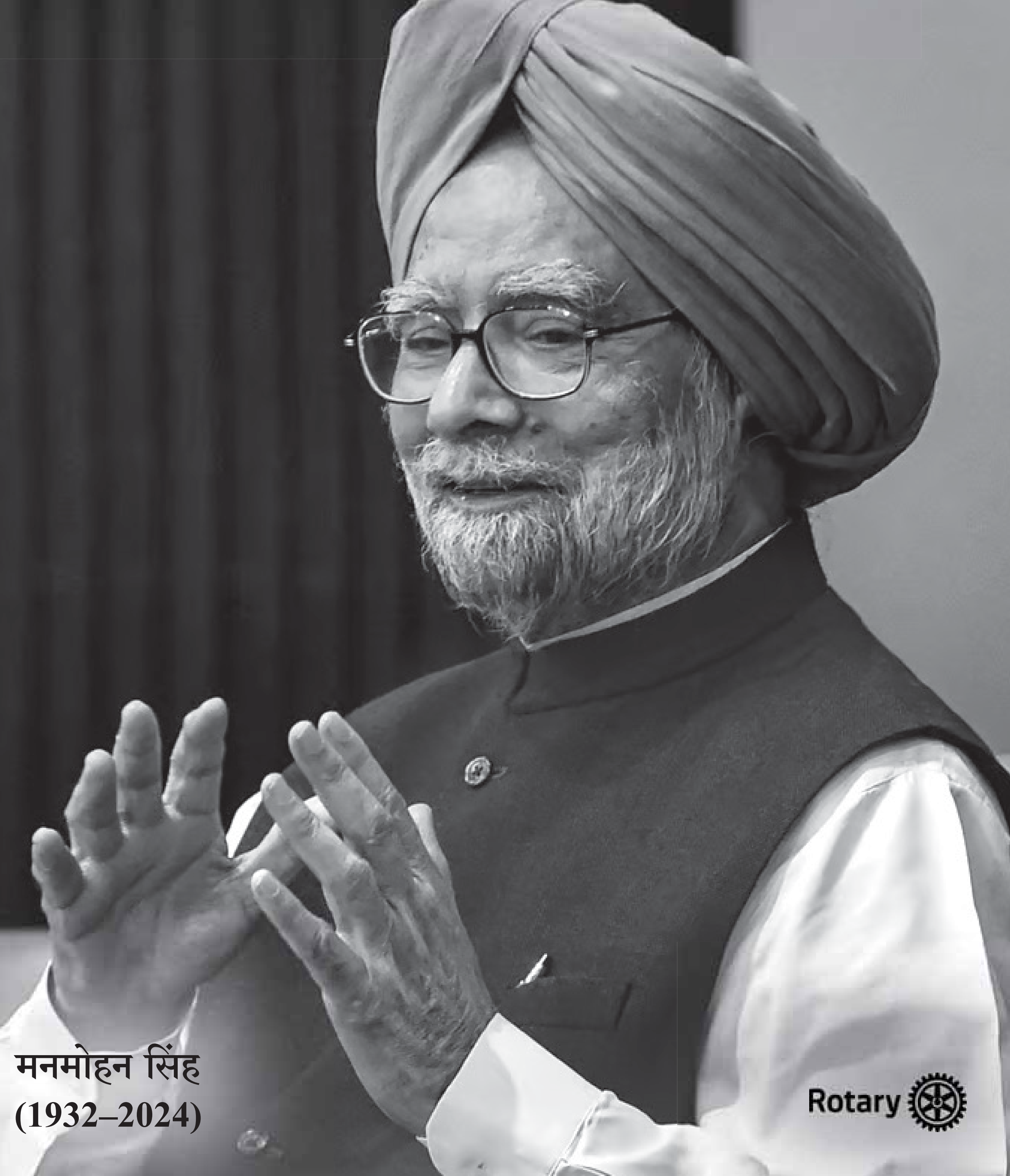

मनमोहन सिंह
(1932–2024)

Rotary

Rotary
District 3212

THE MAGIC OF ROTARY

VISION SCREENING *In Schools*

WE BELIEVE THAT EVERY CHILD DESERVES THE GIFT OF SIGHT

Vision Screening Project is not just about providing spectacles, It's about giving children a brighter future.

For two decades, the Vision Screening Project has made a profound difference in the lives of countless students in and around Virudhunagar.

This remarkable initiative goes beyond simply providing free vision screenings and spectacles. It has played a crucial role in identifying and addressing congenital vision defects among children, ensuring they receive timely treatment and the opportunity to reach their full potential.

7,859 free spectacles donated. Providing corrective eyewear has empowered students with clearer vision, improving their academic performance and overall quality of life.

278,713 students screened in 68 Schools. This extensive reach has enabled early detection of various vision problems, including those present at birth. 5 Students with congenital vision defects have been identified so far and corrective surgeries have been performed.

The Vision Screening Project stands as a testament to our Rotary District. Their dedication to ensuring that every child has access to quality eye care is truly commendable.

The project helps to ensure that all students have access to the vision care they need to succeed in school and in life.

IDHAYAM
PROMISE OF HEALTH AND HAPPINESS

Project Chairman
Rtn. MAPR.Krishnamurthy

Project Director
Rtn. R.Vadivel

LEKHA ads/Feb 25/FIW

ADVT.

विषयसूची

12
एक विद्वान प्रधानमंत्री

22
राजनीति में ईमानदारी की कमी

28
बच्चों के भविष्य के लिए लड़ना

32
रोटरी के भविष्य को आकार देना

40
गाँव के खेतों से शहर की थाली तक

46
सुनामी की तबाही के दो दशक बाद...

50
साड़ी की शाश्वत भव्यता का जश्न

Rotary

A publication of Rotary Global Media Network

ई-संस्करण दर हुई कम

1 जुलाई 2024 से हमारी ई-संस्करण सदस्यता ₹420 से संशोधित कर **₹324** कर दी गई हैं।

कोच्चि इंस्टिट्यूट का उत्कृष्ट कवरेज

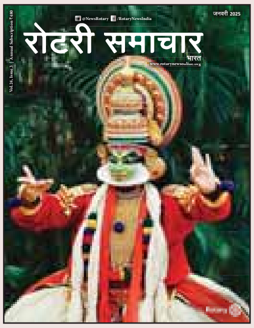

बहुप्रतीक्षित जनवरी अंक मेरे हाथ में है। इस अंक में मुख्य रूप से कोच्चि इंस्टिट्यूट को कवर किया गया है जिसमें फोटो फीचर ने इसके पृष्ठों को एक रंगीन रूप दिया है, जिसके लिए संपादक रशीदा भगत, जयश्री और हेमंत प्रशंसा के पात्र हैं। क बेहतरीन प्रस्तुति के लिए बधाई।

मैंने बड़ी उत्सुकता के साथ इसके पन्ने पलटे और इंस्टिट्यूट के विवरण और विचार-विमर्श को अच्छी तरह समझा। मुझे आश्चर्य एवं खुशी हुई कि इतने बड़े आयोजन के महत्वपूर्ण क्षणों और आयोजकों द्वारा प्रदान की गई मेहमाननवाजी को संपादक के संदेश में अच्छी तरह से सजाया गया जो उचित रूप से सरल अंग्रेजी में लिखा गया जिसे आसानी से समझा जा सकता है।

कोच्चि इंस्टिट्यूट के संयोजक और अध्यक्ष रो ई निदेशक अनिरुद्धा रॉयचौधरी और पीडीजी जॉन डेनियल को हर दृष्टिकोण से इतने सफल और परिपूर्ण इंस्टिट्यूट का आयोजन करने के लिए बधाई।

राज कुमार कपूर
रोटरी क्लब रूप नगर - मंडल 3080

जनवरी अंक में एक कथकली नर्तकी की कवर फोटो रंगीन एवं आकर्षक है। रो ई अध्यक्ष स्टेफ़नी अर्चिक ने जापान के एक क्लब का उदाहरण देते हुए नए सदस्यों को आकर्षित करने और उन्हें बनाए रखने की आवश्यकता को अच्छी तरह से समझाया।

संपादक का संदेश एक सुनियोजित कोच्चि इंस्टिट्यूट का बढ़िया विवरण प्रदान करता है। मैं उन नेताओं को धन्यवाद देता हूँ जिन्होंने इसे इतनी समझदारी से संचालित किया। जहाँ टीआरएफ न्यासी प्रमुख और न्यासी दोनों ही सदस्यों से फाउंडेशन को उदारतापूर्वक दान करने का आग्रह करते हैं वहीं रो ई निदेशक अनिरुद्धा रॉयचौधरी ने आज हमारे सामने आने वाली चुनौतियों और बाधाओं को दूर करने के तरीकों पर ध्यान केंद्रित किया।

कवर स्टोरी *तीसरा विश्वयुद्ध शुरू हो चुका है...* आंखें खोलने वाली है। कोच्चि इंस्टिट्यूट की सभी रिपोर्टें और चित्र पृष्ठ अद्भुत हैं। इस अंक के अन्य लेख भी उल्लेखनीय हैं।

फिलिप मुलप्पोने एम टी
रोटरी क्लब त्रिवेंद्रम सबअर्बन - मंडल 3211

कवर स्टोरी *तीसरा विश्व युद्ध शुरू हो चुका है... मनुष्य और प्रकृति के बीच* को पढ़ना वाकई दिलचस्प है। मनुष्य की गतिविधियों ने वर्तमान संकट को जन्म दिया है जिसने तृतीय विश्व युद्ध जैसी स्थिति पैदा कर दी है जिसमें पर्यावरणीय क्षरण मानवता के लिए सबसे गंभीर खतरा बन चुका है। इस लेख में पर्यावरण के अनुकूल विशेषताओं वाले लद्दाख के स्कूल का भी बढ़िया विवरण दिया गया है। इतने प्रभावी रूप से एक स्थायी और पर्यावरण के अनुकूल जीवन शैली को अपनाने का संदेश देने के लिए लेखक को बधाई।

एस राघवेंद्रन, रोटरी क्लब अथुर - मंडल 2981

लेख *तृतीय विश्व युद्ध शुरू हो चुका है... मनुष्य और प्रकृति के बीच* वाकई अद्भुत है और बहुत ही शानदार तरीके से लिखा गया है। हर कोई जानता है कि इसका अंतिम परिणाम क्या होगा: प्रकृति ही विजयी होगी।

उदयसिंह राजपूत
रोटरी क्लब बेलगाम मिडटाउन - मंडल 3170

सदस्यता का अवसाद

सदस्यता में गिरावट पर मैंने रशीदा भगत द्वारा लिखे गए लेख को बड़ी दिलचस्पी के साथ पढ़ा। रोटरी में सदस्यता में गिरावट को रोकने के लिए क्लब नेतृत्व महत्वपूर्ण है। नए सदस्यों को शामिल करने के लिए अपने प्रभाव और शक्ति का उपयोग करने के बजाय क्लब अध्यक्षों को जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में सेवा-भाव रखने वाले व्यक्तियों की पहचान करने के प्रयास करने चाहिए। सेवा में रुचि रखने वाले पेशेवरों को क्लब की बैठकों में आमंत्रित किया जाना चाहिए और हमारी परियोजना पहलों के माध्यम से आकर्षित किया जाना चाहिए।

रोटरी क्लबों में उन्हें शामिल किए जाने से पहले उनके लिए अभिविन्यास सत्र और कार्यशालाएं आयोजित की जानी चाहिए। हमें गैर-रोटेरियनों के लिए आयोजित ऐसी कार्यशालाओं में अपनी बुद्धिमत्ता का उपयोग करना चाहिए। अगर हम ऐसे नए रोटेरियनों को आकर्षित करते हैं तो हम नेतृत्व में परिवर्तन के बावजूद भी उनसे रोटरी में रहने की उम्मीद कर सकते हैं।

एस मोहनकुमार
रोटरी क्लब पल्लीकोंडा
मंडल 3231

लेख *सदस्यता गिरावट को रोकिए* (जनवरी अंक) वाकई विचारणीय है।

क्लबों को कोच्चि इंस्टिट्यूट में रोटरी अध्यक्ष स्टेफनी उर्चिक द्वारा व्यक्त किए गए विचारों पर ध्यान देना चाहिए। हर बार जब हम किसी भी सदस्य को खोते हैं फिर चाहे कारण जो भी हो तो रोटरी की छवि कमजोर होती है और यह हमारे संगठन के लिए एक कलंक है। हमें एग्जिट इंटरव्यू के माध्यम से लोगों

के रोटरी छोड़कर जाने के कारणों का पता लगाने की कोशिश करनी चाहिए। हमें ये प्रश्न पूछने चाहिए: हमारी तरफ से क्या कमी है? क्या हम सेवा और मित्रता के प्राथमिक उद्देश्य खो रहे हैं? क्या हम नए सदस्यों को कोई गलत धारणा दे रहे हैं?

एक मजबूत क्लब नेतृत्व, हमारे विभिन्न सेवा क्षेत्रों में सार्थक परियोजनाएं और गतिविधियां, गर्मजोशी से भरी मित्रता और हर नए सदस्य को क्लब गतिविधियों में शामिल करने से उनको रोके रखने के अनुपात में सुधार हो सकता है। सभी नए सदस्यों को रोटरी में सेवा के लिए उपलब्ध विभिन्न अवसरों के बारे में शिक्षित किया जाना चाहिए।

यदि नए सदस्यों को क्लब के नेताओं और वरिष्ठ रोटेरियनों से एक स्पष्ट संदेश प्राप्त होता है कि रोटरी को क्या अद्वितीय बनाता है तो समझदार रोटेरियन सिवाय उम्र संबंधित समस्याओं के कभी भी रोटरी को छोड़कर नहीं जाना चाहेंगे। केवल वे सदस्य ही रोटरी को छोड़कर जाना चाहेंगे जिनकी सेवा के प्रति कोई प्रतिबद्धता नहीं है।

आर श्रीनिवासन
रोटरी क्लब बैंगलोर जे पी नगर
मंडल 3191

प्लास्टिक के कचरे से घर

दिसंबर अंक के सभी अद्भुत लेखों में से एक लेख प्लास्टिक रीसाइक्लिंग के बारे में है जिसमें पूरी तरह से प्लास्टिक के कचरे से बने एक घर का उल्लेख है। 13 टन एकल उपयोग वाले प्लास्टिक के कचरे से बनाए गए 625 वर्ग फुट के इस घर को शिल्पकार संतोष जाधव और उनकी कुशल टीम के समर्थन से रोटरी क्लब चंद्रपुर के एनेस्थेटिस्ट बालमुकुंद पालीवाल द्वारा तैयार किया गया है जो वास्तव में पर्यावरण का समर्थन करने के लिए सराहनीय कार्य है।

प्लास्टिक के कचरे के कारण फैलने वाला प्रदूषण पारिस्थितिकी तंत्र को अपरिवर्तनीय नुकसान पहुँचा रहा है और यह वाकई चिंताजनक है। प्लास्टिक को रीसायकल करने के कई तरीके हैं जैसे कपड़े, बैग, कटलरी, बोतलें, फूड ट्रे, जूते और निश्चित रूप से निर्माण सामग्री बनाना।

हालांकि इसकी खपत के मामले में डॉ पालीवाल की टीम जो प्रयास कर रही है उसकी बराबरी कोई नहीं कर सकता; प्लास्टिक को रीसाइकल करके उसे निर्माण सामग्री में बदलना। मुझे व्यक्तिगत रूप से लगता है कि उनके द्वारा विकसित इस मॉडल पर रोटरी इंडिया नेतृत्व द्वारा उच्चतम स्तर पर चर्चा की जानी चाहिए क्योंकि इसे न केवल भारत के अन्य स्थानों पर बल्कि दुनिया भर में दोहराया जा सकता है।

बालू उपहाडे
रोटरी क्लब नवी मुंबई लिंक टाउन
मंडल 3142

दिसंबर अंक में आंगनवाड़ी पर लिखी गई कवर स्टोरी एक उल्लेखनीय परियोजना है क्योंकि रोटरी एआई का उपयोग कर आंगनवाड़ी को अधिक कुशल और पारदर्शी बना रहा है ताकि गाजियाबाद में गरीब परिवारों के बच्चों को पौष्टिक भोजन देने के अलावा उन्हें शिक्षा भी प्रदान की जा सकें। यह जानकर खुशी होती है कि इस परियोजना को प्रधानमंत्री के निर्वाचन क्षेत्र वाराणसी में दोहराया जा रहा है।

मध्यप्रदेश में निरक्षरता को खत्म करने के लिए किया गया इतना बड़ा प्रयास एक सराहनीय परियोजना है वहीं रोटरी क्लब चन्द्रपुर के रोटेरियन बालमुकुंद पालीवाल द्वारा प्लास्टिक के कचरे से घर बनाने की पहल एक महान प्रयास है। मैं पिछले 28 वर्षों से *रोटरी न्यूज़* पढ़ रहा हूँ और यह देखकर खुशी होती है कि अब इसमें दिलचस्प और सूचनाप्रद लेख प्रकाशित हो रहे हैं।

एस एन शणमुगम
रोटरी क्लब पनरुती - मंडल 2981

मैं *रोटरी समाचार* के जनवरी अंक को पढ़ने के बाद डीजी रेखा गुप्ता से बहुत प्रभावित हूं।उनका AMAR (जोड़ें, बढ़ाएं, अनुकूलित करें, बनाए रखें) कॉन्सेप्ट, यदि सभी रोटरी क्लब इसे सच्ची भावना से अपनाएं, तो निश्चित रूप से हमारी सदस्यता को कई गुना बढ़ा देगा।

रोटरी में अधिक महिलाओं को शामिल करना भी समय की मांग है।

ओ पी खड़िया
रोटरी क्लब
जयपुर कोहिनूर
मंडल 3056

क्या आपने रोटरी न्यूज़ प्लस पढ़ा है?
यह ऑनलाइन प्रकाशन हर सदस्य की ईमेल आईडी पर भेजा जाता है। **रोटरी न्यूज़ प्लस** को हमारी वेबसाइट *www.rotarynewsonline.org* पर पढ़ें।

हम आपकी प्रतिक्रियाओं का स्वागत करते है। अपनी प्रतिक्रियाएं *rotarynews@rosaonline.org* या *rushbhagat@gmail.com* पर संपादक को मेल कीजिए। *rotarynewsmagazine@gmail.com* पर उच्च रेसोल्यूशन वाली तस्वीरें अपनी परियोजना के विवरण के साथ मेल कीजिए।

आपके क्लब/मंडल परियोजनाओं के संदेश, Zoom मीटिंग/वेबिनार पर जानकारी और उसके लिंक केवल संपादक को ई-मेल द्वारा *rushbhagat@gmail.com* या *rotarynewsmagazine@gmail.com* पर भेजे जाने चाहिए।
WhatsApp पर भेजे संदेशों पर विचार नहीं किया जाएगा।

अध्यक्ष की ज़बानी

आशा और परिवर्तन की लहरें

इस महीने, जब हम अंतर्राष्ट्रीय सभा और अध्यक्षीय शांति सम्मेलन के लिए एक साथ आएंगे, तब हम *रोटरी के जादू* का जश्न मनाएंगे जो वैश्विक संबंधों, परिकल्पनाओं और कार्रवाई का एक अनूठा मिश्रण जो हमें स्थायी परिवर्तन लाने के लिए सशक्त बनाता है।

सबसे प्रेरक उदाहरणों में से एक हमारा रोटरी शांति फैलोशिप कार्यक्रम है, जो एक अधिक शांतिपूर्ण एवं न्यायपूर्ण दुनिया बनाने के लिए रोटरी के मिशन की आधारशिला है।

23 से अधिक वर्षों से, रोटरी शांति फैलोशिप समुदायों को बदल रही है। दुनिया भर के अग्रणी विश्वविद्यालयों में चलने वाले हमारे रोटरी शांति केंद्रों ने 1,800 से अधिक साथियों को शिक्षित किया है जो अब 140 से अधिक देशों में काम करते हैं।

ये केंद्र संघर्ष समाधान, सतत विकास और शांति निर्माण जैसे क्षेत्रों में विशेषज्ञता का विकास करते हैं, और दुनिया की कुछ सबसे तनावपूर्ण चुनौतियों से निपटने के लिए शांति-मित्रों को तैयार करते हैं। यह कार्यक्रम इस बात का उदाहरण है कि कैसे रोटरी का दृष्टिकोण कार्रवाई में परिवर्तित होता है, और आशा एवं परिवर्तन का एक तरंगनुमा प्रभाव पैदा करता है।

इस महीने अध्यक्षीय शांति सम्मेलन के दौरान, हम इस्तांबुल में अपने नवीनतम शांति केंद्र के उद्घाटन के साथ एक महत्वपूर्ण कदम का जश्न मना रहे हैं। यह केंद्र मध्य पूर्व और उत्तरी अफ्रीका में शांति निर्माण की चुनौतियों का समाधान करने के लिए नेतृत्वकर्ताओं को प्रशिक्षित करने पर ध्यान केंद्रित करेगा, जिससे रोटरी का प्रभाव और भी अधिक बढ़ेगा।

शांति मित्र परिवर्तन के समर्पित विजेता हैं, जो शरणार्थी पुनर्वास, युवा एवं महिला सशक्तिकरण और संघर्ष क्षेत्रों में सुलह जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों को संबोधित करते हैं। इनमें से कई ने महत्वपूर्ण संगठनों की स्थापना की या सरकारों, गैर-सरकारी संगठनों और संयुक्त राष्ट्र और विश्व बैंक जैसे अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों में नेतृत्व की भूमिका निभाई।

ऐसी ही एक प्रेरक कहानी युगांडा के मेकरेरे विश्वविद्यालय में 2024 रोटरी शांति मित्र नतांग जूलियस मेलेंग की है। अपनी सामाजिक परिवर्तन पहल के माध्यम से, जूलियस ने कैमरून में युवाओं को शांति निर्माण और नेतृत्व में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए सशक्त बनाने हेतु काम किया है।

उनकी परियोजना ने संघर्ष से प्रभावित क्षेत्रों में युवाओं एवं सामुदायिक अधिकारियों को संघर्ष की रोकथाम, नागरिक जुड़ाव और नेतृत्व में प्रशिक्षण प्रदान किया, जिससे लोग स्थायी शांति प्रयासों को चलाने में सक्षम बनें।

जूलियस ने सीमित धन और सुरक्षा जोखिमों जैसी बाधाओं को दूर करने और सार्थक प्रभाव डालने के लिए रोटरी के वैश्विक नेटवर्क का उपयोग किया। रोटरी शांति फैलोशिप ने जूलियस को अपने दृष्टिकोण को वास्तविकता में बदलने के लिए उपकरण और समर्थन दिया। उनका काम *रोटरी के जादू* - लोगों को जोड़ने, संसाधनों को साझा करने और एक सामान्य उद्देश्य के लिए एकजुट होने की परिवर्तनकारी शक्ति - का प्रतीक है।

जैसा कि हम अपने शांति मित्रों की उपलब्धियों पर विचार करते हैं और शांति के लिए रोटरी की स्थायी प्रतिबद्धता का जश्न मनाते हैं, आइए हम उस भूमिका की भी सराहना करें जो हमारे 1.2 मिलियन सदस्य सेवा के माध्यम से जादू बनाकर निभाता है।

साथ मिलकर, हम अपने प्रभाव को बढ़ा सकते हैं, नेतृत्वकर्ताओं की नई पीढ़ियों को प्रेरित कर सकते हैं, और एक उज्ज्वल, अधिक शांतिपूर्ण भविष्य का निर्माण कर सकते हैं।

स्टेफ़नी ए अर्चिक
अध्यक्ष, रोटरी इंटरनेशनल

चित्र: लूसी हेवेट

एक सज्जन प्रधानमंत्री

भारत के किसी अन्य प्रधानमंत्री को उस तरह के अपमान, तिरस्कार और अवहेलना का सामना नहीं करना पड़ा जो दो कार्यकालों के लिए भारत के प्रधान मंत्री के रूप में सेवा देने वाले डॉ मनमोहन सिंह को सहना पड़ा। सार्वजनिक जीवन में इतनी गरिमा और शालीनता का उदाहरण पेश करने वाले इस मृदुभाषी व्यक्ति के खिलाफ तीखे हमले दुर्भाग्यवश केवल भाजपा के नेतृत्व में विपक्षी दलों द्वारा ही नहीं किए गए बल्कि उनकी अपनी कांग्रेस पार्टी द्वारा भी ऐसा किया गया। याद कीजिए कांग्रेस नेता राहुल गांधी को जिन्होंने दो साल या उससे अधिक समय से जेल में बंद सांसदों को अयोग्य न ठहराने का वादा करते हुए उस अध्यादेश को ''पूरी तरह बकवास'' करार दिया था? ऐसा करके उन्होंने स्पष्ट रूप से डॉ सिंह के अधिकार को कम कर दिया जिनके नेतृत्व में यह अध्यादेश पेश किया गया था।

हालांकि वह एक प्रखर विद्वान और अर्थशास्त्री थे जिन्होंने वित्त मंत्री (1991-96) के रूप में बड़ी निपुणता से भारतीय अर्थव्यवस्था को संकटग्रस्त परिस्थितियों से बाहर निकाला और उस आर्थिक विकास के लिए एक स्पष्ट मार्ग तैयार किया जिसका आज हम आनंद ले रहे हैं, डॉ सिंह को कभी भी भारतीय राजनेताओं या लोगों से वो मान-सम्मान नहीं मिला जिसके वह हकदार थे केवल इसलिए कि वह राजनीति में उतने सक्रिय नहीं थे और आत्म-प्रचार की कला से अनजान थे। इसके अलावा अगर स्पष्ट रूप से कहें तो हम हमारे राजनीतिक नेताओं के मामले में थोड़ी विचित्र पसंद रखते हैं। हम ऐसे लोगों से दूरी रखते है जो शांत, मृदुभाषी, प्रतिष्ठित, शिक्षित और ईमानदार होते है और जिनके पास ज्ञान और समझदारी का भंडार होता है। लेकिन हम उन लोगों को गले लगाते हैं जो खूब शोर मचाते है अश्लील होते है और स्वेच्छा से उनके लंबे-चौड़े गरजने वाले भाषणों के माध्यम से किए गए वादों के प्रति आकर्षित हो जाते हैं। दिवंगत मनमोहन सिंह इनमें से किसी भी 'योग्यता' पर खरे नहीं उतरते थे इसलिए वह उस एकमात्र लोकसभा चुनाव में हार गए जो उन्होंने दक्षिण दिल्ली से लड़ा था। गांधी परिवार के गुलाम के रूप में उनका हमेशा मजाक उड़ाया गया और यहाँ तक कि उन्हें एक गूंगे प्रधानमंत्री, मौन बाबा आदि कहा जाता था।

लेकिन जहाँ भारत, भारतवासी और विपक्षी राजनेताओं ने डॉ सिंह को सोनिया गांधी की कठपुतली समझकर नकार दिया था वहीं भारत के बाहर उनकी छवि पूरी तरह से अलग थी। वैश्विक मंच पर जहाँ विकसित और अधिक विचारशील देशों के नेता इकट्ठे होते थे वहाँ पर वैश्विक अर्थव्यवस्था के मुद्दे पर डॉ सिंह के भाषणों को गंभीरता से लिया जाता था। पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा जो अमेरिकी राजनीति में उनके बाद आने वाले राष्ट्रपतियों के मुकाबले बहुत ही शालीन व्यक्ति थे और दिवंगत भारतीय प्रधानमंत्री के बहुत बड़े प्रशंसक थे और उन्होंने उन्हें ''बुद्धिमान, विचारशील और ईमानदारी से परिपूर्ण बताया। कनाडा में आयोजित जी-20 शिखर सम्मेलन के लिए उन्होंने कठिन समय में न केवल भारत को बल्कि दुनिया को प्रदान किए गए असाधारण नेतृत्व की प्रशंसा की। जब प्रधानमंत्री सिंह बोलते थे तो लोग उन्हें सुनते थे विशेषरूप से आर्थिक मुद्दों पर उनके गहरे ज्ञान की वजह से।''

असाधारण विनम्रता वाले एक आत्म-प्रभावशाली व्यक्ति होने के नाते डॉ सिंह ने अपनी विद्वता और परिपक्वता के कारण सार्वजनिक जीवन में शालीनता और व्यक्तिगत ईमानदारी का एक उच्च मानक स्थापित किया। जब उनसे प्रधानमंत्री के रूप में उनके कार्यकाल के बारे में पूछा गया तो उन्होंने एक बार मीडिया से कहा था: ''मैं पूरी ईमानदारी से कहता हूँ कि मैंने पूरे समर्पण, प्रतिबद्धता और ईमानदारी के साथ इस देश की सेवा करने की कोशिश की है। मैंने कभी भी अपने पद का उपयोग अपने मित्रों या रिश्तेदारों को समृद्ध करने या उन्हें पुरस्कृत करने के लिए नहीं किया।''

भारत के सबसे महान सपूतों में से एक के निधन पर शोक व्यक्त करते हुए हमें उनके प्रसिद्ध व्यथित शब्दों को याद करते हुए लज्जा महसूस करनी चाहिए: ''इतिहास मेरे प्रति समकालीन मीडिया या विपक्षी दलों की तुलना में अधिक दयालु होगा।'' ये शायद इतने सौम्य सरदार द्वारा बोले गए सबसे कठोर शब्द होंगे।

भगवान आपकी आत्मा को शांति दें। आपने इतनी विशिष्टता और ईमानदारी के साथ जिस देश की इतनी सेवा की उस देश से आप बेहतर व्यवहार किए जाने के हकदार थे।

रशीदा भगत

सदस्यता सारांश

1 जनवरी 2025 तक

स्रोत: रो ई दक्षिण एशिया कार्यालय

रो ई मंडल	रोटरी क्लब	रोटेरियनों की संख्या	महिला रोटेरियन (%)	रोटरेक्ट क्लब	रोटरेक्ट सदस्य	इंटरेक्ट क्लब	आरसीसी
2981	138	5,896	5.48	56	106	34	255
2982	91	3,965	6.03	30	434	96	188
3000	148	6,201	11.63	81	1,060	242	218
3011	136	5,298	30.88	72	1,717	229	41
3012	158	3,891	24.67	53	650	106	61
3020	82	4,546	8.03	33	446	118	351
3030	102	5,501	16.32	60	912	501	399
3040	102	2,352	14.84	35	733	62	216
3053	75	3,148	17.66	23	335	40	131
3055	83	3,327	11.90	47	682	58	391
3056	84	3,659	25.53	21	182	105	201
3060	100	5,043	15.70	52	1,856	78	152
3070	116	3,035	15.09	34	253	70	64
3080	110	4,324	13.51	58	1,878	207	127
3090	133	2,574	6.14	22	340	359	174
3100	115	2,171	10.64	15	81	41	151
3110	134	3,699	11.87	19	159	103	114
3120	90	3,717	15.71	34	487	43	58
3131	134	5,360	35.73	120	2,403	299	217
3132	97	3,741	14.54	29	339	148	226
3141	122	6,445	28.36	122	3,404	209	246
3142	115	3,952	22.80	56	1,628	130	99
3150	104	3,982	12.73	82	1,537	125	130
3160	78	2,453	8.97	24	62	95	82
3170	142	6,553	15.06	88	1,012	196	184
3181	87	3,679	10.76	39	395	120	122
3182	85	3,661	11.09	46	231	113	104
3191	90	3,291	19.54	72	1,743	178	36
3192	80	3,329	22.11	60	1,558	158	40
3201	167	6,513	10.15	107	1,897	108	97
3203	97	5,013	7.46	45	719	156	39
3204	80	2,597	8.12	22	185	19	17
3211	160	5,123	8.88	11	122	32	135
3212	120	4,631	10.73	85	545	211	153
3231	95	3,578	7.04	29	328	83	418
3233	87	3,027	18.80	52	1,529	54	63
3234	78	3,095	24.23	61	1,492	88	42
3240	100	3,515	17.10	42	742	69	248
3250	114	4,372	23.47	34	470	72	192
3261	100	3,401	24.40	18	108	37	46
3262	117	3,830	16.19	82	762	652	289
3291	144	3,741	27.32	NA	NA	92	766
India Total	**4,590**	**171,229**		**2,071**	**35,522**	**5,936**	**7,283**
3220	70	2,001	16.94	83	3,484	139	78
3271	108	1,436	20.33	103	418	275	28
0063 (3272)	76	1,116	19.80	48	283	23	49
0064 (3281)	239	5,058	17.40	185	995	120	211
0065 (3282)	137	2,728	8.65	167	1,097	25	48
3292	157	5,459	19.05	175	5,334	124	141
S Asia Total	**5,377**	**189,027**	**16.18**	**2,832**	**47,133**	**6,642**	**7,838**

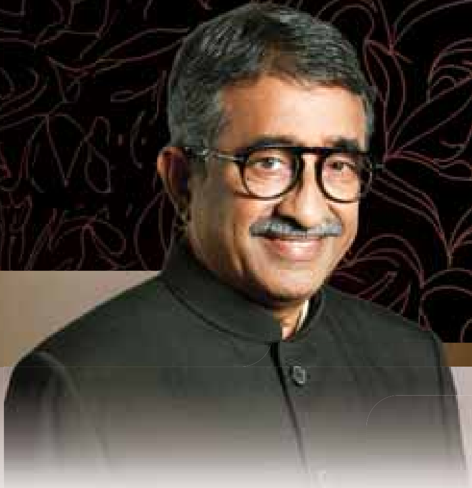

निदेशक का संदेश

शांति, विकास और दान की प्रतिबद्धता

प्रिय साथी रोटेरियन,

जैसा कि हम शांति निर्माण और संघर्ष समाधान माह को चिह्नित करते हैं, आइए संघर्ष के विनाशकारी प्रभाव की कठोर वास्तविकता का सामना करें। संख्या चौंका देने वाली है: द्वितीय विश्व युद्ध के बाद से 108 मिलियन से अधिक लोगों की जान चली गई, जिसमें प्रतिदिन 2,000 मौतें हुईं। आज, 40 सक्रिय संघर्षों ने 26.6 मिलियन शरणार्थियों सहित 82.4 मिलियन लोगों को विस्थापित किया है। लेकिन आंकड़ों से परे, हमें मानव त्रासदी को पहचानना चाहिए: टूटे परिवार, बिखरे समुदाय, और अपंग अर्थव्यवस्थाएं। हिंसा का 14.3 ट्रिलियन डॉलर का मूल्य टैग सामूहिक कार्रवाई की तत्काल आवश्यकता की याद दिलाता है।

रोटेरियनों के रूप में, हम एक वैश्विक आंदोलन का हिस्सा हैं जो दशकों से शांति और संघर्ष समाधान का समर्थन कर रहा है। हमारी शांति फैलोशिप, वैश्विक अनुदान, और जमीनी स्तर की परियोजनाएं दूरियां कम करने, संवाद को बढ़ावा देने और घावों को भरने के लिए समुदायों को सशक्त बनाती हैं। आइए हम उन पहलों का समर्थन करने के लिए फिर से प्रतिबद्ध हों जो लोगों को एक साथ लाती हैं, पीड़ा को कम करती हैं और स्थायी शांति का मार्ग बनाती हैं। एक साथ काम करके, हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि रोटरी उस दुनिया में अच्छाई के लिए एक शक्तिशाली शक्ति बनी रहे, जिसे इसकी अब पहले से कहीं अधिक आवश्यकता है। मुझे यह घोषणा करते हुए प्रसन्नता हो रही है कि हमारा अगला शांति केंद्र इस्तांबुल, तुर्की में बहसेसिहिर विश्वविद्यालय में स्थापित किया जा रहा है।

इस्तांबुल में 20-22 फरवरी तक इस नए शांति केंद्र की स्थापना के उपलक्ष्य में अध्यक्षीय शांति सम्मेलन की योजना बनाई गई है। आइए हम रोटरी के शांति मिशन को समझने और उसका हिस्सा बनने के लिए इस सम्मेलन में भाग लें। इसके अलावा, पहली बार 22 और 23 मार्च को बेंगलुरु में दक्षिण एशिया शांति सम्मेलन आयोजित किया जा रहा है। मैं आपको इस सम्मेलन में भाग लेने और अधिक सामंजस्यपूर्ण दुनिया बनाने के हमारे प्रयासों के लिए अपनी आवाज उठाने के लिए प्रोत्साहित करता हूं।

आज की तेज और सतत-विकासशील दुनिया में, रोटरी की निरंतर प्रासंगिकता और प्रभाव के लिए सदस्यों का अवरोधन महत्वपूर्ण है। जैसे-जैसे हमारी सेवा पहले प्रतिबद्ध और सफल व्यक्तियों को आकर्षित करते हुए ऊपर उठती है, यह आवश्यक है कि हम अपनेपन और उद्देश्य की भावना को बढ़ावा देने के लिए अपने सदस्यों को सार्थक रूप से संलग्न करें। ऐसा करके, हम सकारात्मक बदलाव लाने के लिए उनकी ऊर्जा, विशेषज्ञता और जुनून का उपयोग कर सकते हैं। यदि हम अपने सदस्यों को रोके रखने में विफल रहते हैं, तो हम मूल्यवान प्रतिभा, विशेषज्ञता और संस्थागत ज्ञान खोने का जोखिम उठाते हैं, और अंततः अनुकूलन और पनपने की हमारी क्षमता को बाधित करते हैं। हालांकि, अगर हर रोटेरियन सिर्फ एक नए सदस्य को बनाए रखने की जिम्मेदारी लें, तो इसका गहरा प्रभाव पड़ेगा जो हमारे सामूहिक प्रभाव को मजबूत करेगा और हमारे संगठन के लिए एक जीवंत भविष्य सुनिश्चित करेगा। हमें एक सतत सदस्यता वृद्धि की आवश्यकता है ताकि सेवा करने एवं हमारे संगठन का सशक्तिकरण सुनिश्चित किया जा सकें।

रोटरी संस्थान हमारा जीवन वृक्ष है, जो एक सदी से अधिक समय से पोषित है और आज तक हमें संभाल रहा है। हमारे 2.025 बिलियन डॉलर के लक्ष्य तक पहुंचने के लिए, हमें एक साथ काम करना चाहिए, और मुझे जोन 4, 5, 6 और 7 को प्रमुख प्राप्तकर्ताओं से महत्वपूर्ण योगदानकर्ताओं तक विकसित होता देखने पर गर्व है। हालाँकि, सालाना योगदान करने वाले सदस्यों का केवल एक छोटा सा प्रतिशत होने के कारण, मैं आपसे अपने दिल और बटुए दोनों को खोलने का आग्रह करता हूं, यह पहचानने के लिए कि हर छोटे या बड़े योगदान से फर्क पड़ता है।

आइए दान की संस्कृति को बढ़ावा दें और अपने संस्थान के निरंतर प्रभाव को सुनिश्चित करें, दुनिया भर में जीवन को बदलें और हमारे समुदायों और उससे परे जादू पैदा करने की हमारी यात्रा को जारी रखें।

राजु सुब्रमण्यन
रो ई निदेशक, 2023-25

2025
कन्वेंशन

रोटरेक्टर - जीवन मित्र

रोटरेक्टर मनाते है जश्न! इसका प्रमाण रोटरी इंटरनेशनल कन्वेंशन में रोटरेक्टर अनुभव का दस्तावेजीकरण करने वाले उनके फोटो और वीडियो से मिलता है। सदस्यों के समूह चित्र जिसमें वे शांति संकेत देते हुए या चुंबन उड़ाते हुए दिखाई देते है, इन कैप्शन के साथ होते है जीवन भर की "रोटरेक्ट मित्रता या दुनिया भर से मेरा परिवार।"

ये दोस्त मेजबान शहर के प्रमुख स्थलों पर पोज़ देते हैं, कभी शॉपिंग बैग पकड़े हुए और कभी मिल्की बोबा टी जैसे लुभावने ड्रिंक्स के साथ। अगर आप किसी सम्मेलन में जा सकते है तो जाने की कोशिश जरूर करें, वेनेजुएला के सैन जोकिन रोटरेक्ट क्लब के एक सदस्य डैनियल ज़वाला कहते हैं। जाने की कोशिश जरूर करें क्योंकि इससे आपकी ज़िंदगी बदल जाएगी। आप सम्मेलन के आसपास अपनी छुट्टियां बिताने की योजना बना सकते हैं। हम कनाडा में रोडियो में या कैलगरी के प्रसिद्ध पीस ब्रिज पर रोटरेक्टरों की काउबॉय टोपी के साथ सेल्फी देखने के लिए बहुत उत्सुक है।

रोटरेक्टरों का कहना है कि चाहे वे अपने पहले सम्मेलन में भाग ले रहे हों या पांचवें में, वे उद्घाटन सत्र में ध्वज समारोह और प्रेरक वक्ताओं से प्रभावित होते हैं। कैलगरी के लिए निर्धारित एक वक्ता, डेविड लामोटे, जिन्होंने TEDx टॉक दिया और एक किताब लिखी जिसमें यह बताया गया है कि नायक अकेले अपने दम पर दुनिया को नहीं बदलते। उन्होंने एक रोटरी शांति निर्माता बनने के लिए अपने लोक संगीत करियर से ब्रेक लिया।

रोटरेक्टरों की सम्मेलन की तस्वीरें यह दर्शाती हैं कि रोटरी का गंभीर कार्य खुशियों से भरा हुआ है। वे केवल सम्मेलन में भाग नहीं लेते - वे इसका नेतृत्व भी करते हैं, हाउस ऑफ फ्रेंडशिप बूथों में भी अपनी सेवा देते हैं और ब्रेकआउट सत्रों में भाषण देते हैं। पिछले साल सिंगापुर में रोटरेक्टरों ने एक सत्र का नेतृत्व करते हुए रोटरी क्लब में बदलाव पर चर्चा की और विभिन्न उम्र के सदस्यों के बीच रिश्तों को मजबूत करने के लिए आपसी सहानुभूति का सुझाव दिया। रोटरेक्टर फिर से 21-25 जून को कैलगरी में नेतृत्व करेंगे। आखिरकार, रोटरी + एक्शन = रोटरेक्ट।

अधिक जानें और
convention.rotary.org
पर रजिस्टर करें।

रोटरी संख्या

रोटरी क्लब	:	36,382	रोटरी सदस्य	:	1,151,109
रोटरेक्ट क्लब	:	9,198	रोटरेक्ट सदस्य	:	127,554
इंटरेक्ट क्लब	:	15,999	इंटरेक्ट सदस्य	:	368,069
आरसीसी	:	13,766			

जनवरी 15, 2025 तक

गवर्नर्स काउंसिल

RID 2981 बस्करन एस
RID 2982 शिवकुमार वी
RID 3000 राजा गोविंदसामी आर
RID 3011 महेश पी त्रिखा
RID 3012 प्रशांत राज शर्मा
RID 3020 डॉ एम वेंकटेश्वर राव
RID 3030 राजिंदर सिंह खुराना
RID 3040 अनीश मलिक
RID 3053 राहुल श्रीवास्तव
RID 3055 मोहन पाराशर
RID 3056 डॉ राखी गुप्ता
RID 3060 तुषार शाह
RID 3070 डॉ परमिंदर सिंह ग्रोवर
RID 3080 राजपाल सिंह
RID 3090 डॉ संदीप चौहान
RID 3100 दीपा खन्ना
RID 3110 नीरव निमेश अग्रवाल
RID 3120 परितोष बजाज
RID 3131 शीतल शरद शाह
RID 3132 डॉ सुरेश हीरालाल साबू
RID 3141 चेतन देसाई
RID 3142 दिनेश मेहता
RID 3150 शरथ चौधरी कटरागड्डा
RID 3160 डॉ साधु गोपाल कृष्ण
RID 3170 शरद पाई
RID 3181 विक्रमदत्त
RID 3182 देव आनंद
RID 3191 सतीश माधवन कननोर
RID 3192 एन एस महादेव प्रसाद
RID 3201 सुंदरवदिवेलु एन
RID 3203 डॉ एस सुरेश बाबू
RID 3204 डॉ संतोष श्रीधर
RID 3211 सुधी जब्बार
RID 3212 मीरनखान सलीम
RID 3231 राजनबाबू एम
RID 3233 महावीर चंद बोथरा
RID 3234 एन एस सरवनन
RID 3240 सुखमिंदर सिंह
RID 3250 बिपिन चाचान
RID 3261 अखिल मिश्रा
RID 3262 यज्ञनिस महापात्रा
RID 3291 डॉ कृष्णेंदु गुप्ता

प्रकाशक एवं मुद्रक **पी टी प्रभाकर**, 15 शिवास्वामी स्ट्रीट, मायलापोर, चेन्नई - 600004, रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट के लिए रासी ग्राफिक्स प्राइवेट लिमिटेड, 40, पीटर्स रोड, रोयापेट्टा, चेन्नई - 600014 से मुद्रित एवं रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट, दुगड़ टावरस, 3rd फ्लोर, 34 मार्शलस रोड, एगमोर, चेन्नई - 600008 से प्रकाशित।
संपादक: **रशीदा भगत**

योगदान का स्वागत है लेकिन संपादित किया जाएगा। प्रकाशित सामग्री का आरएनटी की अनुमति सहित, यथोचित श्रेय देते हुए प्रयोग किया जा सकता है।

Website

न्यासी मंडल

राजु सुब्रमण्यन RID 3141
रो ई निदेशक और अध्यक्ष, रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट

अनिरुधा रॉयचौधरी RID 3291
रो ई निदेशक

डॉ भरत पांड्या RID 3141
टीआरएफ ट्रस्टी

राजेंद्र के साबू RID 3080
कल्याण बेनर्जी RID 3060
शेखर मेहता RID 3291
अशोक महाजन RID 3141
पी टी प्रभाकर RID 3234
डॉ मनोज डी देसाई RID 3060
सी भास्कर RID 3000
कमल संघवी RID 3250
डॉ महेश कोटबागी RID 3131
ए एस वेंकटेश RID 3234
गुलाम ए वाहनवती RID 3141

निर्वाचित रो ई निदेशक

एम मुरुगानंदम RID 3000
के पी नागेश RID 3191

कार्यकारी समिति के सदस्य (2024-25)

एन एस महादेव प्रसाद RID 3192
अध्यक्ष, गवर्नर्स काउंसिल

अखिल मिश्रा RID 3261
सचिव, गवर्नर्स काउंसिल

आर राजा गोविंदसामी RID 3000
कोषाध्यक्ष, गवर्नर्स काउंसिल

राखी गुप्ता RID 3056
सलाहकार, गवर्नर्स काउंसिल

संपादक
रशीदा भगत

उप संपादक
जयश्री पद्मनाभन

प्रशासन और विज्ञापन प्रबंधक
विश्वनाथन के

रोटरी न्यूज़ ट्रस्ट
3rd फ्लोर, दुगर टावर्स, 34 मार्शल रोड, एग्मोर
चेन्नई 600 008, भारत
फोन: 044 42145666
rotarynews@rosaonline.org
www.rotarynewsonline.org

Magazine

फाउंडेशन ट्रस्टी अध्यक्ष का संदेश

शांति के राजदूत

कुछ उपायों से, दुनिया भर में अधिक शांतिपूर्ण समाजों के निर्माण में बड़ी प्रगति हुई है। फिर भी वैश्विक स्तर पर चल रहे क्षेत्रीय युद्धों, झड़पों और हिंसा की वास्तविकता हमें याद दिलाती है कि हमें अभी भी कितनी दूर जाना है। ये संघर्ष हम सभी की मानवता को प्रभावित करते हैं, चाहे वे हमसे दूर हो रहे हों या हमारे अपने समुदायों में।

तो, शांति कायम करने के लिए रोटरी क्या कर सकती है?

शांति एवं संघर्ष की रोकथाम करने वाली एक वैश्विक शक्ति के रूप में, रोटरी संघर्ष के मूल कारणों को संबोधित करती है। 1945 के संयुक्त राष्ट्र चार्टर में हमारी भूमिका इस स्थायी प्रतिबद्धता की एक साक्षी है।

इस काम की एक अन्य आधारशिला रोटरी शांति केंद्र कार्यक्रम है। रोटरी संस्थान के माध्यम से, ये सात केंद्र पूरी तरह से वित्त पोषित फैलोशिप प्रदान करते हैं, और व्यक्तियों को संघर्ष एवं विकास की जटिल चुनौतियों का समाधान करने के लिए सशक्त बनाते हैं।

1,800 से अधिक पूर्व छात्र अब 140 से अधिक देशों में शांति के समर्थक के रूप में काम करते हैं, जिससे उनके समुदायों में स्थायी परिवर्तन आता है। पाब्लो क्यूवास जैसे पूर्व छात्रों को ही ले लीजिये, जो 2015 के शांति मित्र हैं, जो इंटरनेशनल आर्गेनाइजेशन फॉर माइग्रेशन के पराग्वे कार्यालय का नेतृत्व करते हैं और संकटों से विस्थापित लोगों की सहायता करते हैं। 2023 की स्नातक लेनी किंज़ली संयुक्त राष्ट्र विश्व खाद्य कार्यक्रम के साथ सूडान की मानवीय जरूरतों की वकालत करती हैं। युकी दाइज़ुमोटो, 2007 के शांति साथी, जापान इंटरनेशनल कोऑपरेशन एजेंसी के साथ अफ़गानिस्तान में जीवन परिवर्तक कृषि और आजीविका परियोजनाओं का समर्थन करते हैं। ये सभी व्यक्ति शांति के क्षेत्र में रोटरी के निवेश को मूर्त रूप देते हैं।

इस महीने, 2030 तक हर बसे हुए महाद्वीप पर शांति केंद्र बनाने के हमारे दृष्टिकोण के हिस्से के रूप में, संस्थान न्यासी एशिया में हमारे आठवें रोटरी शांति केंद्र की स्थापना की योजना पर विचार करेंगे।

लेकिन हमारी प्रतिबद्धता शांति केंद्रों से भी बहुत आगे है। इंस्टीट्यूट फॉर इकोनॉमिक्स एंड पीस के साथ रोटरी की साझेदारी के माध्यम से, हमने 60 देशों के 300 से अधिक सकारात्मक शांति कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित किया है। हमारा क्षमा एवं सामाजिक एकजुटता पाठ्यक्रम सदस्यों को समुदायों के घाव भरने में मदद करता है। हमारे संस्थान के अनुदान और सेवा के माध्यम से, रोटरी सदस्य युवाओं के साथ जुड़कर, नागरिक समाज को मजबूत करके और संघर्ष का कारण बन सकने वाले मुख्य मुद्दों को हल करके शांति को बढ़ावा दे रहे हैं।

इस महीने इस्तांबुल में अध्यक्ष स्टेफ़नी अर्चिक के शांति सम्मेलन में, हम इस काम और बहसेसिहिर विश्वविद्यालय में ओटो एंड फ्रैंक वाल्टर रोटरी शांति सेंटर की पहली कक्षा का जश्न मनाएंगे।

मेरी कामना है कि 2025 में शांति जड़ पकड़े और मजबूती के साथ पनपे, और इस महान खोज में रोटरी अपनी सार्थक भूमिका निभाना ज़ारी रख सकें।

मार्क डेनियल मेलोनी
ट्रस्टी अध्यक्ष, द रोटरी फौंडेशन

एक विद्वान प्रधानमंत्री

सुरेश शेषाद्रि

Lives of great men all remind us
We can make our lives sublime,
And, departing, leave behind us
Footprints on the sands of time

H W Longfellow
Psalm of Life

ये पंक्तियाँ भारत के पूर्व प्रधान मंत्री मनमोहन सिंह की उस प्रेरणादायक धरोहर को सटीक रूप से इंगित करती हैं जिसे वो 26 दिसंबर, 2024 को इस दुनिया से अलविदा लेते हुए अपने पीछे छोड़ गए, वह एक अल्पसंख्यक धर्म से हमारे पहले प्रधान मंत्री बने और वह न तो एक पेशेवर राजनीतिज्ञ थे और न ही सीधे जनता द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधि।

डॉ सिंह बहुत कम बोलने वाले व्यक्ति थे मगर वह जो भी बोलते थे उसे हमेशा सोच-समझकर तोल-मोल कर बोलते थे। एक विद्वान और एक राजनेता होने के नाते वह कभी भी किसी चुनौती से पीछे नहीं हटे और उन्होंने आज के पाकिस्तान के पंजाब प्रांत के गाह नामक विभाजन प्रभावित गांव से एक सिख शरणार्थी के रूप में बड़े धैर्य और विनम्रता के साथ शुरुआत करते हुए 2004 में भारत के सर्वोच्च कार्यकारी पद पर पहुंचने तक का सफर तय किया।

एक स्व-निर्मित व्यक्ति होने के नाते डॉ सिंह ने अपने जीवन के शुरुआती वर्षों में ही शिक्षा के महत्व को समझ लिया था। सार्वजनिक रूप से वित्त पोषित योग्यता छात्रवृत्तियों और शैक्षिक अनुदानों की मदद से उन्होंने 1954 में पंजाब विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र में मास्टर्स की डिग्री पूरी की और इसके बाद वह अर्थशास्त्र में आगे की पढ़ाई के लिए यूनाइटेड किंगडम गए। उन्होंने कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से इकनॉमिक्स ट्राइपोज और ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से एक DPhil की डिग्री के साथ अपनी शिक्षा पूर्ण की।

'भारत के निर्यात रुझान और आत्मनिर्भर विकास की संभावनाएं' विषय पर उनकी डॉक्टरेट थीसिस - जिसमें उन्होंने विकासशील अर्थव्यवस्थाओं के लिए आयात प्रतिस्थापन के संकुचित दृष्टिकोण को त्यागने और इसके बजाय मुक्त व्यापार को अपनाने की आवश्यकता पर जोर दिया - यह एक मौलिक कार्य था जिसने 1991 में उनके द्वारा लागू किए गए व्यापक आर्थिक सुधार में उनका मार्गदर्शन और समर्थन किया, जिसने देश को उच्च आर्थिक विकास और वैश्विक

भारत के पूर्व प्रधानमंत्री
डॉ मनमोहन सिंह।

मेरिट छात्रवृत्ति और शैक्षिक अनुदान के माध्यम से, उन्होंने पंजाब में अर्थशास्त्र में मास्टर डिग्री पूरी की। फिर, वे कैम्ब्रिज और ऑक्सफ़ोर्ड विश्वविद्यालयों में अर्थशास्त्र का अध्ययन करने के लिए यूके चले गए।

ऊपर: प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ।

बाएं: पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के साथ।

नीचे: तत्कालीन कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी के साथ।

जब भुगतान संतुलन के गंभीर संकट ने हमारी अर्थव्यवस्था को रसातल में पहुंचा दिया था, उस समय वित्त मंत्री के रूप में कार्यभार संभालते हुए इस अनुभवी अर्थशास्त्री ने युगांतकारी सुधारों की शुरुआत की, जिसने वैश्विक मंच पर हमारे आगमन की नींव रखी।

अर्थव्यवस्था के साथ एकीकृत होने की नई दिशा दी।

इससे पहले, न्यूयॉर्क में संयुक्त राष्ट्र के व्यापार निकाय UNCTAD में और फिर दिल्ली स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स में अंतर्राष्ट्रीय व्यापार के प्रोफेसर के रूप में उनका अपेक्षाकृत छोटा कार्यकाल, सार्वजनिक सेवा में उनके एक लंबे और प्रतिष्ठित करियर की ओर बढ़ने की आधारशिला बना।

1971 में विदेश व्यापार मंत्रालय में आर्थिक सलाहकार के रूप में शुरुआत करते हुए डॉ सिंह ने केंद्र सरकार में अनेक महत्वपूर्ण आर्थिक नीति संबंधी पदों पर कार्य किया जिनमें वित्त मंत्रालय के आर्थिक मामलों के सचिव का पद भी शामिल था और बाद में उन्होंने 1980 के दशक के प्रारंभ में तीन वर्षों तक भारतीय रिज़र्व बैंक के गवर्नर के रूप में सेवा दी।

योजना आयोग में उनके कार्यकाल और जिनेवा स्थित दक्षिण आयोग में उनकी भूमिका ने उनके नीति दृष्टिकोण को सामाजिक प्रासंगिकता और एक ऐसे विकासात्मक दृष्टिकोण के व्यापक परिप्रेक्ष्य से विकसित, परिष्कृत और सुदृढ़ किया जिसमें समाज में असमानता को कम करना प्राथमिकता थी।

इसलिए जून 1991 में जब प्रधानमंत्री पी वी नरसिम्हा राव ने डॉ सिंह को उस समय वित्त मंत्रालय का महत्वपूर्ण प्रभार सौंपा जब एक भयंकर भुगतान संतुलन के संकट ने देश की अर्थव्यवस्था को मानो एक गहरी खाई के किनारे लाकर खड़ा कर दिया था और उस समय इस अनुभवी अर्थशास्त्री ने चुपचाप शेरपा की भूमिका निभाते हुए उन ऐतिहासिक सुधारों को लागू किया जिसने भारत को वैश्विक मंच पर पहुंचाते हुए उसकी उन्नति की दिशा निर्धारित की।

जुलाई 1991 में अपने प्रसिद्ध बजट भाषण के समापन पर डॉ सिंह ने अपनी जड़ों पर विचार करते हुए एक गंभीर वादा किया: ''मैं एक गरीब परिवार में पैदा हुआ, एक ऐसे गाँव में जो लगातार सूखा प्रभावित था और जो अब पाकिस्तान का हिस्सा है। विश्वविद्यालय से मिली छात्रवृत्तियों और अनुदानों से मुझे भारत के साथ-साथ इंग्लैंड के कॉलेज में पढ़ने का अवसर मिला। इस देश ने मुझे हमारे संप्रभु गणराज्य के कुछ सबसे महत्वपूर्ण सार्वजनिक पदों पर नियुक्त करके सम्मानित किया है। यह एक ऐसा ऋण है जिसे मैं कभी भी पूरी तरह से नहीं चुका सकता। मैं बस अपनी पूरी ईमानदारी और समर्पण के साथ अपने देश की सेवा करने का संकल्प ले सकता हूँ। मैं सदन से यही वादा करता हूँ।''

इस प्रतिज्ञा को पूरा करते हुए उन्होंने यह सुनिश्चित किया कि अगले पांच वर्षों में उन्होंने जो नीतिगत ढांचे तैयार किए है वो भारतीय अर्थव्यवस्था को धीरे-धीरे लेकिन अपरिवर्तनीय रूप से विनियमन और उदारीकरण के रास्ते पर आगे ले जाएं: निवेश, विदेशी प्रतिस्पर्धा और कंप्यूटर हार्डवेयर, ऑटोमोबाइल निर्माण से लेकर सूचना प्रौद्योगिकी एवं बीपीओ सेवाओं के विकास और निर्यात जैसे विभिन्न क्षेत्रों में नए उद्यमों के लिए द्वार खोले।

और 13 साल बाद जब कांग्रेस यूनाइटेड प्रोग्रेसिव अलायन्स के प्रमुख के रूप में सत्ता

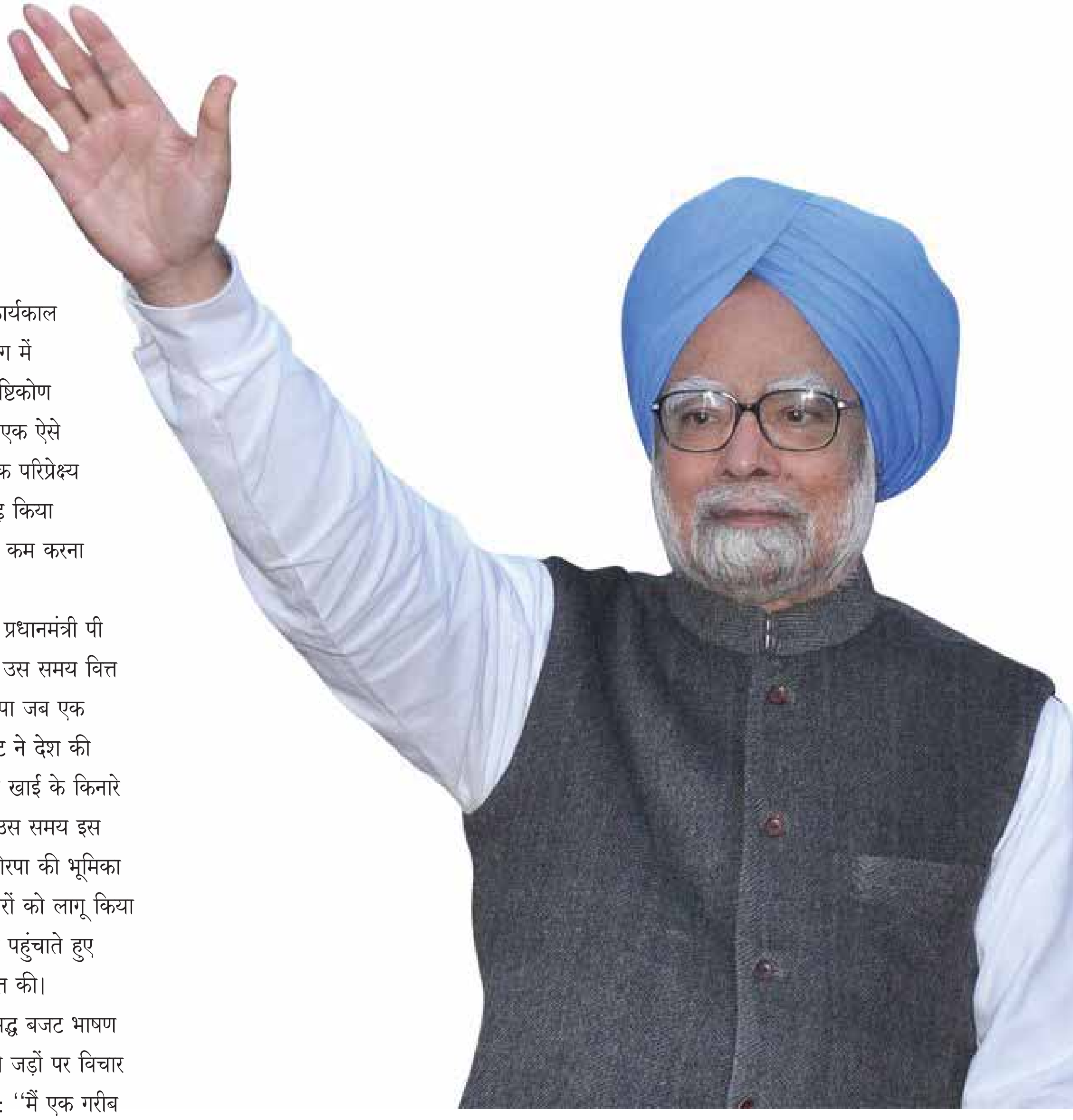

में लौटी तो पार्टी सुप्रीमो सोनिया गांधी ने आधुनिक भारत के आर्थिक परिवर्तन के शिल्पकार को इस गठबंधन सरकार को चलाने के लिए चुना। नियति ने इस प्रतिष्ठित तकनीकी विशेषज्ञ को देश के सर्वोच्च कार्यकारी पद पर पहुंचा दिया।

हमेशा इस बात के प्रति सचेत रहते हुए कि सरकार की आर्थिक नीतियाँ, विशेष रूप से पूंजीवाद को अपनाने के उसके नए दृष्टिकोण, आर्थिक विषमताओं को न बढ़ाएँ, डॉ सिंह ने 1991 में अपने पहले बजट भाषण में इस बात पर ज़ोर दिया: ''हमें विकास प्रक्रिया में संपत्ति सृजन को उसकी उचित जगह पर पुनः स्थापित करना होगा क्योंकि इसके बिना प्रचंड गरीबी, अज्ञानता और बीमारी के कलंक को दूर नहीं किया जा सकता। लेकिन संपत्ति सृजन की प्रक्रिया में सामाजिक दुख और असमानता को अनदेखा नहीं किया जा सकता। हमारे समय की मूल चुनौती यह सुनिश्चित करना है कि संपत्ति सृजन न केवल समानता और न्याय द्वारा संयमित हो बल्कि इसे गरीबी उन्मूलन और सभी के लिए विकास के लक्ष्य के साथ भी जोड़ा जाए।''

लोक कल्याण के प्रति डॉ सिंह की चिंता उनकी राजनीति की समझ और राजनीतिक जीवन के संचालन में एक प्रमुख विशेषता होगी, पहले वित्त मंत्री के रूप में और बाद में प्रधान मंत्री के रूप में।

वर्ष 1999 में बीबीसी के *हार्ड टॉक* कार्यक्रम में पत्रकार करण थापर से बात करते हुए उन्होंने कहा कि जब उन्होंने दक्षिण दिल्ली से चुनाव लड़कर कांग्रेस उम्मीदवार के रूप में लोकसभा सीट जीतने का अपना एकमात्र और असफल प्रयास किया तो उन्होंने देखा: ''दुर्भाग्यवश राजनीति अब कई मायनों में सामाजिक बदलाव का साधन नहीं रही।'' उन्होंने जोर देकर कहा कि वह राजनीति में इसलिए थे ताकि आम लोगों की चिंताओं को हल करने की आवश्यकता से प्रेरित होकर नीतियों की पारदर्शिता सुनिश्चित करके बदलाव ला सकें।

जब उन्हें घरेलू मीडिया और राजनीतिक विपक्ष द्वारा सबसे अधिक अपमानजनक बातों का सामना करना पड़ा तब भी डॉ सिंह ने हमेशा गरिमामयी रहकर सार्वजनिक जीवन में शालीनता और ईमानदारी का एक नया मानदंड स्थापित किया जिससे उन्हें अंतर्राष्ट्रीय पहचान और सराहना मिली।

पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति बराक ओबामा ने अपने संस्मरण में डॉ सिंह को ''बुद्धिमान, विचारशील और बेहद ईमानदार'' व्यक्ति के

मेरा जन्म एक गरीब परिवार में हुआ था, जो एक ऐसे गांव में रहता था जो हमेशा सूखाग्रस्त रहता था, जो अब पाकिस्तान का हिस्सा है। विश्वविद्यालय की छात्रवृत्ति और अनुदान की बदौलत मैं भारत और इंग्लैंड में कॉलेज जा सका।

डॉ मनमोहन सिंह

भारत के पूर्व प्रधानमंत्री

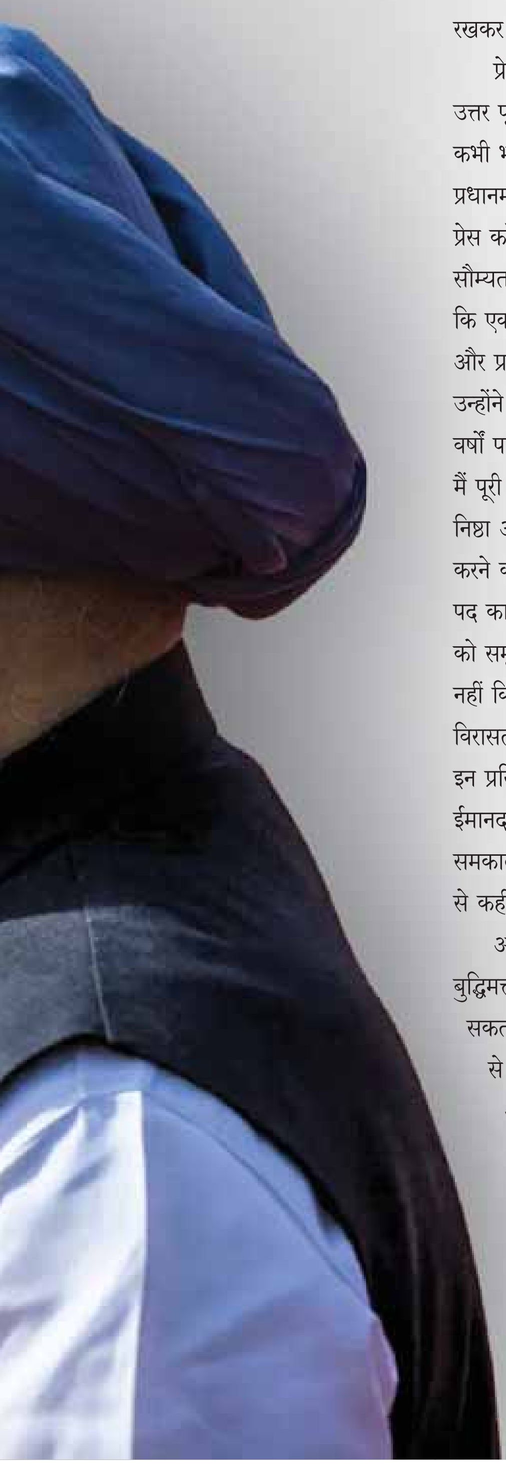

रूप में वर्णित किया है, ''एक अति विनम्र व्यक्ति जिसने लोगों को उच्च जीवन स्तर प्रदान करके और स्वयं भ्रष्टाचार से दूर रहकर अपनी प्रतिष्ठा बनाए रखकर सबका विश्वास जीता।''

प्रेस से मिलने या सबसे कठिन सवालों का उत्तर पूरी शांति और सौम्यता के साथ देने में कभी भी संकोच न करने वाले डॉ सिंह ने एक प्रधानमंत्री के रूप में जनवरी 2014 में आयोजित प्रेस कॉन्फ्रेंस के दबाव में भी अपनी असीम सौम्यता और सरलता दिखाई। यह पूछे जाने पर कि एक आम आदमी की नज़र में एक राजनेता और प्रधानमंत्री के रूप में उनकी छवि कैसी हैं, उन्होंने कहा: ''मैं आज भी वही व्यक्ति हूँ जो मैं वर्षों पहले था। मुझमें कोई बदलाव नहीं हुआ है। मैं पूरी ईमानदारी से कहता हूँ कि मैंने अपनी पूरी निष्ठा और प्रतिबद्धता के साथ इस देश की सेवा करने का प्रयास किया है। मैंने कभी भी अपने पद का उपयोग अपने किसी मित्र या रिश्तेदारों को समृद्ध करने या उन्हें पुरस्कृत करने के लिए नहीं किया है।'' यह पूछे जाने पर कि वह अपनी विरासत को किस तरह देखते हैं, तो उन्होंने इन प्रसिद्ध शब्दों के साथ जवाब दिया: ''मैं पूरी ईमानदारी से यह मानता हूँ कि इतिहास मुझे समकालीन मीडिया या फिर संसद के विपक्षी दलों से कहीं अधिक सहानुभूतिपूर्वक देखेगा।''

अंततः डॉ सिंह को इस बात से ''असाधारण बुद्धिमत्ता'' वाले व्यक्ति के रूप में मान्यता दी जा सकती है कि उन्होंने अपनी दूरदर्शिता के माध्यम से पहले ही दुनिया को सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था के लिए एक कम समावेशी और अनियंत्रित वैश्वीकरण के खतरों की चेतावनी दे दी थी। जब एक के बाद एक दुनियाभर के देश तेजी से दक्षिणपंथी होते जा रहे हैं, लोकलुभावन राजनीतिक मंच अति-राष्ट्रवादी और आप्रवासी-विरोधी विचारों का समर्थन करते हुए चुनावी वैधता प्राप्त कर रहे हैं, तो यह आवश्यक है कि हम स्वयं को डॉ सिंह के उन शब्दों की याद दिलाएं जो उन्होंने अक्टूबर 2006 में कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय द्वारा उन्हें प्रदान की गई डॉक्टर ऑफ लॉ की मानद उपाधि स्वीकार करते हुए कहे थे:

वैश्वीकरण के युग की इन उपलब्धियों से हमें उन नई चिंताओं के प्रति आंखें नहीं मूंदनी चाहिए जो वैश्वीकरण ने पैदा की हैं। वैश्वीकरण अब तक विश्व के अनेक हिस्सों तक नहीं पहुंचा है। इसके अलावा, प्रमाण यह दिखाते हैं कि इस प्रक्रिया ने व्यक्तिगत और क्षेत्रीय आय असमानताओं को दूर नहीं किया है। कई विकासशील देशों का विकास उनके ग्रामीण क्षेत्रों को दरकिनार कर रहा है।

अमीर और गरीब के बीच का अंतर बढ़ता जा रहा है। इसके साथ ही स्वास्थ्य और शिक्षा के क्षेत्र में पर्याप्त एवं गुणवत्तापूर्ण सेवाएं प्रदान करने और गरीबों की जरूरतों को पूरा करने में सार्वजनिक क्षेत्र की अक्षमता असंतोष और अलगाव पैदा कर रही है। यह विभाजनकारी ताकतों को बढ़ावा देने के साथ ही लोकतंत्र व्यवस्था पर दबाव डाल रही है।

''ये वास्तविक और प्रत्यक्ष चिंताएं है जिन्हें नजरअंदाज नहीं किया जा सकता... हमें समावेशी वैश्वीकरण पर काम करने की जरूरत है। इसके लिए एक नए वैश्विक दृष्टिकोण की आवश्यकता है।''

डॉ सिंह का राजनीतिक और व्यक्तिगत उपलब्धियों से भरा जीवन अर्थशास्त्र की दुनिया से परे एक ऐसी स्थायी विरासत छोड़ गया है जो यह दर्शाता है कि कैसे दल संबंधी राजनीति के बीच भी कोई हमेशा मृदुभाषी, विनम्र, शालीन और गरिमामय बना रह सकता है।

लेखक द हिंदू *के पूर्व बिजनेस एडिटर हैं*

एस कृष्णप्रतीश द्वारा रूपरेखा

जब मनमोहन सिंह ने रोटरी क्लब अन्ना नगर को संबोधित किया

रशीदा भगत

दाएं से: पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह, रोटरी क्लब अन्ना नगर के पूर्व अध्यक्ष जी के सेल्वाराजन और पीडीजी आर गणपति।

सबसे सभ्य, सज्जन और गैर-राजनैतिक राजनेताओं में से एक रहे पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के निधन के बाद सोशल मीडिया पर एक पोस्ट ने मेरा ध्यान आकर्षित किया क्योंकि यह डॉ सिंह और रोटरी से संबंधित था। लेकिन मुझे यह जानकर आश्चर्य हुआ कि इसे फ्रीमेसन के व्हाट्सएप समूहों पर भी प्रसारित किया जा रहा था। चूंकि मेरे पति एक फ्रीमेसन हैं तो उन्होंने मुझे यह दिखाया।

इसमें एक उल्लेखनीय कहानी बताई गई ... जिसके अनुसार 18 जून, 1996 को रोटरी क्लब अन्ना नगर के सदस्यों को संबोधित करने और उनसे *फॉर द सेक ऑफ ऑनर अवार्ड* प्राप्त करने के लिए रोटेरियनों को उनका हवाई टिकट बुक करने से मना करते हुए अपनी टिकट का स्वयं भुगतान करने के बाद डॉ सिंह बिना किसी हंगामे या प्रचार के चेन्नई आए थे।

रोटरी क्लब अन्ना नगर के तत्कालीन अध्यक्ष जी के सेल्वाराजन ने 'रेस्ट वेल जेंटल सरदार' शीर्षक वाले अपने पोस्ट में याद किया कि पूर्व प्रधानमंत्री के निधन के बारे में पढ़कर वह अप्रैल 1996 की यादों में चले गए, जब डॉ सिंह ने ''देश को आर्थिक संकट और आपदा से उबारने वाले भारत के सबसे सफल वित्त मंत्री के रूप में अपना पद छोड़ दिया था।''

हमेशा की तरह उनका क्लब विशिष्ट व्यक्तियों को अपने बीच संबोधित करने की तलाश में रहता है और दिल्ली में उनके एक मित्र, जो एक बहुत वरिष्ठ नौकरशाह थे, ने सुझाव दिया कि क्यों न पूर्व वित्त मंत्री को आमंत्रित किया

जाए और उन्हें *फॉर द सेक ऑफ ऑनर* पुरस्कार प्रदान किया जाए। बाद में, *रोटरी न्यूज़* से बात करते हुए सेल्वराजन ने कहा कि इन नौकरशाह ने उनके क्लब की प्रतिष्ठित परियोजनाओं में से एक - मील्स ऑन व्हील्स - में भाग लिया था - जिसे उन्होंने क्लब अध्यक्ष के रूप में अपने कार्यकाल के दौरान कई अन्य परियोजनाओं के साथ शुरू किया था।

मील्स ऑन व्हील्स परियोजना के माध्यम से ''हर सप्ताहांत हम - रोटेरियन और एन्स - शहर के वंचितों के विभिन्न घरों जैसे अनाथालय, वृद्धाश्रम, किशोर गृह आदि के लिए घर का बना भोजन ले जाते थे। मैंने इसे शुरू किया और यह एक बड़ी सफलता बन गया और बाद में इसे कृष्णन चारी द्वारा मंडल परियोजना के रूप में अपनाया गया जब वह मंडल गवर्नर (1997-98) बने। मेरे नौकरशाह मित्र ने मील्स ऑन व्हील्स परियोजना का दौरा किया था और हमारे अन्य काम देखे थे (उनके द्वारा शुरू की गई अन्य परियोजनाओं में एक जराचिकित्सा केंद्र, टॉक योर वे टू मलेशिया आदि शामिल थे) और वह क्लब के सदस्यों द्वारा की गई सेवा से बहुत प्रभावित थे। उन्होंने सुझाव दिया कि मुझे डॉ सिंह को आमंत्रित करना चाहिए, पेशे से वकील सेल्वाराजन याद करते हुए कहते हैं।

हालांकि उन्हें इस बात पर संदेह था कि डॉ सिंह जैसे प्रतिष्ठित व्यक्ति जिन्होंने आर्थिक सुधारों की शुरुआत की थी और भारतीय अर्थव्यवस्था को उदारीकरण की ओर अग्रसर किया था, चेन्नई में केवल एक रोटरी क्लब को संबोधित करने के निमंत्रण को स्वीकार करेंगे या नहीं, सेल्वराजन ने फिर भी उन्हें कॉल किया। उन्हें आश्चर्यचकित करते हुए डॉ सिंह ने उनसे लगभग 10 मिनट तक बात की और उनके रोटरी क्लब द्वारा की गई सेवा परियोजनाओं के बारे में उनसे जानकारी ली और एक विराम के बाद, 'हां' कहा!

लेकिन उन्होंने उनको लाने की जिम्मेदारी लेने के प्रस्ताव को ठुकराकर स्वयं अपने खर्च पर आना स्वीकार किया और हवाई अड्डे पर भी अनेक रोटेरियनों की कई महंगी लक्जरी कारें उनका इंतजार कर रही थीं पर उन्होंने ''मेरे साथ मेरी होंडा सिटी में यात्रा करने का फैसला किया!''

जब यह खबर फैली कि माननीय पूर्व वित्त मंत्री शहर में हैं तो ''चेन्नई के शीर्ष व्यवसायी, मुरुगप्पा समूह, टीवीएस, अमलगमैशन्स और अन्य शीर्ष उद्योगपतियों के साथ ही पत्रकार भी उनके साक्षात्कार के लिए उन्हें फोन करते रहे। लेकिन उन्होंने सभी से यह कहा कि क्लब अध्यक्ष सेल्वराजन मेरे मेज़बान हैं और मेरी यात्रा का कार्यक्रम वही तय करेंगे।''

यह रोटेरियन हैरान रह गए जब शहर के बड़े बिजनेस टाइकून और मीडिया मालिक उन्हें फोन करके पूछ रहे थे कि क्या कोई समय स्लॉट है जिसमें वह उन प्रतिष्ठित व्यक्ति से मिल सकते है। अंततः डॉ सिंह की सहमति से यह निर्णय लिया गया कि *द हिंदू* अखबार के कार्यालय में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस आयोजित की जाएगी जिसमें शहर के शीर्ष व्यवसायी शामिल होंगे। इस कार्यक्रम में पूर्व वित्त मंत्री ने बड़ी सहजता के साथ राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय अर्थशास्त्र से संबंधित प्रश्नों का उत्तर दिया और बताया कि पिछले पांच वर्षों के दौरान उन्होंने जो आर्थिक सुधार किए थे, वे भारतीय अर्थव्यवस्था को कहाँ तक लेकर जाएंगे।

उस मुलाकात को याद करते हुए सेल्वराजन कहते हैं, ''चेन्नई के नामचीन लोगों के बीच डॉ सिंह के प्यार, मान-सम्मान और सद्भावना को देखकर मैं चकित था। इस वैश्विक सितारे के साथ समय बिताने के लिए बड़े-बड़े दिग्गजों को आपस में प्रतिस्पर्धा करते देखना बहुत अच्छा अनुभव था।

जब यह खबर फैली कि पूर्व वित्त मंत्री शहर में हैं, तो चेन्नई के शीर्ष व्यवसायी और उद्योगपति, साथ ही पत्रकार भी उनसे साक्षात्कार के लिए लगातार फोन करते रहे। लेकिन उन्होंने सभी को बताया कि क्लब के अध्यक्ष श्री सेल्वाराजन मेजबान हैं और ममेरा कार्यक्रम केवल वही तय करेंगे।

अगले दिन सभी प्रमुख समाचार पत्रों ने चित्रों के साथ शहर की उनकी यात्रा (उनके क्लब कार्यक्रम सहित) को विस्तृत रूप से कवर किया। हमारे क्लब के सदस्य बहुत रोमांचित थे क्योंकि उन्होंने हमारे साथ नाश्ता, दोपहर का भोजन, चाय और रात का खाना खाया था और वह खुशी-खुशी हमारे साथ फोटो सत्र में शामिल हुए। रोटरी एन्स उनके साथ फोटो खिंचवाने के लिए बहुत उत्साहित थी।''

पूरे दिन, ''उन्होंने जोर देकर कहा कि वह केवल मेरी कार में मेरे साथ यात्रा करेंगे; एम्बेसडर पलावा होटल का हॉल जहाँ हमारी बैठक आयोजित हुई थी, न केवल हमारे सदस्यों और एन्स से खचाखच भरा हुआ था बल्कि इसमें चेन्नई और शायद दक्षिण भारत के दिग्गज भी शामिल थे।''

किसी रोटरी क्लब के सामने पहली बार दिए गए अपने भाषण में डॉ सिंह ने वित्त मंत्री के रूप में अपने कार्यकाल के बारे में बात करते हुए कहा कि आर्थिक सुधारों की शुरुआत करते समय उन्होंने विकेंद्रीकरण, सशक्तिकरण, धन के उचित उपयोग और लोगों की मानसिकता बदलने पर ध्यान केंद्रित किया। ''अंततः मुझे इस बात से बहुत संतोष है कि मेरे उत्तराधिकारियों - कम समय के लिए आई भाजपा सरकार और यूनाइटेड फ्रन्ट सरकार - ने उदारीकरण की नीति को अपनाया है हालांकि इनमें से कई दल ने पहले इसका विरोध किया था।''

चीन, दक्षिण कोरिया और ताइवान के साथ भारतीय अर्थव्यवस्था की तुलना करते हुए उन्होंने कहा, ''दक्षिण कोरिया की प्रति व्यक्ति आय 10,000 डॉलर है जबकि भारत के लिए यह आंकड़ा मात्र 370 डॉलर का है। यह दुखद है क्योंकि भारत को 1963 में ही विकासशील राष्ट्र माना जाता था तब ये बाकी राष्ट्र तस्वीर में कहीं नहीं थे।''

वित्त मंत्री के तौर पर अपने पांच साल के कार्यकाल के दौरान किए गए सुधारों के पीछे के तर्क को स्पष्ट करते हुए उन्होंने कहा कि यदि भारत को अपनी पूरी क्षमता का एहसास करना है और दक्षिण एवं दक्षिण पूर्व एशिया के भाग्य को आकार देना है तो उसे आर्थिक रूप से तेजी से विकास करना होगा। उन्होंने इस बात पर रोष व्यक्त किया कि पिछले पांच वर्षों के दौरान कुछ लोगों ने

आर्थिक सुधारों से ध्यान भटकाने और उन्हें पटरी से उतारने के प्रयास किए हैं। उन्होंने बताया कि अर्थव्यवस्था को उदार बनाकर विदेशी औद्योगिक निवेश बढ़ाने की मांग के पीछे उनका उद्देश्य प्रबंधन और तकनीकी क्षमताओं में सुधार लाना था। लेकिन इसे भारत की आर्थिक संप्रभुता को नुकसान पहुँचाने वाले कदम के रूप में नकारा गया। औद्योगिक लाइसेंसिंग जैसी टैरिफ बाधाओं और आंतरिक बाधाओं को कम करके एक प्रतिस्पर्धी माहौल बनाने के उनके प्रयासों की यह कहकर आलोचना की गई कि यह भारत के विऔद्योगीकरण की दिशा में एक कदम है। ''सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयों का पुनर्गठन करने और उन्हें बाजार प्रणाली में काम करने हेतु प्रेरित करने और विनिवेश द्वारा बाजार के संकेतों पर ध्यान देने के मेरे प्रयास को सार्वजनिक क्षेत्र विरोधी नीति के रूप में खारिज कर दिया गया,'' उन्होंने रोटेरियनों से कहा।

लेकिन अंततः उनके उत्तराधिकारियों ने उनके द्वारा शुरू किए गए आर्थिक सुधारों को आगे बढ़ाया और उनकी नीतियों को सही साबित किया और सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयों को कुशलता से चलाने के ''मेरे इस रुख का विरोध करने वाले संसद में मेरे कटु आलोचकों ने भी यह महसूस किया है कि यह एकमात्र तरीका है जिससे हम भारत की विशाल क्षमता का पूर्ण उपयोग कर सकते हैं।''

हवाई अड्डे पर उन्होंने मुझे कभी भी अपना सूटकेस उठाने की अनुमति नहीं दी, बल्कि हल्के से मुस्कुराते हुए कहा कि वे इतने युवा हैं कि अपना सूटकेस स्वयं उठा सकते हैं।

उन्होंने इस बात पर भी जोर दिया कि भारत के लोगों का ध्यान ''राष्ट्र निर्माण पर होना चाहिए न कि जाति, धर्म और क्षेत्र जैसे विभाजनकारी मुद्दों पर। अगर हम अभी नहीं जागते हैं तो विश्व राजनीति में हमारा हाशिए पर होना एक वास्तविकता बन जाएगी।''

''उनका भाषण न केवल उत्कृष्ट था बल्कि बड़प्पन और ज्ञान से भरपूर था, उनकी बातों में कोई घमंड नहीं था और वह पूरी तरह से विनम्र थे। दर्शकों ने उनके लिए खड़े होकर जोरदार तालियाँ बजाई,'' सेल्वराजन कहते हैं।

उन्हें लगभग 30 साल बाद भी यह याद है कि जब वह अगली सुबह उन्हें छोड़ने के लिए हवाई अड्डे पर गए, ''उन्होंने मुझे कभी भी अपना सूटकेस उठाने की अनुमति नहीं दी वो धीरे से मुस्कुराते हुए बोले कि वह स्वयं इसे उठाने के लिए काफी युवा है। एयरपोर्ट पर एयरपोर्ट अथॉरिटी के आला अधिकारियों ने हमारा स्वागत किया लेकिन उन्होंने कभी किसी को अपनी मदद नहीं करने दी। उन्होंने चेक इन करने के लिए लंबी कतार में खड़े होने पर जोर दिया। मुझे ऐसा महसूस हुआ जैसे पूरा हवाई अड्डा उनके करिश्माई व्यक्तित्व से जगमगा रहा था,'' सेल्वराजन कहते हैं, जिन्होंने दुर्भाग्य से 26 साल से अधिक समय तक एक रोटेरियन रहने के बाद कुछ साल पहले रोटरी छोड़ दी थी। अब वह भारत में फ्रीमेसनरी के उच्चतम पद, ग्रैंड मास्टर ऑफ दी ग्रैंड लॉज ऑफ इंडिया के रूप में निर्वाचित हुए हैं। ''चेक-इन की कतार में एक छोटा लड़का जो मुश्किल से 9 साल का था, थोड़ी देर तक उन्हें घूरता रहा और फिर उसने पूछा, मक्या आप मनमोहन सिंह अंकल हैं?' उसके पिता ने अपने बेटे को उन्हें नाम से बुलाने पर डांटा क्योंकि यह अपमानजनक था मगर डॉ सिंह ने एक बड़ी सी मुस्कान के साथ उस लड़के के गाल को थपथपाया और विनम्रता से 'हां' में जवाब दिया और उसे यह भी बताया कि वह चेन्नई में एक बैठक में भाग लेने आए थे। फिर उन्होंने उस लड़के से उसका नाम पूछा और यह भी कि वह कहाँ पढ़ता है, आदि। उनके बीच की यह छोटी सी बातचीत उम्र, पद और सभी बाधाओं से परे थी। यह दृश्य बहुत ही काव्यात्मक था। उन्हें विदा करने के बाद मैं भगवान का शुक्रिया अदा करते हुए लौट आया कि उन्होंने मुझे इतने सम्मानित और प्रशंसित व्यक्ति के साथ ही इतने बेहतरीन इंसान के साथ पूरा दिन बिताने का मौका दिया, जो हमारे (मेसोनिक) संस्कारों में निहित सभी गुणों का प्रतीक थे।''

दिल्ली पहुंचने के बाद सेल्वराजन को डॉ सिंह से अपनी लिखावट में एक सुंदर 'धन्यवाद' नोट प्राप्त हुआ जिसे मैंने लंबे समय तक संजोय रखा; 18 जून, 1996 मेरे जीवन के सबसे यादगार दिनों में से एक बन गया।''■

XAVIER UNIVERSITY SCHOOL OF MEDICINE AND KLE ANNOUNCE

6 YEARS

PRE-MED TO

DOCTOR OF MEDICINE / DOCTOR OF VETERINARY MEDICINE PROGRAMME

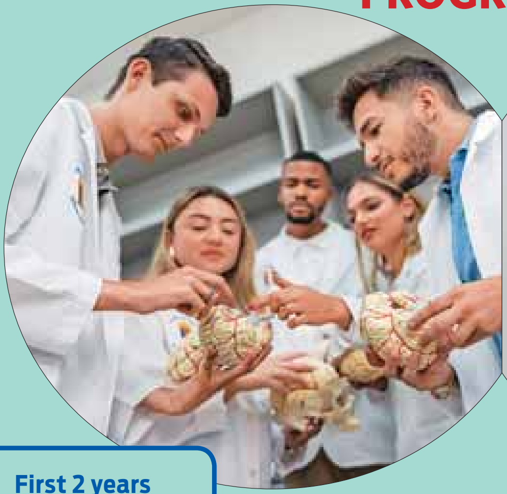

First 2 years
Start @
KLE, Campus
Karnataka, India

Next 2 years
Continue @
Xavier's Campus
Aruba, Caribbean
island - Netherlands

Next 2 years
Complete @
Xavier's affiliated
Teaching Hospitals
USA / Canada

TO ATTEND

WEBINAR

REGISTER NOW

XUSOM.COM/INDIA/

First 2 years
Start @
KLE, Campus
Karnataka, India

Next 3 years
Continue @
Xavier's Campus
Aruba, Caribbean
island- Netherlands

Final year
Complete @
Xavier's affiliated
Teaching Hospitals
USA / Canada

Limited Seats

Admission dates, May & September 2025

To apply, Visit:
application.xusom.com
email: infoindia@xusom.com

XAVIER STUDENTS ARE ELIGIBLE FOR H1/J1 Visa PROGRAMME

ADVT.

राजनीति में ईमानदारी की जो कमी है वो कूटनीति में मौजूद है: शशि थरूर

रशीदा भगत

कांग्रेस नेता शशि थरूर ने कोच्चि इंस्टीट्यूट के प्रतिभागियों को अपनी विशेष शैली के वाक् चातुर्य, आकर्षण, हास्य, अपनी बेबाक अंग्रेजी और दोषरहित लहजे से मंत्रमुग्ध कर दिया। अपनी तीव्र बुद्धि और हाजिरजवाबी के लिए प्रसिद्ध पूर्व रो ई निदेशक ए एस वेंकटेश के सवालों का जवाब देते हुए राजनयिक से राजनेता बने थरूर ने बड़ी सटीकता और शालीनता से अपने ''सात-अक्षरीय शब्दों'' का उपयोग करने की प्रवृत्ति, कूटनीति, राजनीति और एक स्टैंड-अप कॉमेडियन के रूप में एक संक्षिप्त कार्यकाल पर कुछ चुटीली टिप्पणियों को स्वीकार किया।

लेकिन इस सत्र में सौहार्द और हंसी-मजाक के माहौल के बावजूद थरूर ने दर्शकों को कुछ डरावनी

इंस्टिट्यूट के संयोजक रो ई निदेशक अनिरुद्धा रॉयचौधरी, लोकसभा सांसद शशि थरूर को सम्मानित करते हुए, (बाएं से) पीआरआईडी ए एस वेंकटेश, रो ई निदेशक राजू सुब्रमण्यन, इंस्टिट्यूट के अध्यक्ष पीडीजी जॉन डैनियल और विद्या सुब्रमण्यन भी चित्र में शामिल हैं।

बातों से अवगत कराया, जिनमें से एक यह है कि हम अपनी सोच से बहुत अधिक परेशान दुनिया में रह रहे हैं।

संयुक्त राष्ट्र, जहाँ वह लगभग महासचिव बन गए थे, में एक राजनयिक के तौर पर करीब 30 साल बिताने के बाद राजनीति की दुनिया में आने और दोनों पेशों की तुलना के बारे में पूछे जाने पर थरूर ने कहा, ''इन दोनों की कोई वास्तविक तुलना नहीं है। ये दोनों पूरी तरह से अलग पेशे हैं और दोनों में कुछ हद तक छल-कपट होता है। इन दोनों में एकमात्र समानता यह है कि लोग जो कहते है उसे करते नहीं है और जो करते है उसे कहते नहीं हैं।''

इसके अलावा कूटनीति में कुछ मानक होते हैं, ''अगर सीधे शब्दों में कहें तो एक निश्चित स्तर की ईमानदारी होती है जो अक्सर हमारी राजनीति में देखने को नहीं मिलती। और साथ ही खुश करने की इच्छा होती है जो राजनीति में होनी चाहिए और कभी-कभी होती भी है। लेकिन खुश करने की यह इच्छा हमेशा सभ्यता, विनम्रता और शिष्टाचार के मुखौटे के पीछे छिपी होती है। मैंने अक्सर मजाक में कहा है कि एक राजनयिक वह व्यक्ति होता है जो आपको नरक में जाने के लिए कह सकता है और आपको उस यात्रा के लिए तत्पर कर सकता है!''

भारतीय राजनीति पर टिप्पणी करते हुए इन सांसद ने कहा कि ''यहाँ की चुनौतियां अन्य लोकतंत्रों से बहुत अलग हैं। सर्वप्रथम, हमारे यहाँ संसदीय प्रणाली है जो कई मायनों में हमारी संस्कृति और हमारी जनता के आचरण तथा अपेक्षाओं के अनुकूल नहीं है। हमारे लोग विचारधाराओं या पार्टियों के बजाय व्यक्तियों को वोट देते हैं।''

दूसरी चुनौती यह है कि ''राजनेता स्वयं अधिकांश तौर पर किसी विचारधारा या दृढ़ संकल्प से वंचित प्रतीत होते हैं। वे वहाँ इसलिए हैं क्योंकि वे इनमें से कई दलों को सत्ता में आने का एक माध्यम मानते है और मुख्य रूप से वे इसी में रुचि रखते हैं। ये चुनौतियां हमारे लिए विशेष रूप से अद्वितीय हैं।''

भारतीय राजनीति का एक और अभिशाप है ''चुनावों पर बेतुकी कम खर्च सीमाएं, जिसका नियमित रूप से उल्लंघन किया जाता है और इस वजह से प्रत्येक निर्वाचित सांसद को अपने खर्च खाता के बारे में एक झूठ से शुरूआत करनी पड़ती है। हालांकि ये हमारी राजनीतिक प्रणाली के अनाकर्षक पहलू थे, लोकतंत्र में अपने लोगों के लिए परिवर्तन लाने का इससे बेहतर तरीका और क्या हो सकता है? जहाँ आप बाहर जाकर अपनी मान्यताओं के लिए उनकी मंजूरी ले सकते हैं, उनसे अपील कर सकते हैं, उन्हें पर्याप्त सेवाएं प्रदान कर सकते हैं और फिर उन्हें अपनी जिम्मेदारियों की ओर वापस भेज सकते हैं।''

थरूर ने कहा कि वह कूटनीति से राजनीति में इसलिए आए क्योंकि ''मेरे जीवन का एकमात्र लक्ष्य लोगों के लिए बदलाव लाने की कोशिश करना रहा है और मैं यही करने की कोशिश कर रहा हूँ फिर चाहे ऐसा संयुक्त राष्ट्र के माध्यम से हो, अपने लेखन के माध्यम से हो या राजनीति के माध्यम से हो।''

राजनीति में, आपको अक्सर अपने आप को दोबारा जांचना पड़ता है ताकि आपकी ईमानदारी से कही गई बातों को आपके खिलाफ न तोड़-मरोड़ कर पेश किया जाए।

यह पूछे जाने पर कि ''कूटनीति से राजनीति में आने के लिए उन्हें क्या मभूलनाफ पड़ा तो थरूर ने कहा, कूटनीति में जब आप अपने शब्दों का चयन करते है तो आप निश्चित रूप से इस बात से आश्वस्त रहते है कि आप जिस व्यक्ति से बात कर रहे है वो समझेगा कि आपकी बातों का मतलब क्या है या आप क्या कहने का प्रयास कर रहे है। राजनीति में आने के कुछ महीनों के अंदर जो सबक मैंने सीखा वो शेक्सपियर के एक पुराने कथन की सच्चाई थी कि मकिसी मजाक की सफलता वक्ता की जुबान में नहीं बल्कि सुनने वाले के कानों पर निर्भर होती है।फ इससे कोई फर्क नहीं पड़ता कि आप क्या कहना चाहते हैं, राजनीति में जो मायने रखता है वह यह है कि लोग उसे मानते है जो सुनते हैं या फिर उसे जो उन्हें सुनाया जाता है। और इसलिए आपको राजनीति में कुछ भी कहने से पहले खुद दो बार यह सोचना पड़ता है कि आप जो कुछ भी पूरी मासूमियत और ईमानदारी से कहते हैं उसे आपको राजनीतिक रूप से नुकसान पहुंचाने के लिए तोड़-मरोड़कर तो प्रस्तुत नहीं किया जा सकता।''

उन्हें इस कड़वे सच का सबक राजनीति के अपने पहले वर्ष के दौरान ही मिल गया था जब वह तत्कालीन प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के साथ एक मंत्री के रूप में सऊदी अरब गए थे। एक साक्षात्कार में उन्होंने सऊदी अरब को एक ''मूल्यवान वार्ताकार के रूप में वर्णित किया था

विभिन्न मुद्दों पर थरूर के विचार

इंडिया को भारत में बदलना

यह तर्क इतना बेतुका है कि इसपर हंसी आती है क्योंकि अगर हम भारत शब्द की उत्पत्ति पर गौर करें तो पता चलेगा कि यह शब्द कहाँ से आया। जब फारसी लोग सिंधु नदी के पार के लोगों की बात करते थे तो उनकी भाषा में मसफ अक्षर नहीं था इसलिए उन्होंने सिंधु के पार रहने वाले लोगों को हिंदू कहा। और जब यूनानी आए तो उन्हें फारसियों से इस जगह के बारे में पता चला और उन्होंने इसे इंडिया कहा। यह 300 ईसा पूर्व की बात है इसलिए हमें लगभग 2300 वर्षों से फारसियों, यूनानियों और रोमनों द्वारा इंडिया के रूप में जाना जाता हैं। तो वही लोग जो 'इंडिया' को नकारते हैं, वे यह कैसे कह सकते हैं कि गर्व से कहो हम हिंदू हैं? हिंदू और इंडिया दोनों एक ही मूल के हैं।

मौलाना आज़ाद ने लिखा है कि मक्का जाने वाले लोग - चाहे आज के पाकिस्तान के पठान हों या दक्षिण भारत के तमिल - उन्हें हिंदी कहा जाता था क्योंकि वे सभी हिंद से थे।

एक स्टैंडअप कॉमेडियन की भूमिका

मैं कभी-कभी इस तरह का जुआँ खेल लेता हूँ। मैं पैसे के साथ जुआ नहीं खेलता बल्कि अपनी प्रतिष्ठा के साथ जुआ खेलता हूँ। 2019 में जब अमेज़ॅन प्राइम ने 'मशहूर हस्तियों' के साथ स्टैंड-अप कॉमेडी सत्र आयोजित किया तो वे एक राजनेता चाहते थे और उन्होंने मुझसे संपर्क किया। मुझे यह विचार मज़ेदार लगा और चूंकि इसका फिल्मांकन 2019 के आम चुनावों के मतदान और मतगणना के बीच निर्धारित किया गया था, तो यह एक अनिश्चितता का समय था जब आपको यह नहीं पता होता कि आप फिर से संसद में लौटेंगे या नहीं। तो मैंने इसे स्वीकार किया और यह बहुत अच्छा रहा। हालांकि तत्कालीन सरकार पर मेरे बहुत सारे राजनीतिक चुटकुले हटा दिए गए। अमेज़ॅन प्राइम ने अपने हिसाब से उसे परिवर्तित करके पेश किया!

तकनीक को त्वरित रूप से अपनाना

जब मैं छोटा था तब मैं बेहतर था; मैं वीडियो कैमरा का उपयोग करने वाले पहले लोगों में से एक था। जब इंटरनेट युग शुरू हुआ तब मैं अमेरिका में था और मैंने जल्द ही इस तकनीक को अपनाया और ईमेल आदि के लिए फोन का इस्तेमाल करना शुरू किया। लेकिन बढ़ती उम्र और वरिष्ठता के साथ मुझे चलन में रहने वाली हर नई तकनीक को अपनाने का उत्साह कम हो गया। मुझे ट्विटर पर आने के लिए एक युवा सहायक और मेरे बेटे ने उकसाया; हालांकि इसने मेरे पहले शांत करियर में कुछ अशांति भी पैदा की। मीडिया ट्विटर को नापसंद करता था क्योंकि यह एक तरीका था मीडिया को उपेक्षित करने का। जब मैं दशकों में पहली बार लाइबेरिया की यात्रा करने वाला पहला भारतीय मंत्री बना तो भारत में किसी ने इसकी रेपोर्टिंग नहीं की। लोगों को मेरे ट्वीट से इसके बारे में पता चला। लेकिन इसने विरोध और विवाद उत्पन्न कर दिया। लेकिन सोशल मीडिया बहुत समय खा लेता है; मुझे व्हाट्सएप पर रोज़ाना 1,000 संदेश मिलते हैं। कोई इन्हें कैसे पढ़ सकता है?

25 से अधिक किताबें लिखने पर

एन एरा ऑफ डार्कनेस तब आई जब मेरे प्रकाशक ने 2015 में मेरे ऑक्सफोर्ड भाषण के बाद मुझे फोन किया। पहले 24 घंटों में 3 मिलियन लोगों ने इसे डाउनलोड किया था और उसने कहा कि आपको इसे एक किताब में बदलना होगा। और मैंने कहा कि यह मूर्खता है इसे सब जानते है और उसने कहा, 'आप मूर्खता न करें। अगर हर कोई इसे जानता तो यह वायरल क्यों हुआ?' पहली बार मैंने शोधकर्ताओं की मदद ली क्योंकि मैं तथ्यों के साथ ठोस आधार चाहता था। मैंने भूटान की पहाड़ियों पर ड्राइव के लिए हजारों पृष्ठों की शोध सामग्री का अध्ययन किया ... सौभाग्य से उन दिनों भूटान में भारतीय सिम कार्ड काम नहीं करता था इसलिए कोई भी मुझ तक नहीं पहुंच सका। मैंने जानकारी को संकलित करने के लिए 12 दिनों तक 18-घंटे काम किया और पहला प्रारूप तैयार किया।

अपनी किताबों के लिए विचार प्राप्त करने पर
चूंकि मैं एक समीक्षक लेखक हूं, मेरे लेख से किताबों के लिए विचार सामने आते हैं। चूंकि मुझे एक अंतर्राष्ट्रीय हस्ती के रूप में जाना जाता था इसलिए जब मुझसे विदेश नीति पर एक किताब लिखने का अनुरोध किया गया तो मुझे भारतीय पाठकों के लिए भारत की विदेश नीति पर लिखने का विचार आया *(पैक्स इंडिका: इंडिया एंड द वर्ल्ड इन द ट्वेंटी फर्स्ट सेन्चरी)* और इसने बहुत अच्छा प्रदर्शन किया। मुझे बताया गया कि इसके प्रकाशित होने के 12 साल बाद भी यूपीएससी के उम्मीदवार अभी भी इसे पढ़ रहे हैं। मेरी सबसे हालिया किताब *द लैंड ऑफ वर्ड्स* उस लेख का प्रत्यक्ष परिणाम है जो मैंने *खलीज टाइम्स* के लिए लिखा था, जिसने मुझे साप्ताहिक रूप से एक लेख लिखने के लिए कहा था। मैंने ढाई साल तक ऐसा किया और फिर इसे एक किताब का रूप दिया। यह इस बात पर निर्भर करता है कि सामग्री क्या है। कुछ ऐसी चीजें जिन्हें मैं लिखना चाहता हूं मगर बिल्कुल नहीं लिख रहा हूं और उस सूची में सबसे ऊपर फिक्शन आता है। मेरी पहली पांच किताबों में से चार फिक्शन थीं। और फिर मुझे राजनीति में अपने जीवन के कारण इसे छोड़ना पड़ा।

उन्होंने फिक्शन पर और अधिक क्यों नहीं लिखा
फिक्शन के लिए समय की आवश्यकता होती है, जो एक व्यस्त व्यक्ति के पास पहले ही बहुत कम होता है और इसके साथ ही आपके दिमाग में इतना खालीपन होना चाहिए कि आप एक वैकल्पिक दुनिया बनाकर उसके पात्रों, घटनाओं, संवादों और मुद्दों को उस तरह ही प्रस्तुत कर सकें जैसे आप अपने वास्तविक जीवन में उनका सामना कर रहे हो। तो आपको एक प्रकार का कांच का महल तैयार करना पड़ता है जिसमें आपकी कहानी बंद होती है और आपको हर दिन वहाँ जाना पड़ता है। अगर आप ऐसा नहीं कर पा रहे है तो आप वास्तविक दुनिया से लगातार बाधित होते हैं। उस महल में दरारें पड़ने लगेंगी और यदि यह रुकावटें लगातार ज्यादा समय तक बनी रही तो यह कांच का महल पूरी तरह टूटकर बिखर जाएगा।

21वीं सदी के पहले दशक में मेरे लैपटॉप में कम से कम तीन या चार उपन्यासों की शुरुआत पड़ी थी... किसी के पांच पन्ने लिखे हुए थे और किसी के तो लगभग 100 पन्ने लिखे हुए पड़े थे। लेकिन मैं उन्हें कभी भी पूरा नहीं कर पाया क्योंकि उनमें से हर एक को मेरे काम की वास्तविकताओं ने बाधित किया। मुझे अंततः यह एहसास हुआ कि मेरे लिए नॉन-फिक्शन लिखना ही बेहतर है क्योंकि नॉन-फिक्शन को रुकावटें बाधित नहीं करती। आपने जो लिखा है अगर वो आपके चुनाव प्रचार की वजह से छह सप्ताह के लिए बाधित भी हो गया हो तो भी आप इसे दोबारा पढ़कर वापस लिखना जारी रख सकते है। अपने फिक्शन के बारे में मैं हमेशा मजाक करता हूँ कि एक दिन मतदाता मुझे साहित्य की दुनिया में वापस भेज देंगे!

मलयालम: हाँ, मैं इसमें इतना सहज हूँ कि मैं चार चुनाव जीत पाया। हालांकि मैं यह स्वीकार करता हूँ कि साहित्यिक मलयालम मेरे लिए अजनबी है। मुझे बस बोलचाल की भाषा जितनी मलयालम आती है क्योंकि मैंने केरल में शिक्षा प्राप्त नहीं की। मेरा जन्म लंदन में हुआ, मैं मुंबई में पला-बढ़ा, कलकत्ता से हाई स्कूल की पढ़ाई की, दिल्ली से कॉलेज की पढ़ाई की और दुनिया के विभिन्न देशों में अपना जीवन जिया और फिर शुद्ध भारतीय तरीके से भारत लौट आया। लेकिन मैंने केरल के बहुत सारे साहित्य अंग्रेजी अनुवाद में पढ़े हैं। इसलिए मेरी मलयालम धाराप्रवाह, समझने योग्य है लेकिन उतनी परिष्कृत नहीं है जितना मैं चाहता था।

रोटेरियनों को सलाह: मैं आपकी सभी गतिविधियों का बहुत बड़ा प्रशंसक हूँ। ‍स्वयं से ऊपर सेवाफ एक बहुत ही आदर्श वाक्य है। आप सभी अपने क्षेत्रों में सफल हैं और फिर भी आपने उस सफलता के लाभों को वंचित लोगों के साथ साझा करने का चुनाव किया है।

पसंदीदा: मेरा पसंदीदा भोजन इडली है और ईमानदारी से कहूँ तो छुट्टी बिताने की पसंदीदा जगह तिरुवनंतपुरम है। बिना एजेंडा के दिन? क्रिकेट, लेकिन टेस्ट मैच! वनडे एक छोटी कहानी पढ़ने जैसा है; लेकिन टेस्ट मैच एक उपन्यास है। ■

दुनिया जितनी हम सोचते हैं, उससे कहीं ज्यादा समस्याओं से घिरी हुई है, और 2025 हमारे लिए चुनौतीपूर्ण साबित हो सकता है।

जो संयुक्त राष्ट्र की मानक राजनयिक भाषा में उस व्यक्ति के लिए होता है जिससे सीधे बात की जा रही हो। मेरा बस यही मतलब था। लेकिन मीडिया ने दुर्भावनापूर्ण रूप से तोड़ मरोड़ कर उस टिप्पणी को ऐसे प्रस्तुत किया कि मैं सऊदी अरब को मध्यस्थ बना रहा हूँ।'' यह विवाद पीएम के दौरे पर पूरी तरह से हावी हो गया। ''राजनीति और बहुभाषी देशों से भरी दुनिया में लोग ऐसी बातें कह सकते हैं जो एक भाषा में समझ में आती हैं मगर वो किसी भाषा के अनुवाद में भद्दी लग सकती हैं।''

आज की दुनिया में संयुक्त राष्ट्र की प्रासंगिकता पर थरूर ने कहा कि यदि इसे केवल शांति एवं सुरक्षा बनाए रखने की संयुक्त राष्ट्र की क्षमता के नज़रिए से देखा जाए तो ''स्पष्ट रूप से रूस-यूक्रेन युद्ध और इजरायल-फिलिस्तीन संघर्ष की निरंतरता संयुक्त राष्ट्र को असहाय और कमजोर दिखाती है। लेकिन अगर आप संयुक्त राष्ट्र को दुनिया में उसके द्वारा किए जाने वाले व्यापक कार्यों के दृष्टिकोण से देखें तो यह कई महत्वपूर्ण मुद्दों पर एजेंडा सेट करने में बहुत बड़ा अंतर ला रहा है जो संयुक्त राष्ट्र सम्मेलनों के माध्यम से हमारे सामने आए।'' पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन पर वैश्विक बहस एक महत्वपूर्ण उदाहरण थी उसी तरह उपनिवेशवाद और रंगभेद विरोधी नीति जैसे ऐतिहासिक मुद्दे भी।

उन्होंने कहा कि संयुक्त राष्ट्र ने ''कई मुद्दों पर दुनिया को उस तरह से आकार दिया

है जिस तरह की वह आज है। लेकिन अगर आप इसे केवल इस दृष्टिकोण से देखते हैं कि क्या यह प्रत्येक युद्ध को रोक सकता है, तो नहीं, यह ऐसा नहीं कर सकता मगर यह तीसरे विश्व युद्ध को रोकने के लिए एक उपयोगी मंच रहा है।''

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद वैश्विक नेताओं ने संयुक्त राष्ट्र की स्थापना की ताकि युद्ध में शामिल देशों के पास ''बैठक करने के लिए एक सामान्य स्थान हो। संयुक्त राष्ट्र इस मायने में बहुत अद्वितीय है क्योंकि यह एक मंच और एक अभिनेता दोनों है; एक ऐसा मंच जहाँ वैश्विक नेता और सरकारें अपने मुद्दों पर चर्चा करने, अपने मतभेदों को सुलझाने और किसी समझौते पर पहुंचने के लिए मिल सकते हैं। और फिर जब वे किसी चीज़ पर सहमत हो जाते हैं तो यह महासचिव, उनकी एजेंसियों आदि के रूप में एक अभिनेता की तरह कार्य करता है।'' लेकिन लोग अक्सर इन दोनों भूमिकाओं को भ्रमित करते हैं, उन्होंने कहा।

जब पीआरआईडी वेंकटेश ने उन्हें 1945 में संयुक्त राष्ट्र के अधिकरण में रोटरी की भूमिका के बारे में याद दिलाया तो थरूर ने संयुक्त राष्ट्र के साथ रोटरी के करीबी संबंधों को दोहराया और यह याद किया कि जब वह संयुक्त राष्ट्र में थे तो उन्होंने संयुक्त राष्ट्र परिसर में कई सारे रोटरी सम्मेलन आयोजित करने में मदद की थी जिसके लिए रोटरी ने उन्हें अपना आजीवन सदस्य बनाया था।

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में भारत को स्थायी सीट से वंचित रखने के सवाल पर थरूर

लोकसभा सांसद शशि थरूर और पीआरआईडी वेंकटेश।

ने सहमति जताई कि ''इस परिषद की संरचना 1945 की भू-राजनीतिक वास्तविकताओं को दर्शाती है जो निश्चित रूप से 2025 की नहीं है।'' इसके बाद उन्होंने संयुक्त राष्ट्र चार्टर में सुधार की कठिनाइयों और पेचीदगियों पर चर्चा की। संक्षेप में, ''आपको एक ऐसे सूत्र की आवश्यकता है जो दुनिया के दो-तिहाई लोगों द्वारा स्वीकार्य हो और पांच स्थायी सदस्यों द्वारा अस्वीकार्य न हो... जो एक बहुत ही कठिन कार्य है!''

दुनिया की आबादी का 17 प्रतिशत हिस्सेदार, भारत के अलावा स्थायी सीट के लिए अन्य दावेदारों में ''जापान और जर्मनी शामिल थे जो अमेरिका के बाद संयुक्त राष्ट्र में दूसरे और तीसरे सबसे बड़े वित्तीय योगदानकर्ता है।'' अन्य में ब्राजील और दक्षिण अफ्रीका शामिल थे जो अपने उप-क्षेत्रों में विशाल हैं, आदि।

थरूर ने फिर दर्शकों को उन जटिल तरीकों के बारे में बताया जिनकी मदद से दुनिया के शक्तिशाली देश संयुक्त राष्ट्र में अपनी बात रखते है और जी 20, BRICKS आदि जैसे वैकल्पिक निकायों में से कोई भी ''पूर्ण रूप से सार्वभौमिक निकाय होने का दावा'' नहीं कर सका या दुनिया में शांति और सुरक्षा बनाए रखने में पर्याप्त भूमिका नहीं निभा सका। ''इसलिए यह सुनिश्चित करना हर किसी के हित में है कि संयुक्त राष्ट्र कार्यशील बना रहे।''

नाटो के बारे में पूछे जाने पर उन्होंने कहा कि यह एक सैन्य गठबंधन था जिसे बाद में एक ज़रिया बनाकर रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने यूक्रेन पर आक्रमण करने के लिए ''स्वीडन और फिनलैंड जैसे दो निष्पक्ष देशों को भी NATO में धकेल दिया।''

थरूर ने कहा कि सीरिया की स्थिति को देखते हुए जहाँ राष्ट्रपति असद का 24 वर्षीय शासन एक बहुत ही मजबूत इस्लामी समूह द्वारा बदलने वाला था (जब वह बैठक को संबोधित कर रहे थे), चीन और ताइवान, यूक्रेन और रूस, इजरायल और गाजा के बीच तनाव, ''हम आज एक ऐसी दुनिया में जी रहे हैं जो बहुत ज्यादा अशांत स्थिति में है, जितना हम समझते है उससे कहीं अधिक। हम स्वाभाविक रूप से अपनी समस्याओं और अपने निकट पड़ोस पर ध्यान केंद्रित करते हैं, लेकिन इसमें कोई शक नहीं है कि 2025 दुनिया के लिए थोड़ा अधिक होगा।''

चित्र: रशीदा भगत

मैं मलयालम में इतना सहज हूँ कि चार चुनाव जीत चुका हूँ। लेकिन साहित्यिक मलयालम मेरे लिए अपरिचित है!

Rotary District 3192
THE MAGIC OF ROTARY
JOIN NOW
REGISTER NOW!
GET YOUR EARLYBIRD OFFER NOW..!
SOUTH ASIA INTERNATIONAL PEACE CONFERENCE - 2025
Let's create a world where Peace is nurtured by nature and well-being!
"Healthier World, Greener Tomorrow"
Join Rotary in India for an extraordinary gathering dedicated to fostering peace through critical global issues: the environment and health. This landmark conference will bring together thought leaders, policymakers, and change makers to explore how sustainable environmental practices and better healthcare can lead to lasting peace.
Be part of the dialogue, take action, and help shape a future where peace thrives through a healthier planet and healthier people.
Date & Venue:
22nd & 23rd March 2025
@ KTPO Whitefield, Bengaluru, India
SAVE THE DATE
Goals & Outcomes - Health
• Promote Access to Healthcare
• Enhance Health Education
• Support Disease Prevention and Treatment
• Improve Maternal and Child Health
• Address Mental Health Issues
• Strengthen Healthcare Infrastructure
• Support Clean Water and Sanitation
• Empower Healthcare Workers
• Foster Collaboration and Innovation
www.saipc.in
FOR QUERIES, PLEASE CONTACT: INFO.DGOFFICE2425@GMAIL.COM,
MOBILE NO. +91 8123303888 / +91 81233 84222,
OFFICE POSTAL ADDRESS: # 192, 3RD FLOOR,18TH CROSS, 20TH MAIN, MRCR,
VIJAYANAGAR, BENGALURU- 560 040
KARNATAKA, INDIA
Scan for Registration

ADVT.

Rotary Institute KOCHI 2024

7 दिनों का वैश्विक सैन्य खर्च 200 मिलियन बच्चों को शिक्षित कर सकता है

रशीदा भगत

हम सभी इस बात से अवगत हैं कि आज हम एक अत्यधिक खतरनाक और समस्याग्रस्त दुनिया में रहते हैं। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण मुद्दा यह है कि ''हम में से अधिकांश, विशेष रूप से दुनिया के अधिकांश नेता और बुद्धिजीवी यह जानते हैं कि दुनिया की प्रमुख समस्याएं क्या हैं... निरक्षरता, गरीबी, अपराध, युद्ध आदि। और वे इसका समाधान भी जानते हैं। निरक्षरता के लिए आपको शिक्षा में निवेश करना होगा; यह आसान है और कोई बड़ी बात नहीं है। केवल एक सप्ताह का वैश्विक सैन्य खर्च पूरी दुनिया के बच्चों को शिक्षित करने में मदद कर सकता है... 200 मिलियन बच्चे जो स्कूल नहीं जा पाते उन्हें सिर्फ 7 दिनों के वैश्विक सैन्य खर्च के माध्यम से स्कूल भेजा जा सकता हैं,'' नोबेल शांति पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी ने कोच्चि जोन इंस्टीट्यूट के पूर्ण सत्र में मुख्य भाषण देते हुए कहा।

समस्याओं के साथ-साथ समाधान भी ज्ञात है लेकिन दुर्भाग्यवश समस्या हल करने वालों और समस्या उत्पन्न करने वालों के बीच का अंतर लगातार बढ़ता जा रहा है। ''हर दिन हम नए संवाद, वाक्यांश और शब्दजाल बनाते रहते हैं कि यह समाधान है या वो समाधान है, लेकिन होता कुछ भी नहीं है।''

ऐसी दुनिया में जहाँ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और अन्य तकनीकी उपकरण जैसी नई प्रौद्योगिकियां उभर रही है, आज जो सबसे अधिक आवश्यक है वो है ''दयालु बुद्धिमत्ता।'' वहाँ पर एकत्रित रोटेरियनों की प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा, ''समाज के हजारों परिवर्तक मेरे सामने बैठे हैं। आप दुनिया को बदलते हैं। किसी दिन अगर मानवता की अच्छाई पर कोई किताब लिखी गई तो मैं वादा करता हूँ कि आपके बच्चे, आपके पोते-पोतियाँ और परपोते-परपोतियाँ उस अच्छाई की किताब पर आपके हस्ताक्षर जरूर देखेंगे। आप इस दुनिया को एक बेहतर जगह बना रहे हैं। आपने दुनिया के प्रति नैतिक जिम्मेदारी का अहसास किया है। मैं इसके लिए आपको बधाई देता हूँ।''

और फिर भी रोटरी एवं कई अन्य संस्थाओं द्वारा किए गए अच्छे काम के बावजूद तथ्य यह है कि ''दुनिया कभी इतनी टूटी हुई, इतनी विभाजित, इतनी नाजुक नहीं रही जितनी आज है। आज एक साथ हमें कई संकटों और चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है वैसा पहले कभी नहीं हुआ।''

लेकिन साथ ही, ''दुनिया कभी भी इतनी समृद्ध और सूचना एवं ज्ञान से भरी हुई, तकनीक में इतनी आगे नहीं थी जितनी आज है। एक तरफ जहाँ हर हफ्ते दुनिया में दो नए अरबपति बन रहे है वहीं दूसरी तरफ हर हफ्ते लगभग 10,000 बच्चे वैश्विक स्तर पर स्कूल छोड़ देते हैं।''

एक मार्मिक टिप्पणी करते हुए और एक अन्य नोबेल पुरस्कार विजेता बॉब डिलन द्वारा लिखे और गाए गए गीत *द आन्सर माय फ्रेंड इस ब्लोइंग इन द विंड* को दोहराते हुए सत्यार्थी ने प्रतिनिधियों से इस तथ्य पर चिंतन करने के लिए कहा कि महर हफ्ते लगभग 10,000 बच्चों को बाल श्रम और दासता में धकेल दिया जाता है। ''और ये सिर्फ एक संख्या नहीं हैं बल्कि सांस लेने वाले शरीर और दिल हैं। वे आपके दरवाजे पर दस्तक देने नहीं आएंगे; हमारे पास मौन की पुकार सुनने वाले कान होने चाहिए। हमारे पास वो आंखें होनी चाहिए जो अदृश्य चेहरे देख सकें। मैं यहाँ बैठा हूँ क्योंकि मुझे आप पर विश्वास है, मेरे प्यारे रोटेरियनों।''

दुनिया ''एक बड़े संकट का सामना कर रही है। युद्ध और हिंसा जैसी दिखाई देने वाली चुनौतियों के बारे में हम सभी जानते हैं। लेकिन हम यह नहीं जानते कि गाजा में कितने निर्दोष

बाएँ से: राशी, पीआरआईपी शेखर मेहता, नोबल पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी, रो ई अध्यक्ष स्टेफ़नी अर्चिक, पीआरआईडी महेश कोटबागी, इंस्टीट्यूट संयोजक रो ई निदेशक अनिरुद्धा रॉयचौधरी, शिप्रा, इंस्टीट्यूट अध्यक्ष पीडीजी जॉन डेनियल और मीरा।

बच्चों पर बमबारी की गई है या बाकी इजरायली बच्चों एवं महिलाओं के साथ क्या हो रहा है जिन्हें आतंकवादी समूह हमास द्वारा अपहरण कर बंदी बना लिया गया है।''

हम केवल इतना जानते है कि ''160 मिलियन बच्चे अपनी शिक्षा, स्वतंत्रता और भविष्य को दांव पर लगाकर आपके और मेरे लिए संपत्ति सृजन करने हेतु काम कर रहे हैं।

आँकड़े बोलते है

युद्ध क्षेत्रों में रहने वाले 2 बिलियन लोगों में से 468 मिलियन बच्चे हैं जो संकट और भय में रह रहे हैं।

हर हफ्ते जहाँ 2 नए अरबपति तैयार हो रहे है; वहीं उसी हफ्ते 10,000 बच्चे स्कूल छोड़ देते हैं और बाल श्रम या गुलामी का शिकार हो जाते हैं

स्कूल छोड़कर जाने वाले 200 मिलियन बच्चे केवल 7 दिनों के वैश्विक सैन्य खर्च से स्कूल जा सकते हैं।

160 मिलियन बच्चे अपनी शिक्षा, स्वतंत्रता और भविष्य को दांव पर लगाकर आपके और मेरे लिए संपत्ति सृजन करने हेतु काम कर रहे हैं।

2023 के अंत तक दुनिया के सबसे अमीर लोगों में से एक प्रतिशत के पास दुनिया की दो तिहाई संपत्ति थी, जबकि 50 प्रतिशत सबसे गरीब लोगों के पास इस संपत्ति का केवल 2 प्रतिशत हिस्सा था

> दुनिया आज जितनी टूटी हुई, बंटी हुई और नाजुक है, उतनी पहले कभी नहीं थी। हमने पहले कभी एक साथ इतने जटिल संकट और अनेक चुनौतियों का सामना नहीं किया, जितना आज कर रहे हैं।

बच्चे कभी भी युद्धों के लिए जिम्मेदार नहीं रहे।'' वयस्क, अमीर, जानकार और सत्ता में बैठे लोग इसके लिए जिम्मेदार है। ''उनकी युद्धोन्मादी, विभाजनकारी मानसिकता, घृणा और प्रतिशोध की भावना इस स्थिति के लिए जिम्मेदार हैं। लगभग दो बिलियन लोग (मानवता का लगभग एक चौथाई) युद्ध क्षेत्रों या संघर्ष एवं युद्धों से प्रभावित देशों में रह रहे हैं; इनमें से 468 मिलियन बच्चे युद्धग्रस्त देशों और संघर्ष क्षेत्रों में खतरे और भय में जी रहे हैं। उनका मस्तिष्क उस नफरत, प्रतिशोध, भय और हिंसा के वातावरण में आकार लेता हैं। हम अपने बच्चों को किस तरह की दुनिया देने जा रहे हैं,'' उन्होंने पूछा।

उनके लिए ऐसी ''विभिन्न परिस्थितियाँ देखना हृदय विदारक था जहाँ बच्चे फुटबॉल बनाने में तो शामिल होते हैं लेकिन वे कभी फुटबॉल नहीं खेल सकते। मैं ऐसे कई बच्चों को जानता हूँ जो उप-सहारा अफ्रीका और अन्य अफ्रीकी देशों में कोको के खेतों में काम करते हैं ताकि आप, मैं और हमारे बच्चे चॉकलेट का आनंद ले सकें। मगर वे बच्चे कभी चॉकलेट का स्वाद नहीं चख पाए। वे किसके बच्चे हैं? आप कह सकते हैं कि वे पाकिस्तानी, भारतीय, अफ्रीकी, अमेरिकी या यूरोपीय, मुस्लिम, हिंदू, यहूदी या ईसाई बच्चे हैं लेकिन मैं कहता हूँ कि वे आपके, मेरे और हमारे बच्चे हैं।''

अगर हम इन बच्चों की रक्षा नहीं कर सकते, ''तो हम मानवता की रक्षा नहीं कर सकते। अगर एक भी बच्चा खतरे में है तो पूरी मानवता खतरे में है।''

पीआरआईपी मेहता के साथ सत्यार्थी।

मैंने एक हिंसा और संघर्ष-मुक्त दुनिया के समाधान खोजने के लिए हार्वर्ड, ऑक्सफोर्ड, एमआईटी, भारतीय आईआईटी आदि जैसी 13 विश्वविद्यालयों के साथ सत्यार्थी आंदोलन फॉर ग्लोबल करुणा शुरू किया है।

दुनिया के अमीर और गरीब लोगों के बीच बढ़ती असमानता पर चिंता व्यक्त करते हुए सत्यार्थी ने कहा कि 2023 के अंत तक दुनिया के एक प्रतिशत सबसे अमीर लोगों के पास दुनिया की दो तिहाई संपत्ति थी जबकि 50 प्रतिशत सबसे गरीब लोगों के पास इस धन का केवल दो प्रतिशत हिस्सा था और यह अंतर बढ़ता जा रहा है।

सत्यार्थी ने एआई पर चर्चा करते हुए कहा कि यह एक महान अवसर प्रदान करता है और अगर स्वास्थ्य और कृषि जैसे क्षेत्रों में इसका सही उपयोग किया जाए तो दुनिया की अनेक समस्याओं का समाधान किया जा सकता है। लेकिन अगर कोई भी कृत्रिम बुद्धिमत्ता मानवीय तत्वों से जुड़ी न रहें तो इसका दुरुपयोग और हेराफेरी का खतरा बढ़ जाता है जिससे अनेक समस्याएं उत्पन्न हो सकती है।

सभी धर्म और सामाजिक परिवर्तन करुणा से उत्पन्न हुए, जब किसी ने दूसरों के दुख को अपना दुख समझा और समाधान खोजने के लिए कदम उठाया।

''मेरा मानना है कि एआई में मानव घटक की आवश्यकता है। इसलिए मैं वैश्विक समस्याओं के समाधान में सहानुभूतिपूर्ण बुद्धिमत्ता की अपील करता हूँ। आम तौर पर करुणा को मानवीय, सामाजिक, आध्यात्मिक और नैतिक मूल्य माना जाता है और यह सभी धर्मों में गहराई से समाहित है। मेरी राय में सभी धर्मों और सामाजिक परिवर्तनों का जन्म करुणा से हुआ है जब किसी ने दूसरों की पीड़ा को अपनी पीड़ा समझा और उस पीड़ा को दूर करने के लिए कदम उठाया।''

और इस प्रकार धर्मों, क्रांतियों और सामाजिक परिवर्तनों का जन्म हुआ। लेकिन अब समाज, सरकार, न्यायपालिका, कानून प्रवर्तन और विश्वास की बेहतरी के लिए काम करने वाले सभी संस्थानों में मौजूद उस मूल्य, उस ऊर्जा, उस स्रोत, उस चिंगारी को सहानुभूति के ऑक्सीजन की आवश्यकता है।

विकसित करें जो निस्वार्थ और करुणा से भरी हो... इसे वैसे ही करें जैसे एक माँ अपने बच्चे के लिए बिना किसी उम्मीद के सब कुछ करती है।

हमारी दुनिया के सामने मौजूद खतरों और समस्याओं पर लौटते हुए उन्होंने कहा कि एक तरफ जहाँ उन समस्याओं के निर्माता और अन्याय एवं हिंसा के अपराधी मजबूत हो रहे हैं वहीं दूसरी ओर जो इन समस्याओं का समाधान कर सकते हैं, मूक दर्शक बने हुए हैं।

''इसलिए मैंने ङ्कसत्यार्थी मूवमेंट फॉर ग्लोबल कम्पैशनफ शुरू किया है। यदि हम में से प्रत्येक व्यक्ति जिसके दिल में करुणा है, उस करुणा को फिर से जागृत और सक्रिय कर सकें तो इसका समाधान अभी भी संभव है।'' उस 'करुणा अनुपात' को बढ़ाने के लिए वह हार्वर्ड, ऑक्सफोर्ड, एमआईटी, कुछ भारतीय आईआईटी, अशोका और वाशिंगटन जैसे कई विश्वविद्यालयों के साथ काम कर रहे है। ''हमने करुणा अनुपात के इस विचार पर चर्चा करने के लिए 20 शीर्ष विद्वानों के साथ 13 ऐसे विश्वविद्यालयों की एक गोलमेज बैठक तैयार की है और यूनेस्को मुख्यालय में दयालु नेतृत्व के लिए एक वैश्विक अकादमी शुरू की है। यह मेरा नया आंदोलन है और हम वर्तमान में एआई सहित हर चीज का उपयोग करके डेटा, सूचना, अनुसंधान सामग्री का विश्लेषण कर रहे हैं।''

उन्होंने कहा कि ''मूक दर्शक इतिहास नहीं बदलते क्योंकि इतिहास उन लोगों द्वारा रचा जाता है जो मैदान में उतरकर समस्याओं को हल करने का साहस रखते हैं,'' उन्होंने रोटेरियनों से उनके आंदोलन में शामिल होने की अपील की ताकि एक बेहतर और संघर्षमुक्त दुनिया के लिए समाधान ढूंढा जा सकें।

चित्र: रशीदा भगत

हमारे बच्चों को सुरक्षित रखना

किरण ज़ेहरा

रोटरी क्लब आगरा, रो ई मंडल 3110, ने स्कूली बच्चों के बीच सुरक्षित और असुरक्षित स्पर्श के बारे में जागरूकता फ़ैलाने के लिए एक कार्यक्रम शुरू किया है। ''इसे शिक्षा के एक अनिवार्य हिस्से के रूप में पहचानते हुए, हमारा क्लब बच्चों को व्यक्तिगत सुरक्षा और सुरक्षा के अधिकार के बारे में सिखाने के लिए काम कर रहा है, और इस ज्ञान को स्कूल पाठ्यक्रम में एकीकृत करने के लिए भी प्रयासरत है। बच्चों को अनुचित व्यवहार की पहचानने में मदद करना उन्हें अपने जीवन में बहुत प्रारंभिक चरण में खुद को बचाने के लिए सशक्त बनाता है। यह महत्वपूर्ण शिक्षा है,'' क्लब की अध्यक्ष नम्रता पनिकर कहती हैं।

यौन अपराधों से बच्चों के संरक्षण (पॉक्सो) अधिनियम की विशेषज्ञ एवं वकील नम्रता मिश्रा ने हाल ही में आगरा के हरिपर्वत स्थित क्वीन विक्टोरिया गर्ल्स इंटर कॉलेज में क्लब द्वारा आयोजित एक जागरूकता कार्यक्रम का नेतृत्व किया। रिपोर्ट में कहा गया है, ''भारत में बाल शोषण के मामलों की संख्या बहुत बड़ी है, और अध्ययनों से संकेत मिलता है कि बच्चों का एक बड़ा प्रतिशत किसी न किसी रूप में दुर्व्यवहार का अनुभव करता है। कई समुदायों में व्यक्तिगत सीमाओं के बारे में चर्चा अक्सर टाली जाती है, जिससे बच्चे असुरक्षित हो जाते हैं। ग्रामीण और वंचित क्षेत्रों में बच्चे विशेष रूप से जोखिम में हैं, जिससे संवेदीकरण के प्रयास आवश्यक हो जाते हैं,'' वह कहती है।

कहानी के माध्यम से उन्होंने छात्रों को सुरक्षित और असुरक्षित स्पर्श के बीच अंतर करना सिखाया, और उन्हें असहज या हानिकारक स्थितियों का जवाब देने और अनुचित व्यवहार की सूचना देने के तरीके के बारे में मार्गदर्शन किया। नम्रता मिश्रा कहती हैं कि सांस्कृतिक मानदंड बच्चों को दुर्व्यवहार के खिलाफ बोलने से हतोत्साहित करते हैं। ''बच्चों को उन कार्यों के खिलाफ ना करने का अधिकार है जो उन्हें असहज बनाते हैं, भले ही ये बड़ों व्यक्तियों द्वारा किये जा रहे हो। बच्चों और विश्वसनीय वयस्कों के बीच खुली बातचीत ही बाल शोषण को रोकने की कुंजी है।''

सत्र में सोशल मीडिया से जुड़े जोखिमों पर भी प्रकाश डाला गया। ''स्मार्टफोन और इंटरनेट तक बढ़ती पहुंच के साथ, बच्चों को शोषण के नए रूपों का सामना करना पड़ता है। उन्हें व्यक्तिगत जानकारी ऑनलाइन साझा करने से बचना चाहिए और डिजिटल संवाद के बारे में सतर्क रहना चाहिए। शिकारी अक्सर ऑनलाइन यौन शोषण करने के लिए युवा दिमाग की मासूमियत का फायदा उठाते हैं।''

सत्र के दौरान हेल्पलाइन नंबरों के साथ सुरक्षित एवं असुरक्षित स्पर्श की व्याख्या करने वाले पोस्टर जारी किए गए। क्लब के सदस्य शैलेंद्र नाथ शर्मा, विनोद गुप्ता, जितेंद्र जैन, ऋचा अग्रवाल और मनोज कुमार ने कार्यक्रम के आयोजन में मदद की।

स्कूल के प्रिंसिपल जॉयस सिलास ने इस मुद्दे को संबोधित करने के लिए क्लब को धन्यवाद दिया और कहा, ''इस तरह की कार्यशालाएं छात्रों को उनकी सुरक्षा के बारे में सूचित निर्णय लेने में मदद करती हैं और जागरूकता पैदा करके एवं बच्चों को मदद के उपकरण प्रदान करके दुर्व्यवहार की अंडर-रिपोर्टिंग को कम करती हैं।''

क्लब का उद्देश्य बच्चों को यौन शोषण के खतरे से बचाने के लिए स्कूलों में कार्यशालाओं एवं जागरूकता शिविरों का आयोजन करना है।■

वकील नम्रता मिश्रा एक छात्र को अच्छे और बुरे स्पर्श के बारे में सिखाती हुयी।

रोटरी के भविष्य को आकार देना

जयश्री

नेतृत्व की दिशा में कदम रखने का मतलब अपने मंडल की देखरेख करने से बहुत अधिक है। इसका अर्थ है रोटरी के भविष्य को आकार देना। आप वो प्रेरक शक्ति हैं जो परिवर्तन के समय रोटरी को आगे बढ़ाएंगे और इसकी निरंतर शक्ति एवं प्रासंगिकता को सुनिश्चित करेंगे, संस्थान के संयोजक रो ई निदेशक अनिरुद्धा रॉयचौधरी ने कोच्चि जोन इंस्टीट्यूट में डीजीई और डीजीएन के लिए लर्निंग सेमिनार के उद्घाटन संयुक्त सत्र में कहा।

इस वर्ष चुने गए मंडल नेताओं के लिए प्रशिक्षण सेमिनार, जिसे पारंपरिक रूप से GETS (गवर्नर्स-इलेक्ट ट्रेनिंग सेमिनार) और GNTS (गवर्नर्स-नॉमिनी ट्रेनिंग सेमिनार) के रूप में जाना जाता है, का नाम बदलकर GELS (गवर्नर्स-इलेक्ट लर्निंग सेमिनार) और GNLS (गवर्नर्स-नॉमिनी लर्निंग सेमिनार) कर दिया गया है। मंडल नेताओं के रूप में आपके पास अपने क्लब के नेताओं के माध्यम से परिवर्तन लाने की शक्ति हैं क्योंकि वो अपने समुदायों को अच्छी तरह से समझते हैं। यह सेमीनार आपको इस महत्वपूर्ण भूमिका को निभाने के लिए आवश्यक उपकरण प्रदान करता है, रॉयचौधरी ने कहा।

आरआईपीएन सांगकू युन ने रोटरी के वैश्विक प्रभाव के प्रेरक उदाहरण साझा किए जैसे कि गाज़ा में विश्व स्वास्थ्य संगठन के साथ इसकी साझेदारी, जिसने 500,000 डॉलर के रोटरी योगदान के माध्यम से 90 प्रतिशत बच्चों का टीकाकरण सुनिश्चित किया। ''रोटरी का कार्य यह दर्शाता है कि एक साथ मिलकर हम चमत्कार कर सकते हैं। चाहे गरीबी उन्मूलन करना हो, स्वास्थ्य में सुधार करना हो या शिक्षा का विस्तार करना हो तब हमारे सामूहिक प्रयास जीवन बदलते हैं। तो चलिए हम अपने प्रयासों को आगे बढ़ाना जारी रखें,'' उन्होंने कहा।

पीआरआईपी शेखर मेहता ने नेताओं से चुनौतियों के बावजूद एक दूरदृष्टि दृष्टिकोण अपनाने का आग्रह किया। ''तूफ़ान के ऊपर उड़ने वाले एक गिद्ध की तरह अगर आपके पास एक दृष्टिकोण है तो बड़े सपने देखें। आपके मंडल के 5,000 लोगों में से आपको चुना गया क्योंकि उनका मानना है कि आपके पास उनकी तुलना में एक बड़ा दृष्टिकोण है,'' उन्होंने टिप्पणी की। पोलियो उन्मूलन अभियान जैसी रोटरी की उपलब्धियों पर विचार करते हुए उन्होंने कहा, ''रोटरी की पहल ने 20 मिलियन बच्चों को

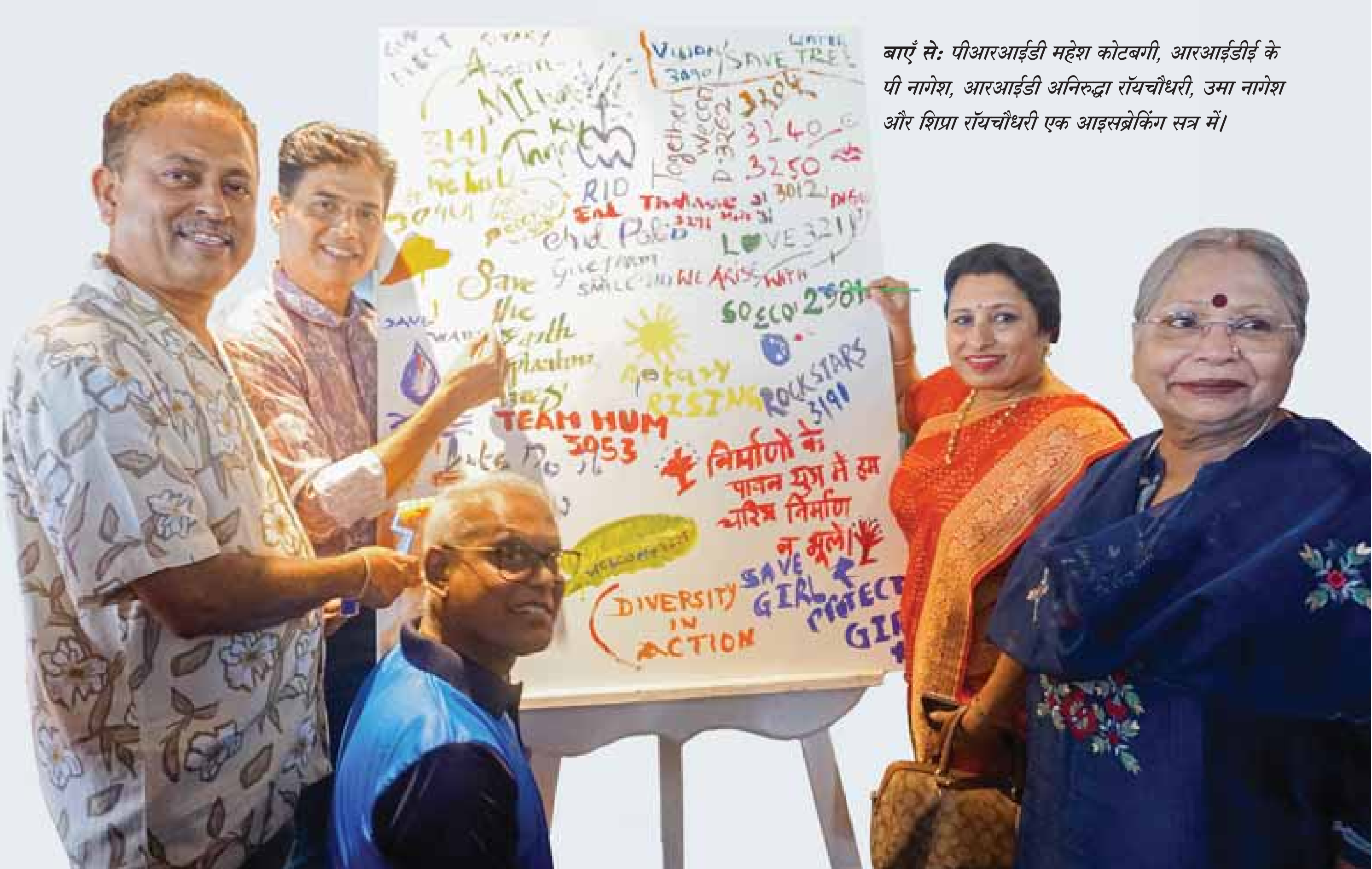

बाएँ से: पीआरआईडी महेश कोटबगी, आरआईडीई के पी नागेश, आरआईडी अनिरुद्धा रॉयचौधरी, उमा नागेश और शिप्रा रॉयचौधरी एक आइसब्रेकिंग सत्र में।

डीजीई के लिए एक ड्रम सर्कल सत्र।

बचाया - जो कि प्रथम विश्व युद्ध में मारे गए लोगों के बराबर है। स्पष्ट लक्ष्य और विस्तृत योजनाओं ने इस सपने को वास्तविकता में बदला।'' उन्होंने नेताओं को अपने लक्ष्यों को संप्रेषित करने, कार्यों को सौंपने और अपनी यात्रा में दूसरों को शामिल करने के लिए प्रोत्साहित किया।

पीआरआईपी के आर रवींद्रन ने वैश्विक शांति प्रयासों को आकार देने में रोटरी की भूमिका पर प्रकाश डाला, जिसमें यूनेस्को और संयुक्त राष्ट्र के गठन में इसका योगदान भी शामिल है। उन्होंने कहा कि 1942 में रोटरी क्लब लंदन द्वारा आयोजित एक बैठक ने यूनेस्को के लिए एक प्रारूप तैयार करने में मदद की। जब 1945 में संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक तौर पर स्थापना की गई तो 50 रोटेरियनों ने आधिकारिक प्रतिनिधिमंडल के रूप में इसमें भाग लिया; कार्यबलों में 27 रोटेरियन प्रमुख नेता थे। रोटरी क्लब ब्रसेल्स के पॉल-हेनरी स्पाक संयुक्त राष्ट्र महासभा के पहले अध्यक्ष बने और इसके बाद के दशक में पांच अन्य रोटेरियनों ने यह भूमिका निभाई, उन्होंने कहा।

सहयोग की शक्ति के बारे में बात करते हुए उन्होंने कहा, ''अक्सर हम ऐसे काम करते हैं जैसे हम कोई अलग-अलग द्वीप हों और अपनी ही तटीय सीमा द्वारा सीमित हों। लेकिन कल्पना कीजिए कि अगर हम एक द्वीपसमूह की तरह व्यवहार करते हैं जहाँ अलग-अलग द्वीप समूह आपस में जुड़े हुए होते हैं और एक मजबूत, एकीकृत पूर्ण द्वीप का निर्माण करते हैं। रोटरी में सेवा वो गोंद है जो हमें एक साथ जोड़े रखती है। सहयोग हमारे प्रभाव को कई गुना बढ़ा देता है जिससे हम किसी भी अकेले क्लब या व्यक्ति की तुलना में बहुत अधिक हासिल कर सकते हैं।''

रवींद्रन ने श्रीलंका सरकार और कॉर्पोरेट फंडिंग के साथ साझेदारी का उल्लेख करते हुए बताया कि इसने रोटरी को 2030 तक देश में सर्विकल कैंसर को समाप्त करने का लक्ष्य निर्धारित करने में मदद की। ''हमारी प्रमुख चाय कंपनियों में से एक ने हमें ₹7.5 करोड़ देने का वादा किया बशर्ते हम इसका मिलान करें। इस वादे के साथ हमने सरकार से संपर्क किया जिन्होंने 50 प्रतिशत निधियन देने पर सहमति व्यक्त की। रोटरी ने आवश्यक निधियन को पूरा करने के लिए ₹2.5 करोड़ की राशि दी। और हम अपने लक्ष्य को हासिल करने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं,'' उन्होंने समझाया।

टीआरएफ न्यासी भरत पंड्या ने दोहराया कि पाकिस्तान और अफगानिस्तान जैसे क्षेत्रों में चुनौतियों के बावजूद पोलियो उन्मूलन रोटरी की सर्वोच्च प्राथमिकता है। ''यह लड़ाई बच्चों को बचाने और उनके भविष्य को सुरक्षित करने के बारे में है,'' उन्होंने नेताओं से पोलियोप्लस, वार्षिक निधि और अक्षय निधि के लिए दानदाताओं को विस्तारित करने का आग्रह करते हुए कहा। उन्होंने एशिया में एक नए शांति केंद्र को स्थापित करने की योजना की घोषणा भी की जिसमें सियोल का क्यूंग ही विश्वविद्यालय और पुणे में सिम्बायोसिस विश्वविद्यालय संभावित स्थलों के रूप में शामिल होंगे।

रो ई निदेशक राजू सुब्रमण्यम ने क्लब और मंडल स्तर पर शीघ्र संघर्ष समाधान पर जोर दिया और क्लब के उपनियमों में विवाद निवारण तंत्र को शामिल करने की सिफारिश की। ''रोटरी आपसी सम्मान और

आप वह प्रेरक शक्ति हैं जो रोटरी को परिवर्तन के समय में आगे बढ़ाएगी और इसकी निरंतर मजबूती और प्रासंगिकता सुनिश्चित करेगी।

अनिरुद्धा रॉयचौधरी
रो ई निदेशक और इंस्टीट्यूट संयोजक

बाएँ से: सुमति मुरुगानंदम, उमा नागेश, वनाती रविंद्रन, शिप्रा रॉयचौधरी, माधवी पांड्या, कैथरीन गंप और विनिता वेंकटेश भागीदार सत्र में।

सहयोग पर पनपती है। सुनने और समझने की संस्कृति को बढ़ावा दें,'' उन्होंने सलाह दी।

अध्ययन सत्रों के सामान्य सूत्रधार पीआरआईडी महेश कोटबागी ने कहा कि प्रभावशाली नेतृत्व के लिए सामुदायिक जरूरतों की पहचान करने और प्रभावी समाधान खोजने की आवश्यकता होती है। ''नेतृत्व का अर्थ निष्पादन, विश्वास और साझा दृष्टिकोण में योगदान देने के लिए दूसरों को सशक्त बनाना है,'' उन्होंने कहा। पीआरआईडी ए एस वेंकटेश ने सार्थक अनुभवों के माध्यम से सदस्यों को रोकने पर जोर दिया और विविधता, समानता और समावेशन (डीईआई) प्रयासों की वकालत की। ''सच्ची डीईआई सभी पृष्ठभूमियों, क्षमताओं और दृष्टिकोणों के लोगों को अपनाने के लिए लैंगिक विविधता से परे होता है ताकि सभी सदस्य मूल्यवान और सम्मानित महसूस करें,'' उन्होंने कहा।

आरआईडीई के पी नागेश और एम मुरुगनंदम ने सदस्यता वृद्धि, एकेएस सदस्यों की संख्या बढ़ाने और निर्देशित उपहारों को सुरक्षित करने पर ध्यान केंद्रित करने की अपनी योजनाओं का विवरण दिया।

डीजीई और डीजीएन के साझेदारों ने शिप्रा रॉयचौधरी और विद्या सुब्रमण्यम द्वारा आयोजित अभिविन्यास सत्रों में भी भाग लिया। इन सत्रों में रोटरी की संरचना का परिचय, अंतर्राष्ट्रीय सभा की तैयारी और पेशेवर प्रस्तुति, शिष्टाचार एवं नेटवर्किंग पर मार्गदर्शन शामिल था।

जहाँ अमिता कोटबागी ने रोटरी के ध्यानाकर्षण क्षेत्रों और अनुदानों के बारे में जानकारी दी वहीं माधवी पांड्या ने टीआरएफ निधि और पोलियो उन्मूलन प्रयासों पर चर्चा की। विनीता वेंकटेश, वनाती रवींद्रन, उमा नागेश और सुमति मुरुगानंदम जैसे अनुभवी नेताओं ने सामाजिक एकीकरण और संबंध निर्माण पर व्यावहारिक सलाह साझा की ताकि साझेदार रोटरी राजदूत के रूप में अपनी भूमिकाओं को निभाने के लिए अच्छी तरह से तैयार रहें।

जहाँ पीडीजी किशोर चेरुकुमल्ली ने GELS अध्यक्ष के रूप में सेवा दी वहीं पीडीजी संदीप नारंग ने GNLS की अध्यक्षता की।

बाएँ से: डीजीई एलिजाबेथ चेरियन (3192), निशा शेखावत (3053), टीना एंटनी (3211), नम्रता सनातन (3250), अमिता मोहिंद्रु (3012) और प्रज्ञा मेहता (3056)।

चित्र: जयश्री

मनीला ने महिला रोटेरियनयों को मंत्रमुग्ध किया

टीम रोटरी न्यूज़

रोई मंडल 3000 से 42 अखिल-महिला 'शीगल्स' टीम के लिए यह जीवन में एक बार मिलने वाला अनुभव था क्योंकि वे मनीला, फिलीपींस में एक सप्ताह के लंबे अभियान पर गए थे और रो ई मंडल 3820 के स्थानीय क्लबों के साथ संयुक्त प्रयास में फ़िलिपींस की मिट्टी पर पांच परियोजनाओं की शुरुआत की जिनके साथ उन्होंने संवादात्मक सत्रों में ध्वज का आदान-प्रदान किया।

रो ई मंडल 3000 की महिला सशक्तिकरण टीम और रोटरी क्लब तिरुचिरापल्ली शक्ति से सभी 35 रोटेरियनों के साथ सात एनेट्स ने स्तन और सर्विकल कैंसर पर जागरूकता पैदा करने के लिए पिंक एम्बेसडर की भूमिका निभाई। और इस रोटरी परियोजना को बढ़ावा देने के लिए उनकी बस को फ्लेक्स बोर्ड से सजाया गया। कार्यक्रम स्थल पर उन्होंने पर्चे वितरित किए और आगंतुकों द्वारा पहने गए गुलाबी शॉल फिलिपिनो रोटेरियनों को सौंपे गए।

विश्व दयालुता दिवस (13 नवंबर) के अवसर पर दूर-दूर तक प्यार का संदेश फैलाने के लिए बड़े स्माइली के साथ पीले गुब्बारे छोड़े गए। अगले दिन नीले गुब्बारे और नीले बैंड ने फिलिपिनो के बीच मधुमेह के प्रति जागरूकता फैलाने का संदेश फैलाया। दुनिया में पहली बार मनाए गए अंतर्राष्ट्रीय संगठित अपराध के सभी रूपों की रोकथाम के लिए अंतर्राष्ट्रीय दिवस (15 नवंबर) पर रोटरी क्लब थेनी स्टार्स के सदस्यों ने फ्लायर्स और पत्रक वितरित किए और हवा में सफेद गुब्बारे छोड़े। विश्व सहिष्णुता दिवस (16 नवंबर) के अवसर पर रोटरी क्लब मदुरै ब्लॉसम के सदस्यों ने इसी तरह के समान पत्रक वितरण किए।

यह एक गंभीर अवसर था जब मनीला में सड़क दुर्घटना पीड़ितों के लिए विश्व स्मरण दिवस (17 नवंबर) के अवसर पर मोमबत्ती की रोशनी में आयोजित जुलूस में वाहन चालकों और यात्रियों के बीच सड़क सुरक्षा का संदेश फैलाने के लिए नारंगी गुब्बारे छोड़े गए। इस आयोजन में रोटरी क्लब मदुरै मल्लिगई के सदस्य आगंतुकों का नेतृत्व करते हुए मनीला के लोगों के बीच एक महत्वपूर्ण संदेश फैलाने में सफल रहें। फिलिपिनो आतिथ्य से प्रभावित होकर तमिलनाडु की शीगल्स टीम ने दोपहर के भारतीय भोजन का आनंद लिया, ओकाडा म्यूजिकल फाउंटेन का दौरा किया जो कई पर्यटकों को आकर्षित करता है, फिर उन्होंने इंट्रामुरोस का दौरा किया जो एक विचित्र दीवार वाली कॉलोनी है, जहाँ की स्पेनिश इमारतें और घर अपने उपनिवेश काल की याद दिलाते हैं।

आगंतुक यहाँ की कोबल्ड स्ट्रीट से प्रभावित थे जो सैन ऑगस्टिन चर्च और फोर्ट सैंटियागो की ओर जाती है जहाँ पर उनके राष्ट्रीय नायक को 1896 में फांसी दिए जाने के पहले बंदी बनाया गया था। ''चाहे वह मनीला कैथेड्रल हो, पत्थर और लकड़ी का कासा मनीला हो या फिलीपींस का सांस्कृतिक केंद्र हो, इन सबको देखकर विदेशी यात्रियों के उत्साह और आश्चर्य का ठिकाना नहीं था,'' रो ई मंडल 3000 की महिला सशक्तिकरण टीम की सचिव अह्लिरानी बालाजी ने कहा। ''ताल ज्वालामुखी द्वीप यात्रा के दौरान डगआउट कैनो में क्रेटर की ओर नाव की सवारी किसी उच्च एड्रेनलीन उत्साह से कम नहीं था; रॉक और बोल्डर से घिरी गहरी घाटियों और हरी-भरी वनस्पतियों के बीच एक स्थानीय बांका में यात्रा करते हुए पगसांजन झरने तक पहुंचना एक ऐसा अनुभव था जिसे हम कभी नहीं भूल सकते,'' उन्होंने कहा।

उन्होंने फेस्टिवल मॉल में शॉपिंग की, बांस की नाव की सवारी की और विला एस्कुडेरो के एक संग्रहालय के दौरे के साथ अपनी मनीला यात्रा को पूर्ण किया, जो पर्यटकों के लिए एक आवश्यक गंतव्य है क्योंकि यह स्थानीय विरासत और पारंपरिक परिदृश्य से भरा हुआ है। रोटेरियन बाबू कन्नन ने रो ई मंडल 3820 के पीडीजी मेने सोलोमन के साथ समन्वय किया ताकि मनीला में उनके सप्ताह भर की यात्रा का परेशानी मुक्त और आनंदमय अनुभव सुनिश्चित किया जा सके।■

मनीला, पिलीपींस में रो ई मंडल 3000 की महिला रोटेरियन।

रोटरेक्ट मंडल नेताओं के साथ (बाएँ से) पीडीआरआर अरुण तेजा, पीडीजी बी एम शिवराज, पीआरआईडी महेश कोटबगी, रो ई निदेशक अनिरुद्धा रॉयचौधरी, रो ई अध्यक्ष स्टेफ़नी अर्चिक, आरआईडीएन टॉम गंप, आरआईडीई के पी नागेश और पीडीजी वी आर मत्तु कोच्चि में रोटरी ज़ोन इंस्टीट्यूट में रोटरेक्ट सत्र के दौरान।

पीढ़ियों के बीच सेतु

जयश्री

हमें खुश होना चाहिए और इस तथ्य का आनंद लेना चाहिए कि हम जादू कर रहे हैं। लोगों के जीवन में परिवर्तन लाते हुए हम अपने स्वयं के जीवन को भी समृद्ध कर रहे हैं, रो ई अध्यक्ष स्टेफनी अर्चिक ने कोच्चि रोटरी इंस्टीट्यूट में 46 डीआरआरई और डीआरआरएन की एक सभा को संबोधित करते हुए कहा। उन्होंने रोटरी की पहलों में रुचि और भागीदारी को बनाए रखने में मौज-मस्ती और जुड़ाव के महत्व पर जोर दिया।

स्टेफ़नी ने रोटरेक्ट और रोटरी के बीच सहयोग और सुचारू संप्रेषण की आवश्यकता पर प्रकाश डाला। ''गलत धारणाएं दोनों तरफ मौजूद हैं, जहाँ रोटेरियन अक्सर रोटरेक्टरों को अनुभवहीन मानते हैं; वहीं रोटरेक्टर भी रोटेरियनों को पुराने और असंबद्ध समझते हैं। विकास के लिए एक दूसरे से सीखना, विशेष रूप से बड़ों को छोटों से सीखना आवश्यक है,'' उन्होंने जोर देकर कहा कि रोटरी केवल उम्रदराज लोगों के लिए नहीं है बल्कि सेवा का जुनून रखने वाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए है।

2019 की विधान परिषद में रोटरेक्ट को ऊँचा उठाने के ऐतिहासिक निर्णय का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि इस बात को प्रभावी बनाने के लिए अधिक संरचित उपायों की आवश्यकता है। उन्होंने मंडल के नेताओं से रोटरेक्टरों को सक्रिय रूप से शामिल करने और उनके प्रारम्भिक उत्साह को बनाए रखने का आग्रह किया। ''हर किसी के लिए कुछ न कुछ होता है। चुनौती उस चिंगारी की पहचान करके उसे पोषित करने में निहित है। किसी को भी हमारी दुनिया में लाना बहुत आसान है। लेकिन उन्हें रोके रखने के लिए प्रयास करने की आवश्यकता होती है,'' उन्होंने कहा।

रो ई अध्यक्ष ने समावेशिता और विविधता को बढ़ावा देने के लिए रोटरेक्ट की प्रशंसा की। ''रोटरेक्ट क्लब पहले ही लिंग विविधता में बड़ी उपलब्धियां हासिल कर चुके है क्योंकि वैश्विक स्तर पर उनका महिला प्रतिनिधित्व 50 प्रतिशत है वहीं रोटरी का प्रतिनिधित्व 30 प्रतिशत से भी कम है। विविधता को मजबूत करने से संगठन मजबूत होता है।'' उन्होंने रोटरेक्टरों के लिए सैटेलाइट क्लब बनाने का सुझाव

दिया जो उनकी जीवंत संस्कृति को संरक्षित करते हुए ''इस अंतर को पाटने में मदद कर सकते हैं।''

संस्थान के संयोजक रो ई निदेशक अनिरुद्धा रॉयचौधरी ने रोटरेक्ट की घटती संख्या पर चिंता व्यक्त की। ''भारत में रोटरेक्टरों का सबसे बड़ा समूह है, फिर भी हमने इस साल 17,000 रोटरेक्टरों को खो दिया है। हम नए विचारों के लिए आप पर निर्भर हैं; आप रोटरी का भविष्य हैं,'' उन्होंने कहा और रोटरी एवं रोटरेक्ट क्लबों को एक साथ काम करने और प्रभावी सेवा परियोजनाओं के लिए सहयोग करने का आह्वान किया। ''आपकी ऊर्जा महत्वपूर्ण है लेकिन आपको हमारे प्रतिष्ठित संगठन को आगे ले जाने के लिए रोटरी की विरासत को अपनाना होगा।''

रो ई निदेशक राजू सुब्रमण्यन ने कहा कि सदस्यता शुल्क की शुरुआत के बाद से रोटरेक्ट सदस्यता में भारी गिरावट आई है। ''रोटरी का हिस्सा बनने के लाभों का मूल्यांकन करें। यह आपको व्यक्तिगत विकास करने, अपने समुदाय के लिए कुछ अच्छा करने और लोगों से जुड़ने के अवसर प्रदान करती हैं। रोटरी आपको एक बेहतर इंसान बनने में मदद करती है,'' उन्होंने कहा और इस बात पर भी ध्यान दिया कि कोई भी रोटरेक्ट मंडल वैश्विक अनुदान परियोजना के साथ नहीं आया है, जो 'एलिवेट रोटरेक्ट' संकल्प का एक परिवर्तनकारी पहलू है।

पीआरआईडी महेश कोटबागी ने कहा, ''अपने आस-पास मौजूद वंचित लोगों की पहचान करें और उन्हें बढ़ने का अवसर दें। आप जो कुछ भी करते हैं उसे पूरी ईमानदारी से करें।''

आरआईडीई एम मुरुगनंदम ने अपने रोटरेक्टर के दिनों को याद किया। समय बदल गया है लेकिन एक बात स्पष्ट है: हमारे काम में संरचित दृष्टिकोण या क्रम का महत्व, उन्होंने कहा और रोटरी के तीन महत्वपूर्ण पहलुओं पर प्रकाश डाला - इसकी ताकत, सेवा के प्रति इसकी अटूट प्रतिबद्धता और जिम्मेदारी को अपनाना।

''रोटरी सिर्फ एक नाम नहीं है - यह एक आंदोलन है, एक ऐसा मंच है जो साझा मूल्यों और सेवा के प्रति प्रतिबद्धता के माध्यम से 1.4 मिलियन लोगों को एकजुट करता है। एक साथ मिलकर हम न केवल भारत की बल्कि पूरी दुनिया के स्वास्थ्य और संपत्ति की रक्षा करते हैं,'' उन्होंने कहा। ''चलिए हम एक उद्देश्य के साथ आगे बढ़ना, प्रेरित करना और नेतृत्व करना जारी रखें।'' भारत की उपलब्धि पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा, ''आज, रोटरी इंडिया फल-फूल रही है। भारत न केवल अपनी संख्या में बल्कि सेवा की गुणवत्ता में भी बहुत ऊँचे पायदान पर है। 220 से अधिक देशों में भारत विकास और सेवा में दूसरे स्थान पर है।'' उन्होंने युवाओं से जिम्मेदारी को स्वीकार करने का आग्रह किया। रोटरी सभी को यह अवसर प्रदान करती है - आगे आएं, जिम्मेदारी लें और सार्थक परिवर्तन लाएं।

> **रोटरेक्ट क्लबों ने लैंगिक विविधता में मील के पत्थर हासिल किए हैं, वैश्विक स्तर पर 50 प्रतिशत महिला प्रतिनिधित्व के साथ, जबकि रोटरी में यह 30 प्रतिशत से कम है।**
>
> **स्टेफ़नी अर्चिक**
> रो ई अध्यक्ष

मुरुगानंदम ने 1:2:3 सूत्र भी साझा किया जिस पर वह आरआईडीई केपी नागेश के साथ मिलकर सदस्यता को मजबूत करने के लिए ध्यान देंगे। ''प्रत्येक नए रोटेरियन के साथ दो रोटरेक्टरों और तीन इंटरेक्टरों को शामिल किया जाना चाहिए।'' इसी तरह हर नए रोटरी क्लब के साथ दो रोटरेक्ट और तीन इंटरेक्ट क्लबों का भी गठन किया जाना चाहिए, उन्होंने कहा। उन्होंने रोटरेक्ट क्लबों को सरकारी स्कूलों के इंटरेक्ट क्लबों के लिए RYLA आयोजित करने हेतु प्रोत्साहित किया।

आरआईडीई नागेश ने बेहतर सहयोग को बढ़ावा देने के लिए ''रोटेरियनों और रोटरेक्टरों दोनों के बीच मानसिकता में बदलाव लाने की आवश्यकता पर जोर दिया। जहाँ रोटेरियनों को रोटरेक्टरों को बच्चों के रूप में देखना बंद करना चाहिए और उनकी क्षमता को पहचानना चाहिए वहीं रोटरेक्टरों को रोटेरियनों के अनुभव और ज्ञान की सराहना करनी चाहिए। रोटरेक्टर नई तकनीकों और नवीन दृष्टिकोणों को अपनाने में उत्कृष्टत होते हैं। रोटेरियनों को इस ताकत को स्वीकार करना चाहिए और पारस्परिक लाभ के लिए इन विचारों को अपने पारंपरिक तरीकों में एकीकृत करना चाहिए। रोटरी का भविष्य इस समझ पर निर्भर करता है,'' उन्होंने कहा।

उन्होंने रोटरेक्ट क्लबों को इंटरेक्ट क्लबों को प्रायोजित करने और इंटरेकटरों को रोटरेक्ट में शामिल होने के लिए प्रेरित करने का सुझाव दिया। मंडल में रोटरेक्ट और रोटरी नेताओं के बीच बेहतर समन्वय के लिए आरआईडीई ने आगामी दिशा प्रशिक्षण सेमीनार में डीआरआरई और डीजीई के लिए एक संयुक्त सत्र का सुझाव दिया। ■

साहस और वीरता की कहानी

वी मुत्तुकुमारन

वी मुत्तुकुमारन

इंस्टीट्यूट संयोजक रो ई निदेशक अनिरुद्धा रॉयचौधरी, कला सज्जाकार एनिका फर्नांडो को स्मृति चिह्न भेंट करते हुए। (बाएं से) एलजीबीटीक्यू कार्यकर्ता ज़ैनब पटेल, श्री मोई भट्टाचार्य, पीपुल एडवाइज़री की संस्थापक, और रो ई मंडल 3030 की पीडीजी आशा वेणुगोपाल।

जब ज़ैनब पटेल के परिवार ने उन्हें सड़क पर छोड़ दिया, ''मैंने भीख मांगी और अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए मुझे अपना शरीर भी बेचना पड़ा।'' मुंबई में इस ट्रांसजेंडर कार्यकर्ता के जीवन का यह सबसे कठिन दौर था। विपरीत परिस्थितियों के बावजूद ज़ैनब ने भारतीय विद्या भवन से बैचलर ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज पूरी की और अब उनके पास मानव संसाधन में एमबीए की डिग्री है और साथ ही संयुक्त राष्ट्र के एक निकाय में काम करने का एक दशक से अधिक का अनुभव भी है, जहाँ लोगों के साथ बातचीत करके और अच्छे, बुरे और बहुत बुरे अनुभवों से, उन्हें अपना एक एनजीओ, सक्षम ट्रस्ट शुरू करने का साहस मिला। वह कोचि संस्थान के प्रतिनिधियों को एक पूर्ण सत्र में संबोधित कर रही थीं।

अपने एनजीओ के माध्यम से वह एलजीबीटीक्यू समुदाय, यौनकर्मियों को सशक्त बनाने और प्रवासी मजदूरों, असहाय महिलाओं और बच्चों को सहायता प्रदान करने का कार्य करती है। वह ट्रांसफॉर्मेशन सैलून एंड एकेडमी की संस्थापक भी हैं जिसका प्रबंधन ट्रांसजेंडरों की एक टीम द्वारा किया जाता है और द ट्रांस कैफे नामक एक रेस्तरां जो पूरे मुंबई में हर दिन 500 लोगों को भोजन वितरित करता है। इन दोनों उपक्रमों की स्थापना में संसाधन और मदद प्रदान करने के लिए उन्होंने रोटरी क्लब बॉम्बे का आभार व्यक्त किया। ज़ैनब कमिंस इंक. में भारत एबीओ (एरिया बिज़नेस ऑफिस) की डाइवर्सिटी (विविधता), एक्विटी (समानता), इन्क्लूसिविटी (समावेशिता) और कल्चर (संस्कृति) (डीईआईसी) नेता भी हैं।

कोलंबो की एक इंटीरियर और आर्ट डेकोरेटर अन्निका फर्नांडो, जो मिश्रित जातीय पहचान के परिवार से हैं, अपनी डच मां की वजह से, कहती हैं कि जब वह ऑस्ट्रेलिया से श्रीलंका गईं तो उन्होंने इस द्वीप की ऐतिहासिक विरासत को प्रतिबिंबित करने के लिए इंटीरियर डिजाइनिंग को चुना। उन्होंने कहा कि उनका काम उपचार और शांति का संदेश देता है क्योंकि श्रीलंका ने 1980 के दशक से गृह युद्ध देखा है और अब वह शांति प्रक्रिया में है। उन्होंने अपनी बहन के साथ मिलकर कोलंबो में तमिलों के ब्लैक जुलाई 1983 नरसंहार को चिह्नित करने के लिए एक भव्य प्रदर्शनी का आयोजन किया जिसमें सशस्त्र बलों द्वारा तमिलों की निर्मम हत्या कर दी गई थी।

श्रीलंका और भारत के लोगों के बीच नियमित संपर्क का आह्वान करते हुए उन्होंने कहा, सांस्कृतिक आदान-प्रदान दोनों देशों के लिए फायदेमंद साबित होंगे। हालांकि गृह युद्ध समाप्त हो गया है, भारत से लगभग 250 साल पहले श्रीलंका आए तमिल बागान श्रमिकों की दुर्दशा अभी भी चिंता का विषय है और अपने सनकी अतीत वाले श्रीलंका को अभी भी अपने समुदायों के बीच मतभेदों और शत्रुता को पूरी तरह से सुलझाना बाकी है, उन्होंने आगे कहा।

ब्रांडिंग रोटरी

अब समय आ गया है कि रोटरी अपनी छवि में सुधार लाने के लिए आगा खान और कोचि बिएननेल फाउंडेशन जैसे समान विचारधारा वाले संगठनों के साथ सहयोग करें ताकि एक कलात्मक बदलाव और ब्रांडिंग के माध्यम से युवाओं को रोटरी क्लबों की ओर आकर्षित किया जा सकें, 2014 में *मेक इन इंडिया* अभियान का डिजाइन तैयार करने वाले मदरलैंड ज्वाइंट वेंचर्स के निदेशक सुनील वैश्यप्रथ ने कहा।

सार्वजनिक छवि के विषय पर बोलते हुए इस रचनात्मक डिजाइनर, जिन्हें सफल विज्ञापन

अभियानों के माध्यम से भारत में प्रतिष्ठित ब्रांडों के रूप में इंडिगो और रॉयल एनफील्ड को बढ़ावा देने का श्रेय दिया जाता है, ने याद किया कि तत्कालीन उद्योग सचिव अमिताभ कांत द्वारा उनसे संपर्क किए जाने के बाद "हमने *मेक इन इंडिया* को एक विज्ञापन अभियान के बजाय एक मंच के रूप में तैयार किया ताकि विदेशी निवेश को आकर्षित किया जा सकें और ब्रांडिंग के माध्यम से गुणवत्तापूर्ण निर्माण प्रक्रिया को बढ़ावा मिल सकें।" उन्होंने केंद्र और राज्य सरकारों की मदद से वैश्विक अनुभव के लिए *मेक इन इंडिया* मंच पर एक इंटरेक्टिव इकोसिस्टम तैयार किया। "कला और डिजाइन बेहतर गुणवत्तापूर्ण ब्रांडिंग और सोच को बढ़ावा दे सकती हैं और ये नीति में बदलाव भी ला सकती हैं," उन्होंने कहा।

उन्होंने 2002 के *अतुल्य भारत* अभियान को याद किया जब पर्यटन में गिरावट आ रही थी, 9/11 का आतंकी हमला तभी तब हुआ ही था और दुनिया के इस हिस्से से यात्रा करने वाले लोगों पर यात्रा प्रतिबंध लागू थे। इस अभियान को एक सौंदर्यात्मक ब्रांड के रूप में प्रस्तुत किया गया जिसकी वजह से भारत की सपेरों और अंधविश्वासों की भूमि की छवि में बदलाव आया। ब्रांडिंग की दुनिया में 1990 के दशक के बाद से बड़े पैमाने पर बदलाव देखने को मिले हैं क्योंकि अब कंपनियां स्वामित्व से साझेदारी, अहंकार से सहानुभूति, अपारदर्शिता से पारदर्शिता की ओर विकसित हुई हैं। उदाहरण के लिए स्पोर्ट्स शू निर्माता, नाइकी ने एक साधारण सी टैगलाइन 'जस्ट डू इट' का इस्तेमाल करके इसे खेल, फिल्मों, फैशन और जीवन शैली को प्रभावित करने वाली वैश्विक पॉप संस्कृति का हिस्सा बना दिया। "अब हम नाइकी को सिर्फ एक जूता कंपनी के बजाय एक वैश्विक ब्रांड के रूप में जानते हैं।"

बहुत ही कम संस्थाएं हैं "जो रोटरी की तरह वाकई जागरूक है और अपने प्रभावशाली कार्यों जैसे पोलियो मुक्त और भूख मुक्त दुनिया के अपने प्रयासों के लिए समर्पित है।" लेकिन रो ई के कार्य को बेहतर पैकेजिंग की आवश्यकता है ताकि इसे और अधिक रोमांचक तरीके से पेश किया जा सके और इसके लिए कुछ सहयोगों के उदाहरण दिए गए है जैसे टेड टॉक्स और 2008 में बराक ओबामा का राष्ट्रपति अभियान, जिसमें एक सड़क कलाकार, शेपर्ड फेयरी के सहयोग से एक 'होप' ओबामा पोस्टर तैयार किया गया था जिसने मतदाताओं की कल्पना को आकर्षित किया और यह दिखाया कि एक ब्रांडिंग को लक्षित उपभोक्ताओं तक पहुंचने में सफल होने के लिए एक मसौंदर्यात्मक बदलावफ की आवश्यकता होती है।

वैश्यप्रथ ने नए सौंदर्यशास्त्र और जीवंत ऊर्जा के सहयोग से रोटरी को युवा पीढ़ियों के अनुकूल बनाने का आह्वान किया। ■

रोटरेकटरों ने सीएसआर अनुदान हासिल किया

टीम रोटरी न्यूज़

रोई मंडल 3170 के डीआरआर निखिल चिंदक ने बेलगाम स्थित विजयकांत फूड एंड डेयरी की सीएसआर शाखा आयु फाउंडेशन से 25 लाख का सीएसआर अनुदान प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। आरएसी बेलगाम साउथ के सदस्य चिंडक कहते हैं, इस कोष का इस्तेमाल स्कूलों में 1,000 युवा लड़कियों को सर्वाइकल कैंसर के टीके देने के लिए किया जाएगा। उन्होंने आगे कहा, डीआरआर के रूप में मेरा कार्यकाल शुरू होने से पहले ही हमनें पिछले साल इस परियोजना की योजना बनाई थी और हमनें 1,000 टीकों की लागत ₹20-25 लाख आंकी थी। सीरम इंस्टीट्यूट परियोजना के लिए टीके उपलब्ध कराएगा।

डीआरआर निखिल चिंदक स्कूल बैग भेंट करने के बाद स्कूली बच्चों के साथ।

सीएसआर साझेदार से मुलाकात उनकी मां ने करवाई थी जो कर्नाटक रोलबॉल एसोसिएशन की अध्यक्ष हैं। चिंडक एक चैंपियन स्केटर हैं, जिन्होंने हाल ही में गोवा में एशियाई चैम्पियनशिप ट्रॉफी सहित राष्ट्रीय स्तर के पुरस्कार जीते हैं। उनकी अगली योजना में शहर में रक्त बैंक स्थापित करने के लिए सीएसआर सहायता प्राप्त करना शामिल है। "इसमें कम से कम एक करोड़ रुपये का खर्च आएगा। हम एक साझेदार की तलाश की प्रक्रिया में हैं," वह कहते हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों में साक्षरता को बढ़ावा देने के लिए, डीआरआर ने मंडल रोटरेक्ट क्लबों को मवन क्लब, वन स्कूलफ परियोजना के तहत छात्रों को स्कूल बैग वितरित करने के लिए प्रोत्साहित किया है। प्रत्येक क्लब एक स्कूल के लिए बैग प्रायोजित करेगा। चिंडक ने व्यक्तिगत रूप से 10,000 बैग प्रायोजित किए हैं जिन्हें जोनल प्रतिनिधियों द्वारा विभिन्न स्कूलों में वितरित किया गया था। ■

Rotary PEOPLE OF ACTION

गाँव के खेतों से शहर की थाली तक

रशीदा भगत

महाराष्ट्र में पुणे क्षेत्र के ग्रामीण किसानों को शहरी उपभोक्ताओं से जोड़ने के एक सराहनीय प्रयास के अंतर्गत रो ई मंडल 3131 के 12 रोटरी क्लबों ने जिले की आर्थिक और सामुदायिक विकास टीम के साथ मिलकर भारतीय कृषि की गंभीर समस्याओं पर बात की। इसमें कृषि उपज की विपणन पद्धतियों में व्यापक अंतर शामिल है जिसके कारण किसान अपनी उपज के लिए बहुत कम कीमत प्राप्त करते है हालांकि उपभोक्ता बाजार से खरीदे गए कृषि उत्पादों के लिए उचित मूल्य का भुगतान करते है।

पुणे के कॉलेज ऑफ एग्रीकल्चर में मंडल के 12 रोटरी क्लबों द्वारा आयोजित एक दिवसीय कार्यक्रम में ग्रामीण किसान उत्पादक कंपनियों और शहरी खरीदारों को जोड़ा गया ताकि कृषि आय को समर्थन और बढ़ावा दिया जा सकें। बालासाहेब गिट्टे, काव्या धोबले और समीर डोम्बे जैसे क्षेत्र के प्रमुख ''कृषि उद्यमियों को आमंत्रित किया गया ताकि कृषि उद्यमी के रूप में उनकी यात्रा में आने वाली चुनौतियों के साथ-साथ उनके ज्ञान और अनुभव को साझा किया जा सकें। इस पहल को महाराष्ट्र कृषि विभाग का समर्थन प्राप्त था,'' मंडल की आर्थिक एवं सामुदायिक विकास टीम के सचिव प्रदीप खेडकर कहते हैं।

वह इस परियोजना में बहुत सक्रिय रूप से शामिल है क्योंकि उनकी पृष्ठभूमि कृषि (पशु आहार) से जुड़ी हुई है। ''मैं हमेशा से मानता आया हूँ कि ग्रामीण क्षेत्रों में अर्थव्यवस्था को विकसित करने के लिए बहुत अधिक प्रयास करने की आवश्यकता है, विशेष रूप से ग्रामीण किसानों की आय में सुधार लाने के लिए। रोटरी के माध्यम से हम कृषि उद्यमियों और ग्रामीण किसानों के बीच संबंध को बेहतर बनाने की कोशिश कर रहे हैं ताकि दोनों समूहों को इसका लाभ मिल सके,'' वह कहते है।

इस क्षेत्र में लगभग 15 से 20 कृषि उद्यमी कृषि के विभिन्न क्षेत्रों में कार्य कर रहे हैं। क्रेता-विक्रेता बैठक के दौरान उनमें से कुछ को किसान उत्पादक कंपनियों से जोड़ा गया, जो विभिन्न फसलों की खेती करने वाले किसानों के समूह है और अपने हितों की रक्षा करने के लिए एक साथ आए है। ये समूह

प्याज की वर्गीकृत और पैकिंग।

पुणे में एक कृषि उत्पादक-खरीदार मिलन।

पहले तीन वर्षों के लिए कुछ सरकारी सब्सिडी और विभिन्न करों में रियायत प्राप्त करने के लिए पात्र हैं। ''हम किसान उत्पादक कंपनियों को संभावित खरीदारों से जोड़ते हैं और इस तरह की किसान-अनुकूल पहल का सक्रिय रूप से समर्थन करने वाले महाराष्ट्र के कृषि विभाग की मदद से किसानों को घरेलू और वैश्विक अवसर प्रदान करते हैं,'' वह आगे कहते हैं।

खेडकर कहते हैं कि राज्य के कृषि विभाग और नाबार्ड दोनों ही रोटरी के साथ मिलकर किसानों की आजीविका और आय में सुधार लाने में गहरी रुचि दिखा रहे है, खेड़कर कहते है। इस एक दिवसीय कार्यक्रम में लगभग 250 लोगों ने भाग लिया और ''हमने किसानों के उत्पाद के लिए संभावित खरीदारों को आमंत्रित किया जिसमें मॉल, मार्ट, रेस्तरां और बड़ी कंपनियां शामिल थीं जो अपने खाद्य उत्पादों के लिए कृषि उपज का उपयोग करती हैं।''

इस विशाल कार्यक्रम में भाग लेने वाले कृषि विशेषज्ञों में एनजीओ बीएआईएफ डेवलपमेंट रिसर्च फाउंडेशन के संजय पाटिल शामिल थे, जो पशु प्रजनन और कृषि के अन्य क्षेत्रों में दूरदराज के ग्रामीण क्षेत्रों में काम करते है। ''उन्होंने पिछले 18 वर्षों से महाराष्ट्र, गुजरात और ओडिशा राज्यों में स्वदेशी फसलों, पोषण सुरक्षा के लिए जंगली खाद्य पौधों के संरक्षण और जलवायु परिवर्तन से जुड़े महत्वपूर्ण मुद्दों पर प्रमुख कार्य किए हैं और उन्हें जिला व्यावसायिक उत्कृष्टता पुरस्कार भी प्राप्त हुआ है,'' उन्होंने आगे कहा।

बीएआईएफ का अपना बीज उत्पादन है और यह स्वदेशी बीज संरक्षण में काम करता है। ''इस एनजीओ के साथ साझेदारी में हम रोटरी में विभिन्न स्वदेशी फसलों का एक बीज बैंक विकसित करने की योजना बना रहे हैं क्योंकि हमारा मानना हैं कि जहाँ मिश्रित फसलों का विस्तार हो रहा है वहीं हमें अपने किसानों को स्वदेशी फसलों को उगाने के लिए भी प्रोत्साहित करना चाहिए।''

काव्या धोबले एक नर्स से कृषि उद्यमी बनी हैं; उन्होंने मुंबई के एक अस्पताल में एक नर्स के रूप

में ₹75,000 के मासिक वेतन वाली एक सुरक्षित और अच्छी तनख्वाह वाली नौकरी छोड़कर महाराष्ट्र के जुन्नार में सतत कृषि को बढ़ावा देने का फैसला किया। वह अब वर्मीकम्पोस्ट बनाती हैं, रासायनिक मुक्त खेती के बारे में जागरूकता फैलाती हैं और 200 वर्मीकम्पोस्ट उद्यमियों को प्रशिक्षित कर चुकी हैं। बालासाहब गिट्टे सूखाग्रस्त मराठवाड़ा क्षेत्र में काम करते हैं जो सबसे ज्यादा किसानों की आत्महत्या के लिए बदनाम है। ''उन्होंने एक डेयरी संबंधित मॉडल विकसित किया है जिसमें किसानों से दूध एकत्रित किया जाता है, उसे दुग्ध उत्पादों में परिवर्तित किया जाता है और फिर एक किसान उत्पादक उद्यम के माध्यम से विपणन किया जाता है।''

समीर डोम्बे एक तकनीकी विशेषज्ञ हैं जिन्होंने अंजीर का अपना ब्रांड विकसित किया है, जिसे वह एक छोटे से गाँव के विभिन्न किसानों से एकत्रित करते हैं जो अंजीर की खेती करने में विशेष रूप से दक्ष है और उसे अपने ब्रांड के अंतर्गत बेचते हैं; उनके पास इस उत्पाद का पेटेंट है। इन सभी पहलों से उन किसानों की आय में सुधार होता है जो अपनी फसलों को उगाने के लिए इतनी मेहनत करते हैं।

इस कार्यक्रम की अवधारणा बनाने वाले खेडकर ने कहा कि यह दूसरा वर्ष है जब इस उपयोगी कार्यक्रम का आयोजन किया गया जिसमें किसानों को न केवल सीधे खरीदारों से जुड़ने का मौका मिला बल्कि उन्हें बेहतर कृषि प्रथाओं के माध्यम से अपनी उपज में सुधार लाने के लिए उपयोगी जानकारी भी दी गई। ''चूंकि यह हमारा दूसरा वर्ष है, हमारे पास पहले से ही व्हाट्सएप ग्रुप के माध्यम से जुड़े लगभग 200 लोगों का एक तंत्र है, जहाँ खरीदने और बेचने की गतिविधियां पहले ही शुरू हो चुकी हैं। लेकिन हम अपने संपर्क में सुधार करके और किसानों को निर्यात के अवसर प्रदान करके इसे कुछ कदम और आगे बढ़ाने की योजना बना रहे हैं।''

इसका उद्देश्य एक निर्यात कृषि केंद्र स्थापित करना है ''जहाँ हम लोगों को निर्यात करने और विदेशों में संभावित खरीदारों से उन्हें जोड़ने को लेकर मार्गदर्शन दे सकते हैं।'' यह पूछे जाने पर कि किन क्षेत्रों में विशेष अवसर उपलब्ध हैं, तो

एक कृषि उद्यमी अपने टमाटर के खेत में।

सब्जियों की वर्गीकृत जाँच।

खेडकर ने कहा कि अब यूरोपीय और खाड़ी देशों, विशेष रूप से दुबई और सऊदी अरब में मिलेट उत्पादों के लिए एक बड़ा अवसर है। यहाँ जालीदार बांस जैसे एक विशेष प्रकार के बांस का निर्यात करने का भी एक अच्छा अवसर है जिसका उपयोग कुछ क्षेत्रों, विशेष रूप से फर्नीचर बनाने में किया जाता है और एक उद्यम इसे पेटेंट कराने की प्रक्रिया में है।

उन्हें खुशी है कि इस बैठक में लगभग 250 लोगों ने भाग लिया, किसान भी ''महत्वपूर्ण व्यवसाय'' कर पाए और आगे बढ़ते हुए, ''खरीदारों और संभावित निर्यातकों के साथ इन किसानों के संपर्क को बेहतर बनाने के लिए रोटरी एक सुविधा केंद्र बनाने की पहल करेगा। हम नहीं चाहते कि यह एक बार की पहल बने बल्कि हम चाहते हैं कि यह एक सतत गतिविधि बनें जिसमें किसानों, ग्राहकों, कृषि उत्पाद निर्माताओं आदि का एक मजबूत डेटाबेस हो,'' खेडकर कहते हैं।

किसानों और कृषि उद्यमियों के अलावा इस कार्यक्रम में रो ई मंडल 3131 की डीजी शीतल शाह, रो ई मंडल 3132 की आईपीडीजी स्वाति हेरकल और डीजीई संतोष मराठे (3131) ने भाग लिया। भाग लेने वाले रोटरी क्लबों में रोटरी क्लब अलेफाटा सेंट्रल, जुन्नार, मंचर, राजगुरुनगर, चाकन, तालेगांव दाभाडे, निगडी, पिंपरी एलीट, पिंपल सौदागर सेंट्रल, पुणे कैंप, पुणे हेरिटेज और पुणे लोकमान्यनगर शामिल थे।

आखिरकार यह सब किसानों की आय में सुधार लाने के बारे में है और खेडकर कहते हैं, ''निश्चित रूप से हमारी पहल के माध्यम से किसानों की आय में सुधार हुआ है। हम उन्हें पारिश्रमिक, तकनीकी मार्गदर्शन और उर्वरकों का उपयोग करने के तरीके और उत्पादन की लागत को कम करने के लिए कुछ विशेष तकनीकी ज्ञान दे रहे हैं। ऊपर उल्लेखित विशेषज्ञों द्वारा आयोजित नियमित प्रशिक्षण सत्रों और सेमिनारों के माध्यम से उन्हें ज्ञान प्रदान किया जाता है।''

वर्तमान में यह पहल पुणे के आसपास के गांवों के किसानों तक ही सीमित है, लेकिन हम इस पहल को महाराष्ट्र के बाकी हिस्सों तक विस्तारित करने के लिए अन्य रोटेरियनों के साथ हाथ मिला रहे हैं, वह आगे कहते हैं।■

सुनामी की तबाही के दो दशक बाद...

के आर रविन्द्र

26 दिसंबर, 2024 को हिंद महासागर में आई विनाशकारी सुनामी की 20वीं वर्षगांठ थी; मैं उस दुर्भाग्यपूर्ण दिन की यादों में चला गया और यह भी याद किया कि कैसे रोटरी श्रीलंका, रो ई मंडल 3220 ने इस त्रासदी में सक्रिय रूप से मदद की। हम बस इसे भगवान की मर्जी मानकर चुपचाप नहीं बैठ गए और न ही प्रभावितों को प्रारंभिक सहायता देकर रुक गए। हमने रोटरी जगत में किसी एक देश द्वारा की गई सबसे बड़ी सेवा परियोजनाओं में से एक को पूरा करने के लिए और अधिक दृढ़ता से अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की। जब हम पीछे मुड़कर देखते हैं तो हमने अपने *रोटरी स्कूल रीअवेकन* प्रोजेक्ट के माध्यम से जो कुछ भी हासिल किया हैं उसके लिए हम गहरी भावना और कृतज्ञता से भर जाते हैं।

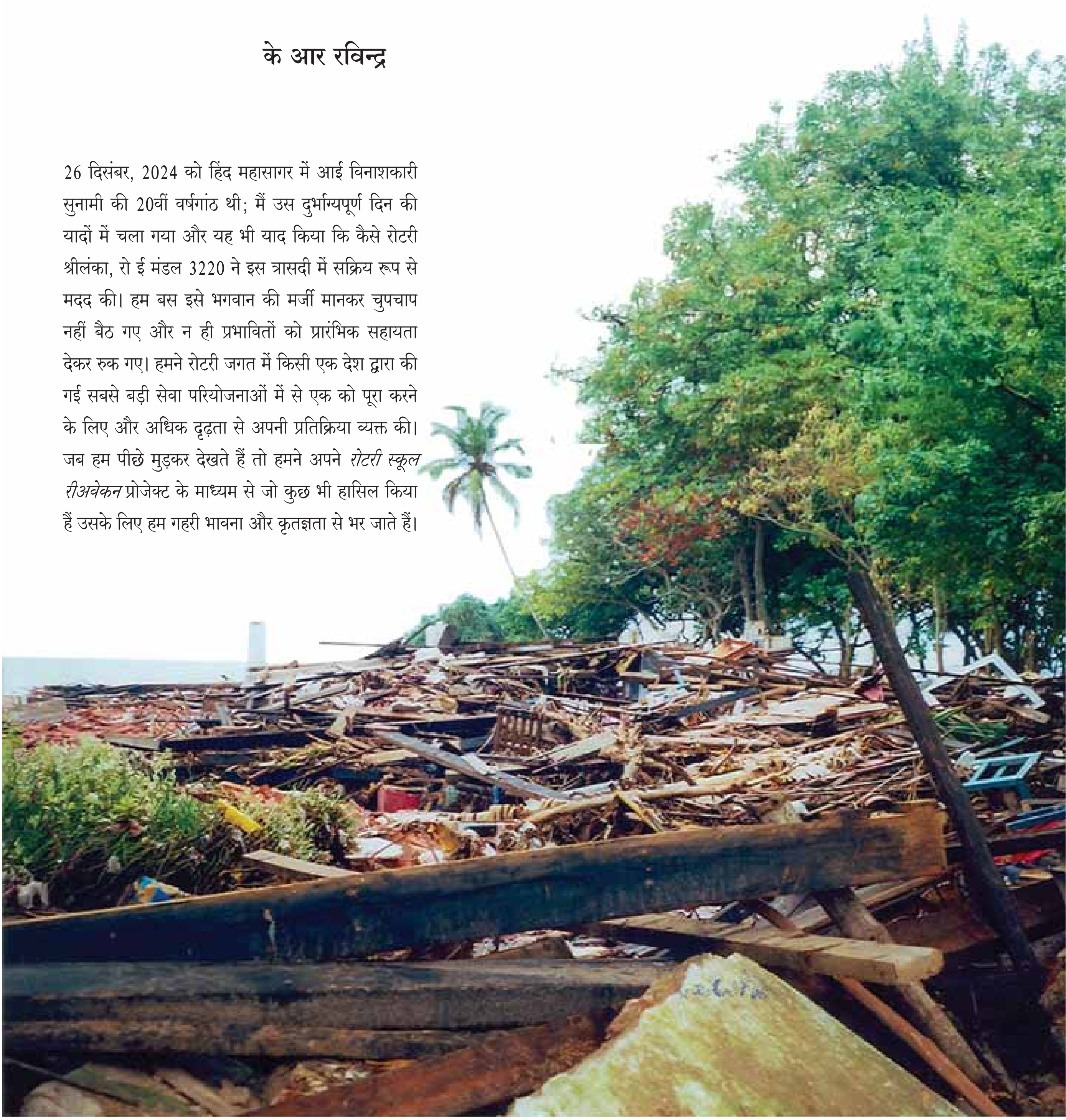

सुनामी से नष्ट दक्षिण प्रांत के रैंडॉम्बे में एक स्कूल।

इस आपदा ने हमारे देश में 35,000 से अधिक लोगों की जान ली, फिर भी इस अकल्पनीय नुकसान के बावजूद हमें आशा और नवीनीकरण की विरासत बनाने की ताकत मिली। रोटरी श्रीलंका ने साहस और संकल्प के साथ देश भर में 25 नए स्कूलों के निर्माण के इतने विशाल कार्य को करने पर अपनी सहमति व्यक्त की। यह कोई साधारण परियोजना नहीं थी और यह रोटरी के दृढ़ संकल्प, सहयोग और सेवा की भावना का एक प्रतीक बनने वाली थी। हम अनगिनत चुनौतियों का सामना करते हुए आगे बढ़े जिनमें भूमि आवंटन के मुद्दे, संघर्ष क्षेत्रों में सुरक्षा चिंताएं, विभिन्न पक्षों से हमारी नेतृत्व टीम को जान से मारने की धमकी मिलना और इस जिम्मेदारी की विशालता।

शुरुआत की ओर लौटते हुए मैं उस दिन को कभी नहीं भूलूंगा जब कृष राजेंद्रन, डयोन शूरमैन, थारिक थुल्बा और लकी पियरिस, सरकार द्वारा हमें स्कूलों के निर्माण में मदद करने के लिए दिए गए निमंत्रण पर चर्चा करने के लिए हमारी प्रारंभिक बैठक हेतु केलानिया में मेरे कार्यालय पर आए थे। जब हमने 25 स्कूल बनाने का फैसला किया तब हमारे पास न कोई प्रारूप था, न लागत का कोई अंदाज़ा था, न कोई जमीन नहीं थी और न ही पैसे थे।

प्रारंभिक चर्चाओं में आश्चर्यजनक रूप से 12 मिलियन डॉलर की निर्माण लागत का अनुमान लगाया गया था। हमें थोड़ा संकोच था कि हम इस जिम्मेदारी को पूरा कर पाएंगे या नहीं लेकिन हमें अपनी सोच से ज्यादा सफलता मिली। 21 स्थानों पर चौबीस स्कूलों का काम पूरा किया गया जिसमें आंशिक रूप से निर्मित एक स्कूल को एक अस्पताल के रूप में पुनर्निर्मित किया गया। ये स्कूल अवसर के प्रकाश स्तंभ बनकर खड़े है और हजारों बच्चों को एक उज्जवल भविष्य के वादे के साथ शिक्षित कर रहे है।

इस आपदा ने 35,000 से अधिक लोगों की जान ले ली। इस अकल्पनीय क्षति के बावजूद, श्रीलंका में रोटरी ने आशा और पुनर्जागरण की एक विरासत बनाने की ताकत पाई।

धर्माराम कनिष्ठ विद्यालय के बच्चे, जो लाभार्थी स्कूलों में से एक है।

हम उन क्लबों के प्रति अपना आभार व्यक्त करते हैं जिन्होंने उन स्कूलों की देखरेख की जिनके साथ उनकी साझेदारी थी और हम उनसे अपील करते हैं कि वे दोबारा उन स्कूलों में जाकर हर संभव तरीके से उनकी मदद करें।

उस समय हमारी उपलब्धि किसी वीरता से कम नहीं थी। सावधानीपूर्वक योजना, अभिनव समस्या समाधान और अथक प्रयासों के माध्यम से हमने स्कूलों और उम्मीदों का निर्माण किया। शिक्षा मंत्रालय ने अनुकरणीय रूप से हमारे काम की सराहना की और सेंट्रल बैंक के गवर्नर ने सुनामी से उभरने के प्रयासों के लिए हमारी परियोजना को सर्वोत्तम अभ्यास मॉडल के रूप में संदर्भित किया। हमारे स्कूलों में से एक, बट्टिकलोआ में उथयपुरम स्कूल को वास्तुकला में उत्कृष्टता के लिए प्रतिष्ठित जेफ्री बावा पुरस्कार भी प्राप्त हुआ। यह सम्मान हमारे काम की गुणवत्ता को उजागर करता है।

हमारे प्रयासों ने रोटरी श्रीलंका को वैश्विक मानचित्र पर मजबूती से स्थापित किया। इस परियोजना ने अपनी पारदर्शिता, व्यावसायिकता और प्रभाव के लिए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रशंसा प्राप्त की। रो ई अध्यक्षों, निदेशकों, महासचिव, टीआरएफ न्यासियों और वैश्विक प्रायोजकों सहित रोटरी नेताओं ने हमारे स्कूलों का दौरा किया और उनके उद्घाटन में भाग लिया।

उनकी सराहना प्रत्येक साझेदार - वास्तुकारों, इंजीनियरों, दानदाताओं, सरकारी अधिकारियों और सबसे बढ़कर रोटेरियनो - के असाधारण योगदान का प्रमाण है जिन्होंने इस सपने को वास्तविकता में बदलने में मदद की।

यह सिर्फ एक निर्माण परियोजना नहीं थी; यह एक आंदोलन था। हमने एक त्रासदी को समुदायों के उत्थान और जीवन परिवर्तक अवसर में बदल दिया। आज हमारे स्कूलों में 15,000 से अधिक बच्चे पढ़ते हैं जो उनकी मूल क्षमता से बहुत अधिक है। हमने खाली भूखंडों को जीवंत शिक्षण केंद्रों में बदलकर यह साबित किया कि दृढ़ संकल्प और एकता के साथ कुछ भी संभव है।

जब हम अपनी इस यात्रा पर विचार करते हैं और उस अडिग भावना का जश्न मनाते हैं जिसने इसे संभव बनाया तो हम अपने सहयोगियों और

समर्थकों को नहीं भूल सकते। हमारे प्रमुख साझेदारों, स्टैंडर्ड चार्टर्ड बैंक और इसके (तत्कालीन) सीईओ, विष्णु मोहन ने इस परियोजना के दौरान नकद और संसाधनों का योगदान दिया। उन्होंने पहले स्कूल के उद्घाटन में भाग लेने के लिए लंदन से उड़ान भरी, इसमें तत्कालीन राष्ट्रपति-निर्वाचित बिल बॉयड सहित रो ई नेतृत्व के कई सदस्य शामिल हुए। पीडीजी पुबुडु डी ज़ोयसा, जो तब एक नए रोटेरियन थे, ने निर्माण कार्य को संभाला और सुनिश्चित किया कि स्कूल आगंतुकों का स्वागत करने के लिए तैयार हो।

अनुमानित निर्माण लागत 12 मिलियन डॉलर थी, जो बहुत बड़ी राशि थी। हमें लगा कि हमने शायद बहुत बड़ी जिम्मेदारी ले ली है, लेकिन हमने ऐसी सफलता पाई जिसकी हमने कभी कल्पना नहीं की थी।

शिक्षा मंत्रालय, जिसके सदस्य हमारे बोर्ड में सेवा दे रहे थे, ने प्रत्येक स्कूल के लिए सभी सरकारी प्रक्रियाओं को पूरा करने में हर संभव सहयोग प्रदान किया। स्कूल वर्क्स के निदेशक, उनके कर्मचारियों और क्षेत्रीय निदेशकों ने प्रमुख चरणों में हमारा समर्थन और सहायता की।

रोटरी फाउंडेशन ने सीधे तौर पर 3 मिलियन डॉलर से अधिक का योगदान दिया उसी तरह कुछ विदेशी रोटरी क्लबों ने भी कुछ स्कूलों के निर्माण के लिए योगदान दिया।

माइक्रोसॉफ्ट श्रीलंका ने सभी स्कूलों के कंप्यूटर केंद्रों के लिए सॉफ्टवेयर प्रदान किया और सभी कर्मचारियों को बुनियादी प्रशिक्षण दिया। जहाँ अमेरिकन रेड क्रॉस ने सभी स्कूलों में नलसाजी, सीवरेज और सैनिटरी कार्यों में हमारी सहायता की वहीं रूम टू रीड यूएसए ने सभी स्कूलों में पूर्ण रूप से सुसज्जित पुस्तकालय प्रदान किए। श्रीलंका की एक प्रमुख कानूनी फर्म, एफ जे एंड जी डी सरम ने इस पूरी परियोजना में नि:शुल्क कानूनी और सचिवीय सेवाएं प्रदान की।

प्राइसवाटरहाउसकूपर्स और एचएलबी एडिसरिसिन्हे ने रियायती शर्तों पर इस ट्रस्ट कंपनी के नकदी प्रबंधन, लेखांकन और लेखा परीक्षण कार्यों को संभाला। हमारे सीईओ डायोन शूरमैन केंद्रीय स्तंभ थे जो स्वयं से ऊपर सेवा का प्रतीक बने और हमारी गति को बनाए रखने के लिए उन्होंने बाकी बोर्ड और टीम के साथ व्यक्तिगत और सामूहिक रूप से कई घंटों तक काम किया। एक साथ मिलकर हमने निराशा को आशा में और तबाही को अवसर में बदल दिया। हमने साबित किया कि सबसे बुरे समय में भी मानवता विपत्ति से ऊपर उठकर कुछ असाधारण कर सकती है। ये स्कूल सिर्फ इमारतों से बहुत अधिक हैं; वे धैर्य, सहानुभूति और उस स्थायी विश्वास का

थंपड्डाई स्कूल को रोटरी ने स्कूल्स रीअवेकन प्रोजेक्ट के तहत पुनर्निर्मित किया।

इन 25 स्कूलों की अहमियत सिर्फ इमारतों से अधिक है; ये धैर्य, करुणा और इस विश्वास के प्रतीक हैं कि हर बच्चे को सपने देखने और उन्हें पूरा करने का अधिकार है।

श्रीलंका के पूर्वी प्रांत के थंपट्टाई में एक सुनामी प्रभावित स्कूल।

प्रतीक हैं कि प्रत्येक बच्चे को सपने देखने और उन्हें पूरा करने का अवसर मिलना चाहिए।

हम रोटेरियनों को यह जानकर बहुत गर्व होता है कि प्रत्येक वर्ष इन स्कूलों के छात्र अब हमारे विश्वविद्यालयों से डॉक्टर, वकील, शिक्षक या इंजीनियर के रूप में उत्तीर्ण हो रहे हैं और अब वे समाज के नए नेता बन गए हैं।

इस 20वीं वर्षगांठ को याद करते हुए हम केवल उन ज़िंदगियों को ही याद न करें जिन्हें हमने खो दिया बल्कि उन ज़िंदगियों के बारे में भी सोचें जिन्हें हमने छुआ है, जिनके भविष्यों को आकार दिया है और जिनको नई उम्मीद प्रदान की है। हमारा सामूहिक प्रयास इस बात का प्रमाण है कि जब हम एक साझा उद्देश्य और सेवा के प्रति अटल प्रतिबद्धता के साथ एकजुट होते हैं तो हम क्या नहीं कर सकते।

इस वर्षगांठ को केवल एक विचारणीय क्षण नहीं बल्कि कार्यवाही की एक पुकार भी बनाएं – जो यह याद दिलाए कि रोटरी की भावना पहाड़ों को भी हिला सकती है, जीवन बदल सकती है और एक ऐसी विरासत छोड़ सकती है जो आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करती रहेगी।

इस अविश्वसनीय यात्रा का हिस्सा बनने के लिए धन्यवाद। साथ में हमने वास्तव में इतिहास रचा है। आइए हम बड़े सपने देखना जारी रखें, साहसिक कदम उठाते रहें और निस्वार्थ रूप से सेवा देते रहें, यह जानते हुए कि हमारे कार्य परिवर्तन की वो लहरें उत्पन्न कर सकते हैं जिनकी हमने कल्पना भी नहीं की होगी।

लेखक पूर्व रो ई अध्यक्ष हैं।

साड़ी की शाश्वत भव्यता का जश्न

जयश्री

साड़ी सिर्फ एक पोशाक से कई अधिक है; यह विरासत, परंपरा और व्यक्तिगत पहचान के साथ बुनी गई एक कथा है। अनेक संस्कृतियों और पीढ़ियों में, यह प्रतिष्ठित परिधान शिष्टता, चंचलता और लचीलेपन का प्रतीक बना है, जिससे यह महिलाओं के लिए पहचान का एक क़ीमती प्रतीक बन गया है।

भारतीय संस्कृति में गहराई से निहित, साड़ी देश भर में विभिन्न शैलियों में पहनी जाती है। नेपाली महिलाएं औपचारिक अवसरों के लिए साड़ी पसंद करती हैं, जबकि श्रीलंका की कंद्यान साड़ी को पहनने की अपनी अनूठी शैली है। यह परिधान पाकिस्तान के सिंध क्षेत्र, भारतीय मलेशियाई समुदाय और बांग्लादेश में एक स्थायी आकर्षण रखता है।

इस समृद्ध विरासत का सम्मान करने के लिए, विश्व साड़ी दिवस प्रतिवर्ष 21 दिसंबर को मनाया जाता है। इस दिन के महत्व में उन कारीगरों को सम्मानित करना शामिल है जिनका शिल्प कौशल परिधान में जान फूंकता है, जबकि हथकरघा बुनाई को भी बढ़ावा मिलता है। यह दिन विरासत, रचनात्मकता और परंपरा की एकीकृत भावना के लिए एक उपहार है।

रो ई मंडल 3234, चेन्नई, के रोटरी क्लबों ने इस दिन को 'एमरैप' नामक एक जीवंत कार्यक्रम के साथ मनाया, जिसकी अवधारणा डीजी एन एस सरवनन की पत्नी भारती और पीडीजी जे श्रीधर की पत्नी पुनीता ने की थी। भारती ने कहा, ''हम रोटरी एन्स और महिला रोटेरियनों को शामिल करने पर हो रही एक चर्चा के दौरान इस विचार के साथ आए।''

कार्यक्रम में, विनीता वेंकटेश ने साड़ियों के लिए अपने प्यार को साझा किया, यह बताते हुए कि कैसे उनकी ''मां और सास के संग्रह ने उन्हें छह गज के आश्चर्य को संजोने के लिए प्रेरित किया।''

कमला रामकृष्णन, पूर्व इंटरनेशनल इनर व्हील अध्यक्ष, ने दक्षिण भारत की समृद्ध हथकरघा विरासत का संक्षित विवरण प्रदान किया, जिसमें कांजीवरम, उप्पड़ा, पोचमपल्ली और धारवाड़ रेशम की जटिल सुंदरता की खोज की गई। लावण्या श्रीनिवास, एक कहानीकार और एनआईएफटी चेन्नई की सहयोगी, ने इंडिगो डाई की बढ़ती लोकप्रियता और मिलेनियल्स के बीच इसके बढ़ते आकर्षण पर प्रकाश डाला।

बाएँ से: भारती सरवणन, विनिता वेंकटेश और पुनिता श्रीधर।

इस कार्यक्रम का प्रमुख-आकर्षण 'विषयगत साड़ी फैशन वॉक' था, जिसमें 18 रोटरी क्लबों की महिलाओं की 18 टीमें थीं। प्रत्येक टीम ने भारत के राज्यों की विविध सांस्कृतिक विरासत को दर्शाने के लिए अपनी साड़ियों को स्टाइल किया। राजा रवि वर्मा की प्रतिष्ठित पेंटिंग्स का पुनरुत्पादन एक प्रमुख आकर्षण था। भारती ने कहा, ''पुराने और नए के इस मिश्रण ने महिलाओं को न केवल वर्मा की विरासत का सम्मान करने की अनुमति दी, बल्कि आधुनिक दर्शकों के लिए उनकी कला को फिर से परिभाषित किया।''

उत्सव में नवोदित होमप्रेन्योर द्वारा साड़ियों और आभूषणों का प्रदर्शन करने वाले स्टॉल शामिल थे, साथ ही इरोड के एक बुनकर कलैयारासी द्वारा हथकरघा बुनाई के अनुभव का लाइव प्रदर्शन किया गया था। कांचीपुरम की महिला बुनकरों को सम्मानित किया गया, और वंचित समुदायों का समर्थन करने वाले एक गैर सरकारी संगठन थुली को 100 साड़ियां दान की गईं।

छह गज के परिधान की भव्यता के साथ फिटनेस का सम्मिश्रण प्रस्तुत करते हुए एक साड़ी ज़ुम्बा सत्र में प्रतिनिधियों ने जोशपूर्ण संगीत पर नृत्य किया। ऊर्जा संक्रामक थी, जिससे सभी को साड़ी की स्थायी विरासत का जश्न मनाने के लिए प्रेरित किया गया। ■

लड़कियों की सशक्तिकरण परियोजना को लगे पंख

रशीदा भगत

पीडीजी वी आर मुत्तु, रो ई मंडल 3212 द्वारा विशेष रूप से भारत के छोटे शहरों और गांवों में लड़कियों को सशक्त बनाने वाले कार्यक्रम, यादुमानवल ने तेज़ी से सफलता प्राप्त की है और मुत्तु एवं उनके रोटरी क्लब विरुधुनगर और अंग्रेजी के एक सेवानिवृत्त प्रोफेसर एवं प्रेरक वक्ता जयंताश्री बालकृष्णन के नेतृत्व में उनकी *यादुमानवल* टीम की मदद से अन्य मंडलों में लागू किया जा रहा है।

मंडल 3231 के गवर्नर एम राजन बाबू के नेतृत्व में यह कार्यक्रम पांच कॉलेजों में आयोजित किया गया और इसने तमिलनाडु के वेल्लोर, तिरुवन्नामलाई, तिरुपत्तूर, कांचीपुरम और तिरुवल्लूर शहरों में निजी

और सरकारी कॉलेजों की लगभग 8,500 कॉलेज लड़कियों का ध्यान आकर्षित किया। इन सत्रों को पीडीजी मुत्तु के इधायम समूह द्वारा प्रायोजित किया गया।

महिला सशक्तिकरण के लिए मंडल अध्यक्ष सरिता मुरलीकृष्णन, जिन्होंने इस परियोजना की देखरेख की, बड़े ही उत्साह के साथ *रोटरी न्यूज़* को इस परियोजना में लड़कियों की रुचि के बारे में बताती हैं, अधिकांश लड़कियां ग्रामीण पृष्ठभूमि से हैं फिर भी उन्होंने इस परियोजना में जो रुचि दिखाई वो वाकई अविश्वसनीय है। डीजी बाबू के गृहनगर तिरुवन्नामलाई में आयोजित सत्र में लगभग 3,000 लड़कियों ने भाग लिया। चूंकि छत के सभागार के किनारे खुले थे इसलिए लड़कियां बरामदे में भी बहुत अधिक संख्या में एकत्रित हो गई और इस कार्यक्रम की एक झलक पाने और जो कहा जा रहा था उसे सुनने की कोशिश करने लगी।

''मेरे गृहनगर कांचीपुरम में हॉल की क्षमता केवल 1,500 थी लेकिन इस कार्यक्रम की इतनी मांग थी कि लड़कियों ने स्वेच्छा से कुर्सियों को हटाने के लिए कहा ताकि इससे 300 से अधिक लड़कियां समायोजित हो जाएंगी। हॉल खचाखच भरा हुआ था और बरामदे से और भी लड़कियां अंदर झांक रही थीं, बातें सुन रही थीं और उत्सुकतापूर्वक सवाल-जवाब सत्र का आनंद ले रही थीं,'' रोटरी क्लब कांची इन्फिनिटी की सदस्य सरिता कहती हैं।

उन्होंने कहा कि जगह की कमी के कारण केवल दूसरे और तीसरे वर्ष के विद्यार्थियों को आमंत्रित किया गया था और इस वजह से ''प्रथम वर्ष के विद्यार्थी बहुत नाराज़ थे और पूछने लगे कि हमें क्यों छोड़ दिया गया। इसलिए मैंने उनसे कहा कि अंदर जगह नहीं है और मैं इस पूरे सत्र को यूट्यूब पर अपलोड करूंगी और उनके वाइस प्रिंसिपल के साथ उस लिंक को साझा करूंगी।''

वह एक दिलचस्प बात बताती है कि इस ''कार्यक्रम के बाद यहाँ की प्रिंसिपल जो पहले

जयंथश्री बालाकृष्णन, एक शिक्षाविद् और प्रेरक वक्ता, यादुमनवल कार्यक्रम के तहत रो ई मंडल 3231 में छात्रों को संबोधित करते हुए।

ज्यादा रुचि नहीं ले रही थी, ने मेरा हाथ पकड़कर मुझे धन्यवाद दिया। और बाद में उन्होंने मुझे दो बार फोन किया और कहा कि यदि आप ऐसे और कार्यक्रम करें तो कृपया हमारे कॉलेज में आएं!''

जैसा कि तमिल शब्द *यादुमानवल* का अर्थ है (वह सब कुछ है), यह परियोजना महिला सशक्तिकरण और आत्मसम्मान के बारे में है और लड़कियों से बात करते हुए मुख्य वक्ता जयंताश्री ने शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में बात की जो उन्हें न केवल आत्म-सम्मान और आत्मविश्वास से भर देगी बल्कि एक सार्थक करियर भी प्रदान करेगी।

तिरुवन्नामलाई में कॉलेज की 3,000 से अधिक लड़कियों द्वारा भाग लिए गए एक सत्र में शामिल होने वाले डीजी राजन बाबू, वक्ताओं की बातों पर

डीजी एम राजनबाबू (बाएं से पांचवें) जयंथश्री के साथ एक कॉलेज में आयोजित कार्यक्रम में। पीडीजी ए संपत कुमार दाईं ओर दिखाई दे रहे हैं।

लड़कियों की प्रतिक्रिया देखकर चकित थे। इनमें से अधिकांश लड़कियां ग्रामीण पृष्ठभूमि से हैं। ''प्रश्नोत्तर सत्र को इतना दिलचस्प और जीवंत देखना वास्तव में आश्चर्यजनक था और लड़कियों ने भी बड़े उत्साह के साथ अपने डर को दूर करने और सामाजिक मान्यताओं और पाबंदियों का सामना करने के बारे में बहुत सारे सवाल पूछे। मैं उन्हें आकर्षण जैसी चीजों के बारे में साहसपूर्वक बोलते हुए देखकर प्रभावित हुआ जो आज के किशोरों के बीच एक आम समस्या हैं। हमने देखा कि यह कार्यक्रम उन सभी पांच केंद्रों पर सुपरहिट साबित हुआ जहाँ इसे आयोजित किया गया था। मैं इस कार्यक्रम को प्रायोजित करने के लिए पीडीजी मुत्तु और इदयम समूह का आभारी हूँ, उन्होंने कहा।

छोटे शहरों और ग्रामीण भारत की लड़कियों के मन में चल रहे मुद्दों के बारे में सरिता ने कहा कि उनमें से अधिकांश ने उन व्यावहारिक तरीकों से संबंधित प्रश्न पूछे जिससे वे अपने जीवन को बेहतर बना सकती हैं और अपने जीवन स्तर को सुधार सकती हैं। उनमें से अधिकांश को शिक्षा के महत्व सहित कई चीजों के बारे में पता नहीं था जैसे उनके आसपास की दुनिया में क्या चल रहा है। ''वे जानना चाहते थे कि उनकी प्राथमिकताएं क्या होनी चाहिए और बेहतर भविष्य के लिए उन्हें कौन सा क्षेत्र चुनना चाहिए। उन्होंने सैनिटरी नैपकिन का उपयोग करने की आवश्यकता सहित कई चीजों के बारे में पूछा और हमने उनकी बातचीत से जाना कि उनके पास सबसे आवश्यक सामान खरीदने के लिए भी पैसे नहीं हैं और यह सब जानकर अक्सर हमारी आँखें नम हो जाती है।''

वह आगे कहती हैं कि जयंताश्री और रोटरी क्लब विरुधुनगर से रोटेरियन डी विजयकुमारी, जो इस कार्यक्रम की समग्र प्रमुख हैं, इस बात से बहुत खुश थी कि लड़कियों ने इन सत्रों के दौरान दिए गए सुझावों को बड़ी गंभीरता से लिया। ''वे सवाल पूछने में हिचकी नहीं और यहाँ तक कि मुस्लिम लड़कियां जो आमतौर पर बहुत शर्मीली होती हैं, प्रश्नोत्तर सत्र के शुरू होते ही खुलकर सवाल पूछने लगी। एक बार जब प्रश्न आने शुरू हो गए तो हम बच्चों को रोक नहीं सकें। हमने प्रश्नों के लिए लगभग 20 मिनट का समय निर्धारित किया था लेकिन प्रश्न आते रहे और हमें 90 मिनट के सत्र को दो घंटे से भी अधिक समय तक बढ़ाना पड़ा। मंच से नीचे उतरने के बाद भी लड़कियों ने हम सभी से

संपर्क किया और अपनी चिंताओं और उनके लिए क्या महत्वपूर्ण है, के बारे में बात करती रहीं,'' सरिता ने कहा।

रो ई मंडल 3231 के इन पांच सत्रों से दो दिलचस्प बातें सामने आई माता-पिता के बारे में शिकायतें। उन्होंने कहा कि ''हमारे माता-पिता हर समय हमारे साथ लड़ते रहते हैं जिससे हमें घर में बहुत कम शांति मिलती है!''

दूसरी बात लड़कों के प्रति आकर्षण या विपरीत लिंग के साथ संभावित संबंध के बारे में निर्णय लेने से जुड़े संदेह से संबंधित है। ''वे थोड़ा घुमा-फिरा कर सवाल पूछ रही थी और इसे अप्रत्यक्ष रूप से व्यक्त कर रही थी। उदाहरण के लिए वे स्पष्ट रूप से यह नहीं पूछ रही थी कि जब मैं 'किसी' के प्रति आकर्षित होती हूँ तो मुझे क्या करना चाहिए; बल्कि उन्होंने ऐसे पूछा कि 'जब मैं किसी चीज के प्रति आकर्षित होती हूँ!' जैसा कि अपेक्षित था उनके प्रश्न अप्रत्यक्ष या छिपे हुए थे। उन्होंने पूछा कि अगर कोई हमें कुछ करने के लिए कहे तो हमें क्या करना चाहिए? लेकिन इसका मतलब साफ़ था और जयंताश्री ने उन्हें सलाह दी कि पहले वे खुद यह विश्लेषण करें कि वो जो कदम उठाने जा रही है वो उनके भविष्य के लिए सही है या नहीं।''

इसके बाद उस विश्लेषण को आगे बढ़ाने के लिए उन्हें एक ईमानदार, विश्वसनीय, समझदार और परिपक्व मित्र से बात करनी चाहिए, अगर उनकी कोई बड़ी बहन हो तो उनसे बात करें या फिर वो अपने माता-पिता से भी बात कर सकती है। ''हमेशा की तरह किशोरियों को कई तरह की भावनात्मक समस्याओं का सामना करना पड़ता है और अन्य मामलों की तरह ही इन मामलों में भी लड़कियों के गुमराह होने, अपनी पढ़ाई छोड़ने, घर छोड़कर भागने और इतनी कम उम्र में गर्भवती होने की संभावना रहती है। इन सत्रों के दौरान इन लड़कियों को समझाया गया कि उन्हें अपनी शिक्षा पूरी करने के महत्व को समझना बहुत जरूरी है ताकि वो अपने भविष्य को सुरक्षित कर सकें।''

इस पूरी पहल को सारांशित करते हुए सरिता कहती हैं कि इस कार्यक्रम के संचालन के लिए उचित संस्थानों और स्थलों का चयन करने में कड़ी मेहनत की गई। ''चार मंडलों में आयोजित इन सत्रों की मांग इतनी थी कि विजयकुमारी हमें केवल पांच सत्र ही दे सकीं हालांकि हम कम से कम दो और सत्र आयोजित करना चाहते थे क्योंकि हमें एहसास है कि इस तरह के सत्रों को अकादमिक पाठ्यक्रमों के साथ-साथ चलना चाहिए।''

कुल मिलाकर बच्चों ने अपने भविष्य के लक्ष्यों, स्वतंत्रता, विकास, सफलता, अवसाद, आंतरिक संघर्ष, आत्म विश्वास की कमी से निपटने और अपनी पूर्ण क्षमता को हासिल करने से संबंधित प्रश्न पूछे। ''हम संवादात्मक सत्रों के दौरान कुछ लड़कियों को फुट-फूटकर रोते देखकर हिल गए इससे यह साबित हुआ कि उन्होंने वक्ता के सामने अपना दिल खोलकर रख दिया,'' सरिता कहती है।

उन्हें खुशी है कि इस परियोजना के माध्यम से मंडल की टीम लड़कियों को सशक्त बनाने में इतना सफल हो पाई कि वे खड़े होकर सवाल पूछ सकें, अपनी शंकाओं को दूर कर सकें और महिला सशक्तिकरण पर एक विशेषज्ञ से सलाह ले सकें। ''आखिरकार, जब हम एक लड़की को सशक्त बनाते हैं तो हम उसके पूरे परिवार और अपने राष्ट्र को भी सशक्त बना रहे होते हैं,'' वह आगे कहती है। ■

इंटरेक्टरों द्वारा पर्यावरण के अनुकूल परियोजनाएं

टीम रोटरी न्यूज़

गरीब बच्चों की शिक्षा और पर्यावरण की रक्षा के लिए स्थायी कार्रवाई को बढ़ावा देने की एक पहल के रूप में, सेंट जॉन्स स्कूल, रो ई मंडल 3055, के इंटरेक्टर सभी कक्षाओं के छात्रों की पुरानी नोटबुक से अप्रयुक्त पन्नों को इकट्ठा करते हैं, उन्हें छांटते हैं और उन्हें अपसाइकल नोटबुक बनाने के लिए बाइंडिंग करवाने भेजते हैं। इंटरेक्ट क्लब को प्रायोजित करने वाले रोटरी क्लब आबू रोड की सदस्य स्कूल प्रिंसिपल उमा श्याम ने कहा, ''हर साल, यह परियोजना 800-1,000 पुनर्निर्मित नोटबुक बनाती है, जो बाद में स्कूल में आने वाले वंचित बच्चों को उपहार में दी जाती है।''

इंटरेक्ट क्लब झुग्गियों और कम विशेषाधिकार प्राप्त कॉलोनियों में बच्चों को नवीनीकृत खिलौने और बैग भी वितरित करता है। हाल ही में पेपर बैग बनाने वाली एक 24-घंटे की मैराथन आयोजित की गई थी। इंटरेक्टरों ने गोंद के रूप में गेहूं के आटे के पेस्ट का उपयोग करके पुराने अखबारों को पर्यावरण के अनुकूल पेपर बैग में परिवर्तित किया, और इन बैग्स पर रोटरी के ध्यानाकर्षण क्षेत्रों के संदेश एवं रो ई और इंटरेक्ट के लोगो भी छापे गए थे। उन्होंने झुग्गी और आदिवासी क्षेत्रों में बच्चों को नीम की टहनियां वितरित कीं, जबकि उन्हें कुछ मजेदार गीतों के माध्यम से मौखिक स्वास्थ्य एवं स्वच्छता के बारे में जागरूक किया। उमा ने कहा, ''इस प्रायोगिक दंत पहल ने न केवल बच्चों को पारंपरिक और टिकाऊ मौखिक देखभाल विधियों से परिचित कराया, बल्कि आजीवन अपनाने योग्य स्वस्थ आदतों को भी प्रोत्साहित किया।''

अप्रयुक्त लकड़ी के डेस्क उन स्कूलों को दान किये गए जिनमें बुनियादी सुविधाओं की कमी थी। युवा सदस्यों ने ऊनी स्वेटर, प्लेट, गिलास, डिब्बे, चिकित्सा किट, खेल उपकरण, स्कूल बैग और स्टेशनरी सामग्री वितरित की, जो सभी वंचित परिवारों के बच्चों द्वारा खुशी से प्राप्त की गई थी।

उषा ने बताया कि इस बातचीत ने सेंट जॉन के छात्रों के बीच सहानुभूति और करुणा की भावना को बढ़ावा दिया। स्कूली बच्चों के लिए परियोजनाओं की इस श्रृंखला के साथ, ''हमारे छात्र कचरे को कम करने, शिक्षा को बढ़ावा देने और समाज को वापस देने के मूल्य सीख रहे हैं, और इस प्रकार उनके आसपास की दुनिया में बदलाव ला रहे हैं,'' रोटेरियन के ए श्याम कुमार ने कहा। इंटरेक्टरों के इस प्रयास में रोटेरियन उमा श्याम, श्याम कुमार और मार्गदर्शक डॉ विनोद मेहता ने सहयोग दिया। ■

स्कूल को नवीनीकृत बेंच और डेस्क प्रदान किए गए।

इंटरेक्ट द्वारा दिए गए पुनः उपयोग किए गए नोटबुक के साथ छात्र।

आपके गवर्नर्स से मिलिए

वी मुत्तुकुमारन

दिनेश मेहता

स्टील निर्माता

रोटरी क्लब ठाणे लेक सिटी

रो ई मंडल 3142

ठाणे में रोटरी फैकल्टी सेंटर

रेमंड लाइफस्टाइल से प्राप्त ₹75-80 लाख के सीएसआर अनुदान की मदद से ठाणे में एक रोटरी नॉलेज एन्हांसमेंट एंड फैकल्टी सेंटर बनाया जाएगा। ''4,000 वर्ग फुट के इस सुविधा केंद्र में 200 सीटों वाला सभागार, बोर्डरूम और कौशल केंद्र शामिल होगा। यह जमीन ठाणे नगरपालिका द्वारा पट्टे पर दी गई है और तीन क्लब मिलकर इस इमारत का निर्माण करेंगे,'' दिनेश मेहता कहते हैं। 115 क्लबों और 4,100 रोटेरियनों के साथ उनका लक्ष्य 10 प्रतिशत शुद्ध सदस्यता वृद्धि का है।

500 नियोजित बाल हृदय चिकित्सा सर्जरी में से 150 पूरी हो चुकी हैं, जो सीएसआर (100,000 डॉलर) और दो वैश्विक अनुदानों (140,000 डॉलर) द्वारा वित्त पोषित हैं। क्लबों ने रोटरी क्लब बैंगलोर वेस्ट के साथ साझेदारी करते हुए आठ नगरपालिका स्कूलों (गोल्डमैन सैच्स सीएसआर: ₹1.6 करोड़) को 200 कंप्यूटर दान किए।

नवी मुंबई के क्लब, टाटा मेमोरियल अस्पताल के 450 से अधिक रोगियों एवं परिचारकों के लिए रात्रिभोज प्रायोजित करता है। *प्रोजेक्ट अन्नपूर्णा* ने इस वर्ष 50,000 जरूरतमंद लोगों को लाभान्वित किया है। टीआरएफ के लिए मेहता का लक्ष्य 2 मिलियन डॉलर एकत्रित करने का है। वह 2001 से एक रोटेरियन है और अपने समय, प्रयास और योगदान के माध्यम से समाज को लौटाने में खुशी महसूस करते है।

राजपाल सिंह

मशीनरी आपूर्ति

रोटरी क्लब सहारनपुर

रो ई मंडल 3080

चिकित्सा परियोजनाएं पूरे जोरों पर

रो ई मंडल 3080 विभिन्न चिकित्सा परियोजनाएं आयोजित कर रहा है, जिसमें 200 से अधिक दिव्यांगों को कृत्रिम अंग वितरित करना (वैश्विक अनुदान: ₹30 लाख) और तेरा ही तेरा मिशन अस्पताल द्वारा समर्थित मैमोग्राफी वैन का उपयोग करके स्तन और सर्विकल कैंसर के लिए 500 महिलाओं की जांच करना शामिल है।

1,000 स्कूली छात्राओं को एचपीवी टीके लगाए गए (वैश्विक अनुदान: ₹25 लाख), 500 और अधिक छात्राओं को टीके लगाने की योजना है। स्माइल एनजीओ और देहरादून के एक अस्पताल के माध्यम से 100 बच्चों के लक्ष्य के साथ 40 बच्चों की कटे होंठ और तालू की सर्जरी पूर्ण की गई।

15 के लक्ष्य के मुकाबले चार बाल हृदय चिकित्सा सर्जरियाँ (वैश्विक अनुदान: ₹40 लाख) पूरी की गई। जेक्वार और कजारिया के सीएसआर समर्थन से 170 सरकारी बालिका विद्यालयों में गुलाबी शौचालय खंड बनाए गए। मंडल ने 200 नए रोटेरियनों को शामिल किया है जिसमें 150 और शामिल करने की योजना है, जिसका लक्ष्य 4,520 सदस्य है। तीन नए क्लब, जिनमें से दो पहले ही गठित किए जा चुके है, इससे कुल क्लबों की संख्या 116 हो जाएगी। टीआरएफ का लक्ष्य: 500,000 डॉलर का है। राजपाल सिंह 1991 से एक रोटेरियन हैं और रोटरी की उदारता एवं नेटवर्किंग से प्रेरित हैं।

मीरांखान सलीम

जौहरी

रोटरी क्लब नागरकोइल टाउन

रो ई मंडल 3212

सरकारी स्कूलों में शौचालय खंड

मीरांखान सलीम बड़े पद के लिए काम करने के बजाय वंचितों की मौन सेवा को प्राथमिकता देते हैं। 4,750 रोटेरियनों के साथ 120 क्लबों का नेतृत्व करते हुए उनका लक्ष्य 10 प्रतिशत शुद्ध सदस्यता वृद्धि का है और उनकी छह नए क्लबों के गठन की योजना है, जिसमें से चार पहले ही गठित किए जा चुके हैं।

सरकारी स्कूलों में तेरह शौचालय खंड बनाए जा रहे हैं (सीएसआर: ₹60 लाख); चार अस्पतालों को 17 डायलिसिस मशीनें वितरित की जा रही हैं (वैश्विक अनुदान: ₹1.5 करोड़); और जर्मनी से आयातित 500 रोबोटिक अंगों को विकलांगों में फिट किया गया (मंडल अनुदान: ₹2.5 करोड़)। पर्यावरणीय पहलों में दो लाख से अधिक पौधे लगाना और जरूरतमंदों को 25 इलेक्ट्रिक ऑटो प्रदान करना शामिल है (वैश्विक अनुदान: ₹1 करोड़)। सलीम ने 1.2 मिलियन डॉलर के अपने टीआरएफ लक्ष्य का आधा हिस्सा प्राप्त कर लिया है।

सलीम 2006 से एक रोटेरियन है जो फेलोशिप के लिए रोटरी में शामिल हुए थे मगर इसकी सेवा से प्रभावित होकर जुड़े रहे। "भगवान ने चाहा तो" जब तक वह स्वस्थ रहेंगे मानवता की सेवा करते रहेंगे।

एम वेंकटेश्वर राव

बाल रोग विशेषज्ञ

रोटरी क्लब विज़यनगरम

रो ई मंडल 3020

आंध्र में मानव दूध बैंक

मंडल के 82 क्लबों को बनाए रखना वेंकटेश्वर राव के लिए एक चुनौती है क्योंकि दो क्लबों को उनकी कम सदस्यता की वजह से समाप्त कर दिया गया था। 250 नए रोटेरियनों को शामिल करने के बावजूद सदस्यता में गिरावट की वजह से शुद्ध वृद्धि केवल 100 तक सीमित है और उनका लक्ष्य 30 जून तक 5,000 सदस्यों को शामिल करना है।

5,000 लड़कियों (9-14 वर्ष) को 380,000 डॉलर की वैश्विक अनुदान परियोजना के अंतर्गत एचपीवी टीकाकरण दिया जा रहा है। रोटरी क्लब अनकापल्ले मर्चेंट एसोसिएशन आई हॉस्पिटल के साथ मोतियाबिंद की 1,000 नि:शुल्क सर्जरियाँ (वैश्विक अनुदान: 30,000 डॉलर) आयोजित कर रहा है। क्लबों ने 100 से अधिक स्वास्थ्य शिविर पूरे किए हैं और इस वर्ष 200 और अधिक एनसीडी शिविर आयोजित करने की योजना हैं।

विजाग, राजमुंदरी और काकीनाडा में तीन मानव दूध बैंक स्थापित किए जाएंगे। राव और उनकी पत्नी डॉ. पद्मकुमारी का लक्ष्य तीन साल में एकेएस सदस्य बनने का है। उनका टीआरएफ लक्ष्य 750,000 डॉलर का है। अपने डॉक्टर मित्र मटुरु सतीश से प्रेरित होकर राव अपने चैरिटी कार्य का विस्तार करने के लिए वर्ष 2000 में रोटरी में शामिल हुए।

एन कृष्णमूर्ति द्वारा रूपरेखा

परिवर्तन की शक्ति

रोटरी तमिलनाडु के सरकारी स्कूलों का उन्नयन करेगी

तमिलनाडु के स्कूल शिक्षा विभाग और भारतीय उद्योग परिसंघ द्वारा त्रिची में आयोजित 'नम्मा स्कूल नम्मा ऊरुपल्ली' (एनएसएनओपी) सम्मेलन में आरआईडीई एम मुरुगानंदम ने स्कूली शिक्षा मंत्री अन्बिल महेश पोय्यामोळि को सहमति पत्र दिया, जिसमें तमिलनाडु भर में सरकारी स्कूलों को बेहतर बनाने के लिए रोटरी की सीएसआर सहायता के साथ भागीदारी का आश्वासन दिया गया। एनएसएनओपी तमिलनाडु सरकार की एक प्रमुख परियोजना है जिसका उद्देश्य जिलों में निगम/नगरपालिका स्कूलों में बुनियादी ढांचे को बेहतर बनाना है। ■

आरआईडीई एम मुरुगानंदम ने राज्य मंत्री अन्बिल पोय्यामोळि को रोटरी की सहमति पत्र सौंपा। चित्र में पीडीजी आई एस ए के नाजर और टीवीएस मोटर कंपनी के चेयरमैन वेणु श्रीनिवासन भी दिखाई दे रहे हैं।

कोडई में नई पीढ़ी के कार्यक्रम

24 स्कूलों के लगभग 1,250 छात्रों ने रोटरी क्लब कोडइकनल, रो ई मंडल 3000, के *प्रोजेक्ट न्यू जेनरेशन* के तहत अपने पाठ्येतर कौशलों का प्रदर्शन किया। आरआईडीई एम मुरुगानंदम और डीजी राजा गोविंदसामी ने अपने भाषणों से छात्रों को प्रेरित किया। प्रतियोगियों ने कला, संस्कृति एवं सार्वजनिक रूप से बोलने और नेतृत्व कौशलों को कवर करने वाले विभिन्न क्षेत्रों में लगभग 400 पुरस्कार जीतने के लिए कड़ी मेहनत की। इस बहुआयामी आयोजन के पीछे परियोजना निदेशक जया प्रसाद का हाथ था। ■

आरआईडीई एम मुरुगानंदम, डीजी राजा गोविंदसामी और रोटरी क्लब कोडईकनाल के अध्यक्ष राजकुमार कार्यक्रम में छात्रों के साथ।

मुरादाबाद में विशाल नेत्र शिविर

रोटरी क्लब मुरादाबाद ईस्ट, रो ई मंडल 3100, द्वारा आयोजित मेगा नेत्र जांच शिविर में 900 से अधिक रोगियों की जांच की गई। मोतियाबिंद के ऑपरेशन के लिए 50 लोगों की पहचान की गई। दवाएं और चश्मे वितरित किए गए। क्लब ने समय से पहले जन्मे बच्चों में अंधेपन को रोकने के लिए लेजर सर्जिकल मशीनों (वैश्विक अनुदान: 72,000 डॉलर) से लैस अपना चलित नेत्र क्लिनिक की शुरुआत की। डीजीई नितिन अग्रवाल ने नेत्र शिविर का उद्घाटन किया, जिसका दौरा मुरादाबाद के आयुक्त आंजनेय कुमार सिंह और मेयर विनोद अग्रवाल ने किया। ■

एक आंखों की जांच शिविर।

सड़क विक्रेताओं के लिए विशाल छतरियां

रो ई मंडल 3131 के *प्रोजेक्ट छत्रछाया* के तहत महाराष्ट्र के पुणे और रायगढ़ जिलों में 2,400 से अधिक स्ट्रीट वेंडर्स को बड़े छाते दिए गए। इस पहल में 105 रोटरी क्लबों की भागीदारी थी और इसका नेतृत्व रोटरी क्लब बिबवेवाड़ी पुणे और पुणे ईस्ट ने किया था। इस परियोजना को क्विक हील टेक्नोलॉजीज द्वारा वित्त पोषित किया गया था। ■

डीजी शीतल शाह और उनकी पत्नी रागिनी एक फल विक्रेता के साथ।

रोटरी क्लब चेन्नई आइकन्स ने 225 चार्टर सदस्यों के साथ बनाया विश्व रिकॉर्ड

जयश्री

1 जनवरी, 2025 को, रो ई मंडल 3233, ने रोटरी कल्ब चेन्नई आइकॉन के गठन के साथ एक उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की, जिसमें 225 चार्टर सदस्यों को शामिल किया गया और एक नया विश्व कीर्तिमान स्थापित किया गया। पिछला रो ई रिकॉर्ड 221 चार्टर सदस्यों का था, जबकि भारत में, बेंगलुरु में एक रोटरी क्लब ने 151 सदस्यों के साथ रिकॉर्ड बनाया था। क्लब के मार्गदर्शक महावीर कर्णावत ने कहा, ''225 सदस्यों के साथ रोटरी क्लब चेन्नई आइकन्स ने सभी रिकॉर्ड तोड़ दिए हैं।'' महावीर जैन को क्लब का अध्यक्ष और पुनीत कोचर को सचिव बनाया गया है।

क्लब के स्थापना कार्यक्रम में आरआईडीई के पी नागेश ने नए शामिल सदस्यों से रोटरी को तहे दिल से अपनाने का आग्रह किया। ''धैर्य रखें और कम से कम तीन साल तक रोटरी के साथ रहें। इसकी विशालता और संयोजकता धीरे-धीरे आपको पसंद आएगी, और आप रोटरी से प्यार करेंगे,'' उन्होंने कहा, और सदस्यों को क्लब की गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रोत्साहित किया। उन्होंने नए अध्यक्ष से प्रत्येक सदस्य के हितों की पहचान करने, उनकी भागीदारी सुनिश्चित करने का आग्रह किया।

उन्होंने बताया कि कैसे रोटरी अपने सदस्यों को अत्यधिक लाभ पहुंचा सकती है। ''सम्मेलन आपको वैश्विक नागरिकों से जुड़ने का अवसर देते हैं। आपको उनकी संस्कृति के बारे में जानने और अपनी संस्कृति साझा करने का मौका मिलता है। रोटरी आपको सामूहिक रूप से प्रभावशाली सेवा परियोजनाएं करने, जीवन को बदलने और इस प्रक्रिया में, आपको एक बेहतर इंसान बनने की अनुमति देती है। यह आपको नेतृत्व और नेटवर्किंग कौशलों के साथ सशक्त बनाती है।''

2025 में अपने और आईआईडीई एम मुरुगानंदम के कार्यकाल को देखते हुए, नागेश ने अपने महत्वाकांक्षी लक्ष्यों को रेखांकित किया। ''हम 1,000 AKS सदस्यों और 100 'मिलियन-डॉलर के दानकर्ताओं' को शामिल करना चाहते हैं। वर्तमान में भारत में सात 'मिलियन-डॉलर के दानकर्ता' हैं, जिनमें 30 अन्य की पहचान की गई है। आइए हम आपके समर्थन से 70 अन्य का लक्ष्य रखें।'' उन्होंने प्रत्येक चार्टर सदस्य से टीआरएफ में 1,000 डॉलर का योगदान करने का आग्रह करते हुए कहा, ''यह आपके क्लब को 'अपने चार्टर वर्ष में सबसे बड़ा

डीजी महावीर बोथरा ने ग्रीन रोटेरियन कॉन्क्लेव में आरआईडीई एम मुरुगनंदम को एक स्मृति चिह्न भेंट किया। (बाएँ से): पीडीजी एन नंदकुमार, आई एस ए के नज़र, आर श्रीनिवासन, कार्यक्रम अध्यक्ष टी डी प्रशांत, बाबू पेरम और डीजीई डी देवेंद्रन भी चित्र में शामिल हैं।

जयश्री

आरआईडीई के पी नागेश ने चार्टर अध्यक्ष महावीर जैन को कॉलर पहनाया। (बाएँ से): पीडीजी नज़र, डीजी बोथरा, रोटरी क्लब चेन्नई आइकन्स के सचिव पुनीत कोचर, पीडीजी आर श्रीनिवासन, राजा श्रीनिवासन, क्लब मेंटर महावीर कर्णावत, पीडीजी जी चंद्रमोहन और बाबू पेरम भी चित्र में शामिल हैं।

पीएचएफ क्लब' बना देगा – जो एक गर्व करने योग्य रिकॉर्ड होगा! ''

यह देखते हुए कि कई सदस्य सोने और हीरा व्यापारी हैं, नागेश ने उनके सीएसआर कोषों को टीआरएफ में लगाने का सुझाव दिया, यह वादा करते हुए कि उनके योगदान दुनिया भर में एक परिवर्तनकारी प्रभाव पैदा करेगा।

मंडल के नए क्लब सलाहकार पीडीजी आई एस ए के नाज़र ने तीनों महावीरों – डीजी महावीर

बोथरा, महावीर कर्णावत और चार्टर अध्यक्ष महावीर जैन को बधाई देते हुए कहा, ''चुनौतियां होंगी लेकिन एकजुट रहें और क्लब के कामकाज को हर तरह की स्थिति में बनाए रखें। 35 से अधिक वर्षों के अनुभव के साथ मैंने सिस्टम-संचालित और लोगों द्वारा संचालित क्लब देखे हैं। एक सिस्टम-संचालित क्लब के लिए नींव मजबूत होगी और वह सभी तूफानों में डटकर खड़ा रहेगा।''

उन्होंने रोटरी कल्ब विजयवाड़ा मिडटाउन को इसके 804 सदस्यों के साथ, और रोटरी कल्ब करूर को अपने 480 रोटेरियनों के साथ, सक्रिय जुड़ाव और एकता के आदर्शों के रूप में चिन्हित किया। उन्होंने रोटरी कल्ब वापी को 220 सदस्यों के साथ ''एक छोटे शहर के क्लब के रूप में भी संदर्भित किया। इतनों वर्षों में इसने एक उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, तीन पॉलिटेक्निक कॉलेज, चार इंजीनियरिंग कॉलेज और एक नर्सिंग कॉलेज की स्थापना की है। इसके सदस्यों के बीच जीवन शक्ति और एकता की कल्पना करें। आज से तीन साल बाद भी, हमें आपके क्लब पर गर्व महसूस होना चाहिए। अहंकार या मनमुटाव को आड़े न आने दें; हमेशा एक जैसा उत्साह और सौहार्द बनाए रखें। रोटरी को अधिक ऊंचाइयों तक ले जाने के अवसरों की तलाश करें।''

डीजी बोथरा ने नए क्लब के गठन पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा, ''मेरा दृष्टिकोण मंडल को मजबूत बनाने और हमारी सदस्यता को बढ़ाने का था। नेतृत्व के लिए दृष्टिकोण की स्पष्टता और रोल मॉडल होने की आवश्यकता होती है।''

रो ई मंडल 3233 के पूर्व और नवनिर्वाचित गवर्नर्स ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।

ग्रीन रोटेरियन संगोष्ठी

दिसंबर 2024 में, बोथरा ने जुलाई के बाद से शामिल 700 नए रोटेरियनों के लिए एक विशेष सम्मेलन का आयोजन किया। पीडीजी आर श्रीनिवासन, रोटेरियन टीडी प्रशांत और वी एस शशिकुमार के साथ, सदस्यों को प्रेरित करने, उन्हें रोके रखने और उन्हें जुनूनी रोटरी राजदूतों में बदलने के लिए सत्र तैयार किए।

आरआईडीई एम मुरुगानंदम ने रोटरी के वैश्विक प्रभाव पर प्रकाश डाला, जो दोस्ती, सेवा और शांति को बढ़ावा देती है। डीजीई डी देवेंद्रन और डीजीएन श्रीराम दुवुरी ने रोटरी के मूल सिद्धांतों पर एक गहन शिक्षण सत्र देने के लिए मोबाइल तकनीक का इस्तेमाल किया।

पीडीजी एन नंदकुमार ने टीम अपोलो के साथ 'स्कैन योर हेल्थ' सेगमेंट का संचालन किया, जिसमें स्वास्थ्य पर बातचीत की गई। पीडीजी नज़र ने पोलियो उन्मूलन में रोटरी की महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में बात की, और पूर्व डीआरएफसी अंबालावनन ने टीआरएफ की पहलों और सीएसआर अनुदानों पर प्रकाश डाला। ■

रोटरी आइकन की प्रेरक यात्रा

अतुल भिड़े

24 जुलाई, 1991 को डॉ मनमोहन सिंह भारतीय अर्थव्यवस्था को उदार बनाकर भारत को वैश्विक मंच पर लाए। उससे ठीक तीन हफ्ते पहले 1 जुलाई को एक और भारतीय ने अंतर्राष्ट्रीय मंच पर अपनी छाप छोड़ी। रोटरी क्लब चंडीगढ़ के सदस्य राजेंद्र कुमार साबू रोटरी इंटरनेशनल के अध्यक्ष बने जो एक ऐसा संगठन है जिसकी उपस्थिति संयुक्त राष्ट्र के सदस्य देशों की तुलना में बहुत अधिक देशों में है।

रोटरी में शायद ऐसे सैकड़ों सदस्य होंगे जो अपने पेशे में बहुत सफल होंगे, उनके पास धन की कोई कमी नहीं होगी या सामुदायिक सेवा के लिए उनका ट्रैक रिकॉर्ड बेहतर होगा लेकिन राजेंद्र साबू उन सभी में विशेष रूप से बहुत अलग है क्योंकि उन्होंने पृथ्वी पर अपने अस्तित्व के नौ दशकों में जो हासिल किया है वो वाकई अद्वितीय है।

माय लाइफ्स जर्नी, ए पर्सनल मेमॉयर मारवाड़ी साबू की एक आकर्षक आत्मकथा है जिनका जन्म 1934 में हुगली नदी के तट पर बिरलापुर में हुआ था, वो अपने छह भाई-बहनों में चौथे थे। वह कलकत्ता में पले-बढ़े और उन्होंने चंडीगढ़ में एक सफल व्यापारिक साम्राज्य स्थापित किया और 1991 में रोटरी इंटरनेशनल के शिखर पर पहुंचे।

महज आठ साल की उम्र में साबू ने महात्मा गांधी के 'भारत छोड़ो' आंदोलन के अंतर्गत मवंदे मातरमम का नारा लगाते हुए 150 युवाओं के साथ एक जुलूस निकाला और इस वजह से उन्हें जेल भी जाना पड़ा। कलकत्ता के सेंट जेवियर्स कॉलेज से स्नातक होने के बाद उन्हें न केवल महात्मा से दो बार मिलने का अनूठा सौभाग्य प्राप्त हुआ बल्कि गांधी जी उनके कंधे पर हाथ रखकर चलते हुए भी नज़र आए।

'हाउस ऑफ बिड़ला' का साबू परिवार पर गहरा प्रभाव पड़ा। जी डी बिड़ला ने राजा के पिता को अपनी सरपरस्ती में लिया। उन्होंने न केवल उन्हें नौकरी दी बल्कि जीवन भर अधिक जिम्मेदार पदों और पदोन्नति के साथ उनकी कड़ी मेहनत को पुरस्कृत भी किया। राजा की कड़ी मेहनत और उद्यमशीलता कौशल को भी प्रारंभ में बिड़ला द्वारा समर्थित किया गया। जर्मन बिज़नेस हाउस, ग्रोज़-बेकर्ट के साथ सहयोग करने के उनके स्मार्ट कदम ने उनकी पेशेवर सफलता की नींव रखी जो आज के साबू ग्रुप ऑफ कंपनीज का आधार बना। आज यह समूह उनके दो बेटों और पोतों द्वारा संचालित किया जा रहा हैं।

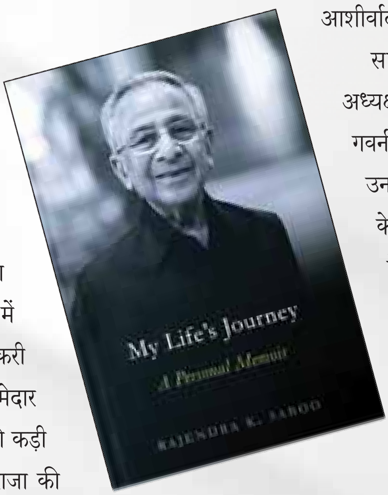

रोटरी हमेशा साबू के जीवन का हिस्सा रही है क्योंकि उनके पिता तारा चंद साबू रोटरी क्लब कलकत्ता के सदस्य थे। साबू ने मई 1961 में रोटरी क्लब चंडीगढ़ में शामिल होकर कुछ ही महीनों में पंजाब के मुख्यमंत्री पी एस कैरों और केंद्रीय उद्योग मंत्री मनुभाई शाह द्वारा अपने चंडीगढ़ कारखाने का उद्घाटन कराया। अगर सरकारी हस्तियों की बात करें तो साबू को मुख्यमंत्री, राज्यपाल, कैबिनेट सचिव, उपराष्ट्रपति से लेकर भारत के राष्ट्रपति जैसे प्रमुख व्यक्तियों का समर्थन प्राप्त था। विभिन्न सरकारों में उच्च पदों से उनके संबंधों और उनके द्वारा लिए गए सही निर्णयों ने हमेशा उनके उद्यमिता के उत्साह का समर्थन किया है, जिससे न केवल उनकी पेशेवर प्रगति हुई बल्कि उन्हें चंडीगढ़ और भारत को अनुकरणीय सामुदायिक सेवा के लिए भी समर्थन प्राप्त हुआ है, इसके अलावा अफ्रीका महाद्वीप भी उनके द्वारा आयोजित किए गए चिकित्सा मिशन से बहुत लाभान्वित हुआ।

इस किताब में उनके बॉलीवुड सितारों और गायकों के साथ दोस्ती से जुड़ी कई दिलचस्प घटनाएं दर्ज हैं, जो सबू के बहुमुखी व्यक्तित्व को दर्शाती हैं। मदर टेरेसा ने भी उन्हें अपना स्नेह और आशीर्वाद दिया।

साबू 1970-71 में क्लब अध्यक्ष और 1976-77 में मंडल गवर्नर बने। चाहे संजय गांधी से उनकी मुलाकात हो या संजय के अनुरोध पर आपातकाल के दौरान 'परिवार नियोजन' शिविर आयोजित करने में उनकी मदद करना हो या फिर हीरो ग्रुप के अध्यक्ष बृजमोहन लाल मुंजाल का डीजी पद के लिए साबू के पक्ष में अपना नाम वापस लेना हो, इस किताब में इस तरह की अनेक घटनाएं साझा की गई है जो पाठक को इस दिलचस्प किताब से जोड़े रखती हैं।

भारत की बात करें तो साबू ने रोटरी के हर पहलू में बदलाव किया है। यह किताब बताती है कि कैसे उन्होंने *रोटरी न्यूज़* पत्रिका के सुधार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और इसे 1983 में दक्षिण एशिया के लिए एक रोटरी क्षेत्रीय पत्रिका के रूप में आधिकारिक तौर पर मान्यता देकर प्रमाणित किया। उनके प्रयासों की बदौलत अक्टूबर 1984 में रो ई दक्षिण एशिया शाखा कार्यालय नई दिल्ली में स्थापित किया गया था।

रो ई में पदोन्नति की प्रक्रिया में मसही कनेक्शनफ, सिफारिशों और समूहवाद की भूमिका इस किताब में विभिन्न घटनाओं के माध्यम से दिखाई देती है। रोटरी में इसे 'राजनीति' कहा जा सकता है। लेकिन साबू ने शब्दों का हेर-फेर किए बिना कई दिलचस्प घटनाओं को तथ्यात्मक रूप से संबंधित व्यक्तियों के नाम सहित साझा किया। डीजी से लेकर रो ई अध्यक्ष बनने तक

उषा, उनकी अर्धांगिनी, सिर्फ सबू की प्रेरणा ही नहीं, बल्कि एक सहयोगी और साथी हैं, जो उनके परिवारिक जीवन, उद्यमिता और रोटरी सेवा यात्रा में उनके साथ कदम से कदम मिलाकर चलती हैं।

के सफर में हर कदम पर वह 'राजनीति' से निपटते हुए विजेता बनने में सफल रहे। दुर्भाग्यवश एक भारतीय रोटेरियन के बेईमान तरीकों ने विवाद उत्पन्न किया और साबू के रो ई अध्यक्ष पद तक पहुंचने में बाधा डाली। किताब एक रो ई अध्यक्ष को नामित करने की लंबी प्रक्रिया का वर्णन इस प्रकार करती है - पोप के चयन की प्रक्रिया, सफेद धुएं को छोड़कर।

यह किताब हमें बताती है कि कैसे अध्यक्ष-निर्वाचित साबू को रो ई के उनके कार्यकाल के दौरान इवान्स्टन में रहने के लिए एक स्थायी अपार्टमेंट का प्रस्ताव दिया गया था। ''हालांकि मैंने इसे स्वीकार नहीं किया क्योंकि रोटरी वित्तीय कठिनाइयों से गुजर रही थी।'' इसलिए वह और उषा अपने खर्चे पर होटल ऑरिंगटन के एक उन्नत सुइट में लगभग 200 दिनों तक रुके। यह उन अनेक उदाहरणों में से एक है जो यह दिखाते है कि उन्होंने कितने समर्पण भाव से रोटरी की सेवा की है। रो ई अध्यक्ष के रूप में उनके कार्यकाल के अंत में खर्चे को लेकर उनके विवेकपूर्ण निर्णयों की वजह से रो ई का खाता अधिशेष में था।

माय लाइफ्स जर्नी,
ए पर्सनल मेमॉयर

अल्फा बीटा गामा द्वारा प्रकाशित

पृष्ठ: **470**

मूल्य: **₹ 950**

इस आत्मकथा में रो ई अध्यक्ष के रूप में दुनिया भर में उनकी यात्राओं, 28 देशों के प्रमुखों से उनकी मुलाकातों और संयुक्त राष्ट्र की यात्रा के बारे में विस्तृत वर्णन किया गया है। उन सभी बैठकों के बारे में पढ़ना वाकई बहुत दिलचस्प है। उनके अध्यक्षीय वर्ष के दौरान हुए दुर्भाग्यपूर्ण घटनाक्रम जिसमें तत्कालीन रो ई महासचिव शामिल थे और उस पर साबू की कड़ी कार्यवाही या फिर रो ई कर्मचारियों के प्रति उनका विशेष दयालु भाव, उनके नेतृत्व को एक सक्षम प्रशासक और एक गर्मजोशी भरे इंसान के रूप में वर्णित करता हैं।

'बेहतर रोटरी' के लिए साबू की गहन चिंता तब देखी गई जब उन्होंने क्लब अध्यक्षों-निर्वाचितों के लिए एक मानक 'प्रशिक्षण मैनुअल' की आवश्यकता को समझा जिसे तैयार करने के लिए उन्होंने तीन वरिष्ठ रोटरी नेताओं को नियुक्त किया और इसे रो ई मंडल द्वारा मंजूरी दिलाई।

रोटरी के पोलियो उन्मूलन अभियान में विचारधारा से लेकर कुछ वरिष्ठ रोटेरियनों के प्रारंभिक विरोध और फिर कार्यक्रम को अंतिम रूप देने तक साबू ने रो ई के उच्चतम स्तर पर सक्रिय भूमिका निभाई। उनकी समर्पित कोशिशों और भारत सरकार को राज़ी करने के प्रयासों की वजह से राष्ट्रीय टीकाकरण दिवस की शुरुआत हुई।

रोटरी फाउंडेशन में रो ई अध्यक्षीय पद पर सेवा देने के बाद उन्होंने रोटरी पीस फेलोशिप के शुभारंभ के लिए प्रयास किए और उसपर काम किया।

अगर कोई रोटरी और समुदाय के लिए साबू द्वारा किए गए महान कार्यों जैसे क्लब अध्यक्ष, मंडल गवर्नर, रो ई निदेशक, रो ई अध्यक्ष और टीआरएफ प्रमुख के रूप में उनके सेवा कार्य को छोड़कर 1998 से 2020 तक अफ्रीका के विभिन्न देशों में और 2006 से 2024 तक भारत के विभिन्न ग्रामीण हिस्सों में उनके द्वारा किए गए केवल 30 चिकित्सा मिशनों की ही बात करें तो वह उनके साथियों के प्रति उनकी ऊर्जा, प्रयास, समर्पण और गर्मजोशी को देखकर दंग रह जाएगा। इसमें सबसे अधिक उल्लेखनीय बात यह है कि उन सभी चिकित्सा मिशनों के दौरान उनकी आयु 64 वर्ष से अधिक थी और वह 90 वर्ष की आयु तक इसे करते रहे। इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि रामकृष्ण मिशन के स्वामी ब्रह्मेशानंद उन्हें ''आधुनिक सन्यासी'' बुलाते हैं।

यह उल्लेखनीय है कि पूरे समय साबू की पत्नी, उषा केवल एक ताकत के रूप में साबू के पीछे नहीं खड़ी थी बल्कि उनके पारिवारिक जीवन, एक उद्यमी और एक रोटेरियन के रूप में उनकी यात्रा में एक साथी और सहकर्मी भी थी। इस संस्मरण में यह बात हर पृष्ठ पर अनुभव की जा सकती है। कोई भी उषा के बिना साबू की कल्पना नहीं कर सकता।

अनेक यादगार तस्वीरों से सुसज्जित इस किताब की शुरुआत पूर्व रो ई अध्यक्ष के आर रवींद्रन द्वारा लिखी गई प्रस्तावना के साथ होती है, जो उनके लिए एक परिवार की तरह ही है।

हममें से कोई भी उस समय वहाँ मौजूद नहीं था जब भारत के एक महान सपूत, स्वामी विवेकानंद ने 'प्रिय भाइयों और बहनों' के जादुई शब्दों के साथ अपने भाषण की शुरूआत करके 1893 में भारत को दुनिया के सामने एक अलग अंदाज़ में प्रस्तुत किया। लेकिन अब हम सबके पास हमारे बीच मौजूद एक और सपूत को जानने का अवसर है, जिसने स्वामी विवेकानंद के लगभग 100 साल बाद शिकागो के उसी शहर में बोलते हुए तीन सरल किन्तु गहन शब्दों के साथ दुनिया से 'खुद से परे देखने' की अपील की और वह अपनी इसी बात पर अमल करते हुए अपना पूरा जीवन जी रहे हैं... राजेंद्र साबू।

इस किताब से प्राप्त होने वाली आय द रोटरी फाउंडेशन को जाएगी।

लेखक रोटरी क्लब ठाणे हिल्स, रो ई मंडल 3142 के एक सदस्य है।

रो ई मंडल 2981

रोटरी क्लब कुड्डलोर कोस्टल सिटी

रोटेरियनों ने कुड्डलोर और उसके आसपास के क्षेत्रों में फेंगल चक्रवात से प्रभावित परिवारों को राहत सामग्री और अन्य आवश्यक वस्तुएं वितरित की।

Rotary PEOPLE OF ACTION

मंडल गतिविधियाँ

रो ई मंडल 3011

रोटरी क्लब दिल्ली साउथेक्स

सर्वोदय विद्यालय, मस्जिद मोठ, में कक्षा 6-8 के 60 छात्रों ने क्लब द्वारा आयोजित चित्रकारी प्रतियोगिता में अपनी रचनात्मकता का प्रदर्शन किया।

रो ई मंडल 3030

रोटरी क्लब नासिक

महाराष्ट्र के नंदुरबर जिले के ग्रामीण इलाकों के 15 बच्चों की दिल की सर्जरी नासिक के मैग्नम अस्पताल में वैश्विक अनुदान परियोजना के तहत की गई।

रो ई मंडल 3060

रोटरी क्लब भरूच

भरूच जिला शतरंज संघ और नेशनल एसोसिएशन फॉर द ब्लाइंड के साथ संयुक्त रूप से दृष्टिबाधित व्यक्तियों के लिए आयोजित एक शतरंज टूर्नामेंट में 32 प्रतियोगियों ने करीबी मुकाबले में अपनी क्षमता और इच्छाशक्ति का लोहा मनवाया।

रो ई मंडल 3000

रोटरी क्लब करंबकुड़ी सिटी

विल्लुपुरम और कुड्डलोर जिलों में चक्रवात फेंगल से प्रभावित परिवारों को चावल के बैग, बिस्कुट, टी-शर्ट, नाइटी, लुंगी और कंबल भेजे गए।

रो ई मंडल 3132

रोटरी क्लब सोलापुर स्मार्ट सिटी

गुलवांची गांव में भाऊ बीज उत्सव के हिस्से के रूप में लगभग 50 निराश्रित महिलाओं को साड़ियां, मिठाइयां और नाश्ता दिया गया।

रो ई मंडल 3160

रोटरी क्लब गुडूर वेस्ट

क्लब ने रोटरी क्लब गुडूर टाउन और तिरुपति के साथ मिलकर रोटेरियन येलसिरी गोपाल रेड्डी द्वारा प्रायोजित किराने का सामान और बेडशीट वितरित की।

दिल ही तो है

भरत और शालन सवुर

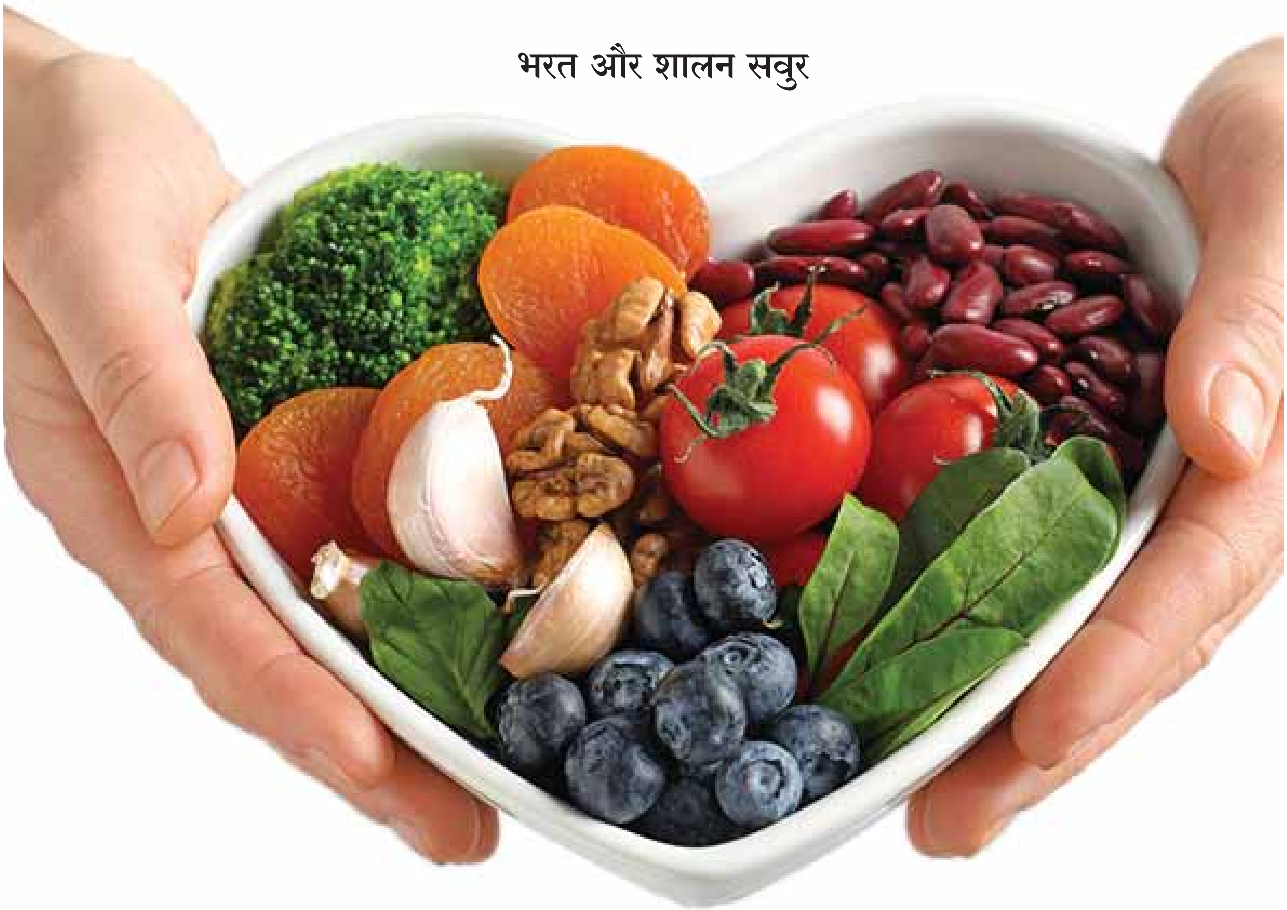

तनाव हमारी दिनचर्या का हिस्सा बन चुका है। स्वाभाविक रूप से कार्यालय का कार्य समय आठ घंटे की शिफ्ट से काफी आगे बढ़ चुका है। क्योंकि इस समय अनुसार न तो सूर्य उगता है और न ही अस्त होता है। समय के साथ यह एक अपरिहार्य सच्चाई बन गई है खासकर सेवा उद्योगों में जिनके काम को वैश्विक समय क्षेत्रों में विभाजित करना मुश्किल है। कोविड के बाद से बैक-ऑफिस का तनाव और भी बढ़ गया है क्योंकि वैश्वीकरण में अजीब बदलाव आए है। उदाहरण के लिए मुंबई में एक पुरुष कर्मचारी मैनहट्टन के समय के हिसाब से ग्राहकों की आवश्यकताओं को पूरा करता है। अब हमारे माटुंगा का पारंपरिक व्यक्ति मदुरै, मैड्रिड या मैक्सिको के व्यक्ति के साथ प्रतिस्पर्धा करता है। बाहरी स्रोत के कार्य भौगोलिक सीमाओं और समय क्षेत्रों को पार कर चुके है। और पश्चिमी मल्टीनेशनल कंपनियों (एमएनसी) के लिए काम करते हुए अधिक समय यात्रा करने वाले लोग आज घर से काम करने वाले/कॉल सेंटर में काम करने वाले भारतीयों के साथ मिलकर काम कर रहे हैं। यह प्रवृत्ति अब स्थायी और विस्तारित हो चुकी है क्योंकि सिकुड़ती पश्चिमी अर्थव्यवस्थाएं अब भारत जैसे एशियाई देशों में नए अवसरों और बड़े बाजारों की तलाश कर रही हैं।

हमारी राष्ट्रीय वित्तीय राजधानी, मुंबई, आर्थिक, वित्तीय और शेयर बाजार आधारित गुरुत्वाकर्षण का केंद्र बनी हुई है और अपने हिस्से से कहीं अधिक बोझ उठाती है। इंटरनेट के इस तत्काल युग में, वाणिज्यिक क्रियाएं और प्रतिक्रियाएं प्रकाश की गति से होती है, पलक झपकते ही सब हो जाता है। अपनी स्पष्ट उदासीनता के बावजूद मुंबई हमेशा एक बड़ा दिल प्रदर्शित करता है। चाहे बाढ़ का सामना करना हो या प्रवासी श्रमिकों को समायोजित करके उन्हें रोजगार देना हो। एक समय था जब ऐसा कहा जाता था कि बंबई में जो भी होता है उसका असर अगले दिन पूरे भारत पर होता है। हालांकि इस तात्कालिक युग ने इस कथन को अप्रासंगिक बना दिया है। और तनाव को सार्वभौमिक बना दिया है।

तनावपूर्ण जीवन शैली की वजह से हृदय संबंधी समस्याएं अब केवल वरिष्ठ नागरिकों में ही नहीं बल्कि युवाओं में भी आम हो गई हैं। कार्डियोलॉजिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया की सिफारिश है कि हम भारतीयों को बीस साल की उम्र के बाद से ही अपने कोलेस्ट्रॉल के स्तर की जांच शुरू कर देनी चाहिए। एक बहुराष्ट्रीय कंपनी, वॉकहार्ट द्वारा हाल ही में 547 लोगों पर किए गए ऑनलाइन सर्वेक्षण से पता चलता है कि 152 लोगों में से 67 प्रतिशत लोगों ने शायद ही कभी अपने रक्तचाप की जांच की। और 103 लोगों में से 62 प्रतिशत लोगों ने अपने कोलेस्ट्रॉल के स्तर को नजरअंदाज कर दिया। इसलिए आज हम आपसे पूछते है कि आपने आखिरी बार कब अपना रक्तचाप और कोलेस्ट्रॉल स्तर जांचा था? उम्र और अवस्था को

नज़रअंदाज करते हुए आधुनिक जीवनशैली में आए बदलाव और धूम्रपान, मदिरापान, अधिक काम और तनाव जैसी चुनौतियां युवाओं में खासकर पुरुषों में बढ़ते दिल के दौरे के मुख्य अपराधी हैं। अगर आपने अभी तक अपने चिकित्सक से जांच नहीं करवाई है तो तुरंत ही उनसे परामर्श लें।

मुंबई के नागरिक स्वास्थ्य विभाग द्वारा जारी एक रिपोर्ट के अनुसार मुंबई में हर 55 मिनट में घातक दिल का दौरा पड़ता है, जो इस शहर में प्रतिदिन 27 मौतों का कारण बनता है, इसमें यह भी बताया गया कि 2023 में दिल के दौरे के कारण 10,000 लोगों की मौत हुई, जो मुंबई में सालाना मौतों का 11 प्रतिशत है।

उच्च रक्तचाप और मधुमेह जैसी जानलेवा बीमारियाँ अब उम्र की सीमाएं लांघ चुकी है। बीएमसी की साइटों पर दो वर्षों में चार लाख से अधिक लोगों की जांच के सर्वेक्षण में पाया गया है कि नौ प्रतिशत लोगों के दिल कमजोर है और 12.3 प्रतिशत लोगों को मधुमेह की शिकायत थी। पिछले 18 महीनों में घर-घर जाकर की गई जांच ने 21.6 लाख लोगों को कवर किया। इस सर्वेक्षण से यह तथ्य उजागर हुआ कि 18,000 मुंबईकर अपने उच्च रक्तचाप से अनजान थे वहीं 18 और 69 वर्ष की आयु के 34 प्रतिशत लोगों को उच्च रक्तचाप की समस्या थी।

संयोग से, भारत मधुमेह की बीमारी में विश्व में अग्रणी है और मोटापे में तीसरे स्थान पर है। दोनों ही अपने तरीके से जानलेवा होते हैं और दिल की घातक बीमारियों का कारण बनते है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार भारत में सीवीडी की मृत्यु दर प्रति 1,00,000 पुरुषों पर 349 और प्रति 1,00,000 महिलाओं पर 265 है। यह आँकड़े अमेरिका से एकदम विपरीत है जो खुद मोटापे से ग्रस्त राष्ट्र के रूप में जाना जाता है वहाँ सीवीडी से होने वाली मृत्यु दर 1,00,000 पर 170 पुरुष और 108 महिलाएं है।

'हार्ट फैल्यर' एक सामान्य शब्द था जो पहले के अपेक्षाकृत अधिक अज्ञानी समयों में उपयोग होता था। यह विरोधाभास कारण और परिणाम के बीच अंतर नहीं करता। जब शरीर 'फैल' हो जाता है तो दिल भी काम करना बंद कर देता है। आजकल, दिल के दौरे और कार्डियक अरेस्ट के बीच के अंतर को लेकर भी एक समान अज्ञानता देखने को मिलती

Heart attack across age groups in Mumbai

Age-group (years)	Male%	Female%
25–35	100	-
35–45	89	11
45–55	82	18
Overall	86	14

है। यह अज्ञानता अपने आप में घातक हो सकती है क्योंकि तात्कालिक चिकित्सा उपाय दोनों स्थितियों में अलग-अलग होते है। दिल का दौरा पड़ने पर व्यक्ति होश में रहता है और उसे तुरंत अस्पताल ले जाने की आवश्यकता होती है। कार्डियक अरेस्ट में तुरंत सीपीआर (कार्डियोपल्मोनरी रिससिटेशन) की आवश्यकता होती है ताकि उसे फिर से जीवनदान मिल सकें।

स्किपिंग एक उच्च प्रभाव वाला एरोबिक खेल है जो शरीर के निचले हिस्से मुख्य रूप से कूल्हे, घुटने और पैरों के जोड़ों को सक्रिय करता है। इसलिए इसे करते समय मोजे और अच्छे गद्देदार स्नीकर्स पहनें। इसकी गतिशील क्रियाएं शरीर को मजबूत करती हैं और सहनशक्ति बढ़ाती हैं।

ये तनावपूर्ण समय हैं। लगभग हर मामले में मुद्दा यह नहीं है कि आप क्या खाते है बल्कि जो चीजें आपको खा रही है वही आपको तनाव दे रही है। सौभाग्य से हमेशा की तरह माँ प्रकृति के पास इसका जवाब है। प्रकृति के पास लौटना और वही भोजन गृहण करना जो वह स्वाभाविक रूप से प्रदान करती है - जैसे फल और सब्जियाँ - इस प्रक्रिया में हमारे पूर्वजों के मार्ग पर चलना शुरू करने से रक्तचाप को कम करने में मदद मिलती है।

1997 में न्यू इंग्लैंड जर्नल ऑफ मेडिसिन में प्रकाशित एक नैदानिक परीक्षण में सामान्य या उच्च रक्तचाप वाले 459 वयस्कों का परीक्षण किया गया जो DASH आहार (डाइटरी अप्रोचेस टू स्टॉप हाइपरटेंशन अर्थात उच्च रक्तचाप को रोकने के लिए आहार संबंधी दृष्टिकोण) की शुरुआत का आधार बना। इन लोगों को पहले तीन हफ्तों के लिए सामान्य अमेरिकी भोजन दिया गया - जिसमें फल, सब्जियाँ और डेयरी उत्पादों की अपेक्षाकृत कमी होती है और नाश्ते एवं मिठाईयाँ ज्यादा होती है। अगले आठ हफ्तों के लिए उन्हें तीन अलग-अलग आहारों के लिए यादृच्छिक रूप से चुना गया। पहले समूह को वही अमेरिकी आहार दिया गया। दूसरे समूह को भी वही आहार दिया गया परंतु इसमें फल एवं सब्जियाँ जोड़ी गई। तीसरे समूह को DASH आहार दिया गया।

इस अध्ययन ने यह साबित किया कि जो समूह DASH आहार का पालन कर रहा था उसमें अन्य समूहों की तुलना में रक्तचाप में बेहतर सुधार एवं कमी दिखाई दी। वास्तव में, यह कमी उन्हीं परिणामों के समान थी जो रक्तचाप कम करने वाली गोलियों से मिलती है।

DASH आहार

2000-कैलोरी-प्रति-दिन वाले आहार के लिए पहले 1,000 कैलोरी में हर दिन 4-5 सर्विंग फल और सब्जियाँ शामिल करने की आवश्यकता होती है - जो आपके भोजन का 50 प्रतिशत होता है। इसके साथ 6-8 सर्विंग अधिकतर साबुत अनाज की भी शामिल होना चाहिए। कम या बिना वसा वाले डेयरी उत्पादों की दो से तीन सर्विंग और साथ ही भोजन के पूरक के रूप में लीन मांस, मुर्गी और मछली की छह एक-औंस की सर्विंग शामिल होनी चाहिए। DASH आहार में एक सप्ताह में 4-5 सर्विंग नट्स, बीज और फलियां शामिल करने का सुझाव दिया जाता है। इस योजना में प्रति सप्ताह मिठाई की पांच सर्विंग्स भी शामिल की जा सकती है। वेगन लोग डेयरी उत्पादों को छोड़ सकते हैं और इसके बजाए अन्य संबंधित खाद्य समूहों का उपयोग कर सकते हैं।

इस आहार को अपनाने का सबसे अच्छा तरीका है: इसे धीरे-धीरे शुरू करना - एक सप्ताह तक प्रति दिन एक समय के भोजन में केवल एक सर्विंग फल या सब्जी शामिल करें। और अगले सप्ताह इसे दोगुना करें।

लेखक फिटनेस फॉर लाइफ, *और* बी सिम्पली स्पिरिचुअल - यू आर नैचुरली डिवाइन *के लेखक है और फिटनेस फॉर लाइफ कार्यक्रम के शिक्षक है।*

एक झलक

टीम रोटरी न्यूज़

शीतकालीन नेकी अभियान

रोटरी क्लब कानपुर, रो ई मंडल 3110, शहर के रोटरी शहीद पार्क में नेकी की दीवार चलाता है। सर्दियों के दौरान, क्लब अपने सदस्यों और जनता द्वारा दान किए गए गर्म कपड़े, कंबल और अन्य आवश्यक वस्तुओं को इकट्ठा करके जमा करते है। आरएसी कानपुर स्टार के साथ क्लब ने सुविधाओं से वंचित परिवारों को 1,000 से अधिक वस्तुओं का वितरण किया।

क्लब के सदस्य एक लाभार्थी को उसकी पसंद की पैंट चुनने में मदद करते हुए।

स्वच्छता के बिल्डिंग ब्लॉक्स

रोटरी कल्ब मुंबई बांद्रा कुर्ला कॉम्प्लेक्स, रो ई मंडल 3141, ने केपीटी पाइप्स की सीएसआर पहल की मदद से पालघर में जिला परिषद स्कूल में छह शौचालय खंडों का निर्माण किया है। क्लब छात्रों और कर्मचारियों के लिए स्वच्छता जागरूकता कार्यक्रम भी आयोजित करेगा ताकि स्थायी प्रभाव सुनिश्चित किया जा सके।

नवनिर्मित शौचालय ब्लॉक के सामने रोटेरियन, कर्मचारी और छात्र।

एक साक्षरता पहल

रोटरी क्लब कटवा, रो ई मंडल 3240, ने कटवा के अखरा फ्री प्राइमरी स्कूल में प्रौढ़ साक्षरता केंद्र का उद्घाटन किया। 40 वयस्क महिला शिक्षार्थियों के पहले बैच ने केंद्र में दाखिला लिया है और प्रत्येक बैच के लिए तीन महीनों तक कक्षाएं चलाई जाएगी।

प्रौढ़ साक्षरता कक्षा।

आंख खोलने वाला उपहार

रोटरी राजन किंडर आई प्रोजेक्ट को हाल ही में रोटरी कल्ब मद्रास टी नगर, रो ई मंडल 3233, और किंडर आई, यूएस, के सहयोग से चेन्नई के राजन आई केयर अस्पताल में लॉन्च किया गया। इस पहल का उद्देश्य 15 वर्ष की आयु तक के वंचित स्कूली बच्चों को मुफ्त चश्मा प्रदान करना है। लॉन्च कार्यक्रम में डीजी महावीर बोथरा मौजूद थे।

डॉ मोहन राजन (बाएँ से दूसरे), डीजी महावीर बोथरा और नरेंद्र श्रीश्रीस्मल, रोटरी क्लब मद्रास टी नगर के अध्यक्ष, रोटरी राजन काइंडर आई प्रोजेक्ट के लाभार्थियों के साथ।

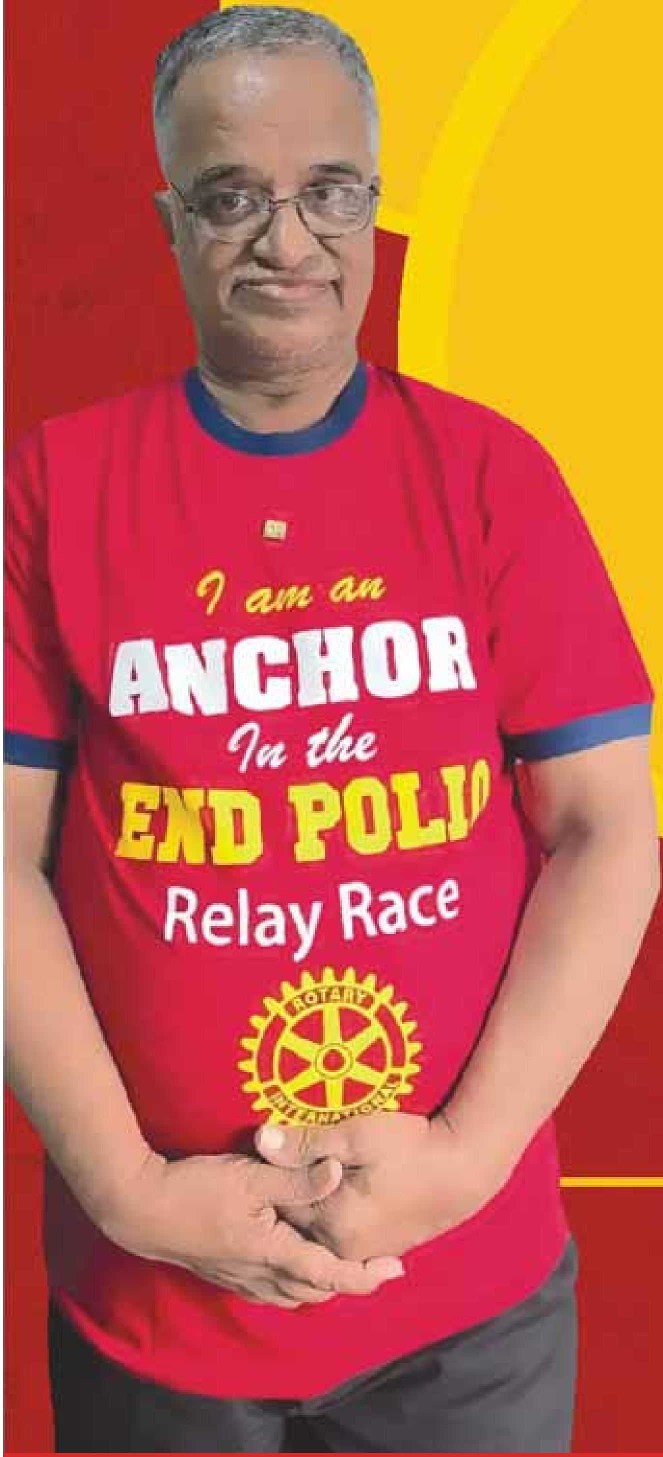

आइए भविष्य की पीढ़ियों को पोलियो-मुक्त दुनिया उपहार में दें...

पोलियो फंड में दान करें।

आपकी सेवा में,

रोटेरियन एकेएस डॉ के श्रीनिवासन

रोटरी क्लब तिरुचिरापल्ली और इरोड सेंट्रल

ज़ोन - 5

ADVT.

आपका अपना किचन गार्डन

प्रीति मेहरा

घर पर स्वस्थ सब्जियाँ उगाना एक लाभदायक अनुभव हो सकता है

एक बार एक बुद्धिमान व्यक्ति ने कहा था कि बागवानी सबसे शुद्ध मानवीय सुखों में से एक है। वास्तव में वह हरा-भरा स्थान जिसे आप स्नेहपूर्वक संभालते है और देखरेख करते है, वो वह जगह है जहाँ आप प्रकृति से जुड़ते हैं और हर सुबह या शाम को इससे बीच राह पर मिलते हैं। मेरी एक मित्र जो अपने किचन गार्डन पर बहुत गर्व करती है, जहाँ वह जड़ी-बूटियों और सब्जियों की एक दिलचस्प विविधता उगाती है, बागवानी को अपने बच्चे को पालने या किसी पालतू जानवर की देखभाल करने के बराबर मानती है। बीजों को अंकुरित होते, बढ़ते और फल-फूल देते हुए देखना वास्तविक आनंद है, वह कहती हैं।

हर सुबह टहलने के बाद वह अपने पसंदीदा पौधों के साथ समय बिताती है। वह उनसे बड़े प्यार, स्नेह और मधुर स्वर में ऐसे बात करती है जैसे एक माँ अपने बच्चे से बात करती है। उनके हिसाब से पौधों से अच्छी तरह से बात करने से वे अच्छी तरह से बढ़ते है हालांकि मैं यह दावा नहीं कर सकता कि इससे मदद मिलती है या नहीं। लेकिन मैं निश्चित रूप से यह कह सकता हूँ कि उनके बगीचे में ताजा, जैविक, कीटनाशक मुक्त सब्जियों और जड़ी-बूटियों से भरपूर फसल होती है जिन्हें वह उदारतापूर्वक अपने दोस्तों के साथ साझा करती है।

विज्ञान हमें बताता है कि भले ही पौधे हमारी बातों को समझ या सुन नहीं सकते मगर वे हमारी आवाज़ों द्वारा उत्पन्न तरंगों को महसूस कर सकते है। इसलिए जोर से बोले गए कठोर शब्द हमारे हरे-भरे मित्रों के लिए खराब तरंगे पैदा करते है। यदि मपौधों से स्नेहपूर्वक बात करनेफके सिद्धांत का समर्थन करने वाले लोगों की बात मानें तो 115-250 हर्ट्ज के बीच की निम्न-स्तरीय तरंगे प्रकाश संश्लेषण और पौधों के विकास को बढ़ावा देने के लिए आदर्श होती हैं। किसी भी तरह से खुश रहना और अपने पौधों से प्यारी बातें करना आपके मूड को अच्छा करेगा और आपको कोई नुकसान नहीं पहुँचेगा।

पौधों से बात करने के विज्ञान को अलग रखते हुए चलिए हम अपने छोटे से किचन गार्डन को शुरू करने पर विचार करें। स्थान का प्रमुख महत्व है। आपको ऐसा स्थान चुनना चाहिए जहाँ चार से पांच घंटे धूप आती हो विशेषरूप से दिन के पहले भाग के दौरान। दोपहर के बाद की धूप पौधों के लिए कठोर हो सकती है खासकर चिलचिलाती गर्मी के दौरान। यदि आपको ऐसा कोई आदर्श स्थान नहीं मिल रहा हो तो आप अपने पौधों पर एक हल्का आवरण डाल सकती हैं जो अधिकांश नर्सरी में उपलब्ध होता है या फिर एक पतले कपड़े का आवरण बना सकती हैं जिससे सूरज की रोशनी और हवा पूरी तरह से अवरुद्ध न

हो। आपके द्वारा बनाया गया आवरण पौधों के ऊपर बंधा हुआ होना चाहिए ताकि हवा के आने-जाने के लिए पर्याप्त जगह बची रहे।

यदि आपके घर के पीछे कोई स्थान हो या घर की छत हो तो यह इसके लिए आदर्श स्थान होगा। हालांकि, ज्यादातर लोग ऊंची इमारतों में फ्लैट्स में रहते हैं और उन्हें अपने किचन गार्डन के लिए बालकनियों या खिड़की की चौखट में जगह ढूँढ़नी पड़ती है। एक बार जब आप अपने किचन गार्डन का स्थान तय कर लें तो आपको यह पता लगाना होगा कि आपके पौधे कहाँ उगाए जाएंगे। आप पुराने बाथटब, बाल्टी और मिट्टी के बर्तन का इस्तेमाल कर सकते है जिनके तले में पानी निकलने की जगह हो, यह सभी आपके पौधों को उगाने वाली मिट्टी के लिए बेहतरीन साबित होंगे।

आपके द्वारा चुनी गई मिट्टी आपके पौधों का समर्थन करने के लिए पोषक तत्वों से भरपूर होनी चाहिए। आप एक नर्सरी से मिट्टी प्राप्त कर सकते हैं और प्राकृतिक खाद (गाय का गोबर), वानस्पतिक खाद (सड़े हुए पौधों और खाद्य अपशिष्ट से) और कॉयर पीट मिला सकते हैं। कॉयर पीट वह बारीक कण या बुरादा होते है जो नारियल के अंदर की खोखली परत या गूदे से निकलता है जो घरेलू बागवानी के लिए व्यावसायिक रूप से उपलब्ध कराया जाता है। कॉयर पीट में जल प्रतिधारण क्षमता होती है, यह मिट्टी को बांधे रखती है और जड़ को पनपने में मदद करती है। इसे एंटीफंगल भी कहा जाता है।

अब बीज बोने का समय आ गया है। आपको मिश्रित बीजों के बजाय खुले परागण वाले बीजों का चयन करना चाहिए। यदि आप बागवानी के बारे में गंभीर हैं तो आप खुले परागण वाले बीजों का चयन करेंगे क्योंकि आप साल-दर-साल अपनी फसल के बीज ही बो सकते हैं। खुले परागण वाले बीज समय के साथ स्थानीय बढ़ती हुई परिस्थितियों के अनुकूल अधिक जैविक विविधता को बढ़ावा देते हैं। हालांकि, अक्सर अल्पावधि में उच्च पैदावार के लिए मिश्रित बीजों के उपयोग की सलाह दी जाती है।

आप जिन सब्जियों को उगाना चाहते है - शुरुआती लोगों के लिए टमाटर और मिर्च उगाने की सलाह दी जाती है क्योंकि ये उगाने में आसान होते हैं - इस पर ध्यान देने के बाद आप बीज बोने के गंभीर कार्य में लिप्त हो सकते हैं। जल निकासी की सुविधा के लिए आप बीज लगाने वाली ट्रे या फिर तले में एक छेद वाले गमले का भी उपयोग कर सकते हैं। बीज के आकार से दोगुना छेद करें, इसे मिट्टी से ढक दें और इसे नम रखने के लिए पर्याप्त मात्रा में पानी डालें। पक्षियों, गिलहरियों और अन्य कीटों से बीजों को बचाने के लिए उन्हें एक जाली से ढंका जा सकता है।

एक बार जब बीज अंकुरित हो जाए और पौधे की तीसरी पत्ती निकल आए तो उसे एक बड़े गमले में प्रत्यारोपित करें। सुनिश्चित करें कि पौधों के बीच अच्छी तरह बढ़ने के लिए पर्याप्त जगह हो। रोजाना एक बार सुबह या शाम को पानी दें और पौधे को बढ़ते हुए और लगभग तीन महीनों में फल देते हुए देखें। आप मिट्टी की पर्याप्त नमी को जाँचने के लिए मिट्टी को अपनी उंगलियों से दबाकर देख सकते हैं। गर्मी के महीनों में अतिरिक्त जल की आवश्यकता हो सकती है।

एक किचन गार्डन में आप टमाटर, पालक, बैंगन, मिर्च, भिंडी, करेला, धनिया, पुदीना, तुलसी और लेमनग्रास सहित विभिन्न प्रकार की सब्जियां एवं जड़ी-बूटियां उगा सकता है। और अपने बढ़ते अनुभव के साथ आप और भी अधिक दिलचस्प पौधों की खोज करेंगे जिन्हें आप अपने हरे-भरे बगीचे में उगा सकते हैं।

शुरुआत में आपको अपने किचन गार्डन को स्थापित करने के लिए एक स्थानीय माली की मदद की आवश्यकता हो सकती है और बाद में भी अगर आपके पास समय की कमी हो तो आप उनकी मदद ले सकते हैं। लेकिन सुनिश्चित करें कि वह आपके निर्देशों के अनुसार ही काम करें। मालियों की एक बुरी आदत होती है कि वे बेहतर परिणामों के लिए मिश्रित नस्ल के बीज, रासायनिक उर्वरकों और कीटनाशकों का उपयोग करते है। हालाँकि, उत्पादित की गई सब्जियां और जड़ी-बूटियाँ बाज़ार से प्राप्त होने वाली चीज़ों से बेहतर नहीं हो सकती। इसी वजह से किचन गार्डन का वास्तविक उद्देश्य पराजित हो जाता है।

लेखिका एक वरिष्ठ पत्रकार हैं, जो पर्यावरण के मुद्दों पर लिखती हैं।

शब्दों के साथ तालमेल

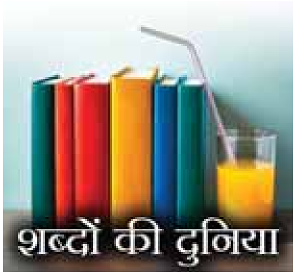

रचनात्मक प्रतिभाएँ हमारे सांसारिक जीवन को आनंद की बुलंदियों तक ले जाती हैं। भगवान से प्रार्थना है कि हम कभी भी प्रेरणा के पंखों पर उड़ने की अपनी क्षमता न खोएं।

संध्या राव

हाल ही में व्हाट्सएप पर चल रहे एक चित्र ने मेरा ध्यान आकर्षित किया। इसमें जाकिर हुसैन, डॉ मनमोहन सिंह, श्याम बेनेगल और रतन टाटा की तस्वीरें थी और इसका कैप्शन था मस्वर्ग में हमारे नायकफ। एक और कैप्शन ने इसे इन शब्दों में व्यक्त किया: *एक पारसी, एक मुस्लिम, एक सिख और एक हिंदू का 2024 में निधन हो गया और पूरे देश ने अपना शोक व्यक्त करते हुए उन्हें केवल भारतीयों के रूप में याद किया।* साल के आखिरी महीने में हमने कई अनमोल आत्माओं को खो दिया जिनमें लेखक एम टी वासुदेवन नायर और बापसी सिधवा शामिल हैं। लगातार हम एक पूरी पीढ़ी को खो रहे हैं जिसने हमें उनके जीवन, उनके काम, उनके नेतृत्व, उनकी क्षमताओं, उनकी कल्पना, उनके जादू से प्रेरित किया। इस शोकपूर्ण समय में मार्क एंटनी के शब्द मेरे दिमाग में गूँजते हैं। क्या आपको शेक्सपियर के *जूलियस सीज़र* का शोक संगीत याद है? 'मनुष्य के बुरे कार्य उनके जाने के बाद भी जीवित रहते हैं और अच्छे कार्य अक्सर उनकी हड्डियों के साथ दफन हो जाते है...' मुझे वास्तव में आशंका है: अंततः क्या यह हम इसी विरासत को पीछे छोड़कर जाएंगे?

बापसी सिधवा कई सालों तक अमेरिका में रही लेकिन निश्चित रूप से हर कोई उस फिल्म को याद करता है जो दीपा मेहता ने उनकी किताब पर बनाई थी, जिसका प्रारम्भिक शीर्षक था *क्रैकिंग इंडिया* और बाद में इसे *आइस कैंडी मैन* नाम दिया गया। इस फिल्म का नाम था *अर्थ 1947* और यह विभाजन के दौर पर बनाई गई थी। यह फिल्म रोमांचक, चौंकाने वाली और धीरे-धीरे आगे बढ़ती है, इसमें सभी अभिनेताओं ने अद्वितीय प्रदर्शन किया जिसमें मैया सेठना ने लेनी का किरदार निभाया जो इस उपन्यास और फिल्म में एक पारसी बच्चे का केन्द्रीय पात्र था। इसमें वो प्रेम गीत भी है जो मेरी नज़र में अब तक का सबसे बेहतरीन प्रेम गीत है जिसे जावेद अख्तर द्वारा लिखा गया, ए आर रहमान द्वारा संगीतबद्ध किया गया और हरिहरन द्वारा गाया गया: *धीमी धीमी, भीनी भीनी, खुशबू है तेरा बदन...* मेरी खुशी का कोई ठिकाना नहीं था जब कुछ दिन पहले मैं *वर्किंग वुमन* नामक एक दिलचस्प 2023 पाकिस्तानी धारावाहिक देख रही थी, उसमें मैंने एक पात्र को *आइस कैंडी मैन* पढ़ते हुए देखा! मुझे इस उपन्यास पर न्यू हिस्टोरिज्म के दृष्टिकोण से एक अध्ययन का सार मिला जो यह दर्शाता है कि कैसे यह उपन्यास भारत और पाकिस्तान के विभाजन के दौरान लाहौर में हो रही घटनाओं का वर्णन करते हुए वंचितों की आवाज बनकर यूरोकेंद्रित और औपनिवेशिक अवधारणाओं को चुनौती देता हैफ। न्यू हिस्टोरिटिज्म को एक साहित्यिक सिद्धांत के रूप में वर्णित किया गया है जो सांस्कृतिक संदर्भ और बौद्धिक इतिहास की मदद से इतिहास को समझने की कोशिश करता है।

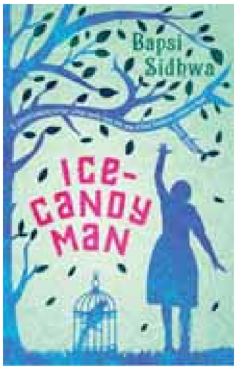

आइस कैन्डी मेन का निम्नलिखित गद्यांश जिसे *सिटी ऑफ सिन एंड स्पलेन्डर* में उद्धृत किया गया है जो पूर्व में वर्णित व्हाट्सएप की तस्वीर से एकदम उलट है: 'यह अचानक होता है। किसी दिन हर किसी की अपनी पहचान होती है और अगले दिन वे हिंदू, मुस्लिम, सिख, ईसाई में बँट जाते हैं। लोग सिकुड़ जाते हैं, प्रतीकों में सिमट जाते हैं। अयाह अब सिर्फ मेरी सर्वव्यापी अयाह नहीं रही, अब वह एक प्रतीक बन गई है। एक हिन्दू। एक नए भक्ति उत्साह से प्रेरित होकर वह देवी-देवताओं के मंदिरों में धूपबत्तियाँ, फूल और मिठाई अर्पित करने में बहुत खर्च करती है इमाम और यूसुफ धार्मिक कट्टरपंथी बन रहे हैं और माँ को चेतावनी देते हैं कि वे शुक्रवार की दोपहर को जुम्हे की नमाज के लिए छुट्टी लेंगे ... गॉडमदर और मेरा परमाणु परिवार महत्वहीन हो गया - हम पारसी हैं। ईश्वर क्या है?'

वंचितों की आवाज़ को दुनिया के शोरगुल से उभारना ही बापसी सिधवा का विशेष कौशल था और हालांकि वे दुनिया से

चली गई है पर उनका लेखन हमेशा जीवित रहेगा। ठीक उस उत्कृष्ट मलयालम लेखक, एम टी वासुदेवन नायर की कहानियों और लेखन की तरह जिनसे हमारी मुलाकात अगले लेख में होगी।

2018 में, नसरीन मुन्नी कबीर ने जाकिर हुसैन: *ए लाइफ इन म्यूज़िक* नामक एक लंबी बातचीत पर आधारित किताब प्रकाशित की। यदि आप एक संगीत-प्रेमी हैं तो इसे अवश्य पढ़ें। अपेक्षित रूप से यह संगीत/संगीतकारों से जुड़े सुंदर उपाख्यानों से भरा हुआ है लेकिन इसमें जीवन और जीने के बारे में बहुत कुछ है और इसलिए मैं सभी को इसे पढ़ने का सुझाव दूँगी। बातचीत की शुरुआत में जाकिर हुसैन कहते है कि कैसे सितार वादक रविशंकर जी 'एकमात्र ऐसे व्यक्ति थे जिनसे मैं तब किसी भी विषय पर बात कर सकता था। जब भी हम हवाई जहाज से एक साथ यात्रा करते थे तो वह हवाई अड्डे से दस पत्रिकाएं खरीदते थे ... और उड़ान के दौरान उन सभी को पढ़ते थे। मैंने भी ऐसा करना शुरू कर दिया। मैंने भाषा के बारे में स्कूल में जितना सीखा था उससे कहीं अधिक पढ़कर सीखा।' उनका कहना है कि उन्हें फिक्शन सबसे अधिक पसंद है क्योंकि ममैं मूल रूप से एक पलायनवादी हूँफ और उन्हें आइजैक असिमोव की फाउंडेशन श्रृंखला बेहद पसंद थी।

हमने जाकिर हुसैन के निधन पर स्नेह और प्यार की अभिव्यक्तियों का जो सैलाब देखा है और इस किताब में उन्होंने जो कुछ भी साझा किया है वह उन अनेक कारणों को और अधिक मजबूत बनाते है जिनकी वजह से हम इस क्षति से इतना आहत है। उदाहरण के लिए जब एनएमके उनसे पूछती है कि क्या वह एक संगीतकार और एक इंसान के रूप में अपने पिता, अल्लारखा की तरह बनना चाहते हैं, तो इसपर जाकिर हुसैन ने प्रतिक्रिया दी कि उन्हें लगता है उन्हें अपने पिता की तरह बनने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, जैसे उनके पिता ने भी कभी अपने गुरु, मियां कादिर बख्श की तरह नहीं बजाया। उन्होंने इसकी वजह बताई। जब एक कॉन्सर्ट के बाद किसी ने अल्लारखा से कहा कि उन्हें अपने बेटे पर बहुत गर्व होना चाहिए क्योंकि वह बिल्कुल अपने पिता की तरह बजाते है, तो इसपर अल्लारखा ने प्रतिक्रिया दी कि जब वह उस्ताद अल्लारखा बन चुके है तो एक और उस्ताद अल्लारखा केवल उनकी एक नकल ही होगी। 'इसका क्या फायदा?' उन्होंने कहा। वह प्रार्थना करते थे कि मवह मुझसे बेहतर बने, कुछ नया और अलग करेंफ और साहसी बनें। 'मेरे पिता ने मेरे दो भाइयों, फजल और तौफीक और मुझे और अपने बाकी छात्रों को भी यही सिखाया कि हमें अपनी शैली खुद ढूंढनी होगी। वह इस विचार से बहुत सहज थे कि उनके बेटे उनसे अलग होंगे ...' जाकिर हुसैन बताते हैं। अपने चारों ओर देखने पर आप पाएँगे कि इस प्रकार का दृष्टिकोण या रवैया आज भी दुर्लभ है न केवल सृजनात्मक क्षेत्र में बल्कि अन्य क्षेत्रों में भी।

जीवन और नैतिकता के साथ-साथ इतिहास और सांस्कृतिक विशिष्टताओं की एक उत्सुक पर्यवेक्षक, बापसी सिधवा पर लौटते हुए... एक पारसी होने के नाते उनके जीवन का पारसी दृष्टिकोण उनकी सभी कृतियों में एक धागे की तरह बुना हुआ नज़र आता है, जो उनकी पाकिस्तानी विरासत, उनकी दक्षिण एशियाई पहचान और एक वैश्विक नागरिक के रूप में उनकी चेतना से भी गहराई से जुड़ा हुआ है। यह

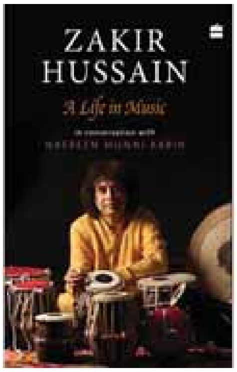

सब उनके लघु कथा संग्रह, *देयर लैंग्वेज ऑफ लव* में शानदार तरीके से प्रस्तुत किया गया है। वह खुद स्वीकार करती हैं कि वह एक उपन्यासकार हैं, लघुकथा लेखक नहीं। तो, हाँ, इस संग्रह की अधिकांश कहानियाँ काफी लंबी हैं। और नहीं, उनमें से सभी कहानियाँ पारंपरिक रूप से किसी एक विचार या समस्या के समाधान पर केंद्रित नहीं है। बल्कि ये सांस्कृतिक भिन्नताओं, भाषा, धर्म और पंथ से सीधे तौर पर जुड़कर उभरती और विकसित होती हैं। इसे उनके स्थानीय/वैश्विक दृष्टिकोण के साथ जोड़कर देखें और आपको ऐसी परिस्थितियां, पात्र और विचार मिलते हैं जो आपका ध्यान आकर्षित करते हैं और आपको उनके बारे में सोचने पर मजबूर करते हैं। फिर भी यह कथा कभी उबाऊ नहीं लगती बल्कि यह हमेशा रोमांच बनाए रखती है। यही कारण है कि मैं व्यावहारिक रूप से एक बैठक में इस किताब को पढ़ पाई।

दो कहानियाँ उपन्यासों में बदल गई: *एन अमेरिकन ब्रैट* और *क्रैकिंग इंडिया (आइस कैंडी मैन)*/ 'डिफेंड योरसेल्फ अगेंस्ट मी' के उपसंहार ने मेरी आंखों में आंसू ला दिए क्योंकि यह साहसपूर्वक, बहादुरी से उत्तम और हास्यास्पद के बीच एक पतली सी रेखा पर चलती है। बापसी सिधवा जिस कुशलता के साथ इसे आगे ले जाती है उससे उनकी प्रतिभा का पता चलता है। शायद इसलिए कि उनका लेखन मूल रूप से आँखों-देखे अनुभवों से प्रेरित है। मेरी नज़र में वह विशेष रूप से पाकिस्तान की जीवंत तस्वीर पेश करती है - एक ऐसा देश जहाँ अधिकांश भारतीय नहीं जाना चाहते - वह स्थान, लोग, भाषाएं ... ये सभी चीजें पढ़ने के अनुभव को समृद्ध बनाते हुए हमारे मन-मस्तिष्क को विस्तारित करती है।

बापसी सिधवा और जाकिर हुसैन अब हम केवल आपकी धरोहर से ही संतुष्ट हो सकते हैं।

> हम उस पीढ़ी को खो रहे हैं जिसने हमें अपने जीवन, कार्य, नेतृत्व और कल्पना से प्रेरित किया।

स्तंभकार बच्चों की लेखिका और वरिष्ठ पत्रकार हैं।

सदस्यता और

Membership Awards	Zone 4	Zone 5
Highest membership growth	Ghanshyam Kansal (RID 3090)	Anandtha Jothi (RID 3000)
Highest membership growth in %age	Ghanshyam Kansal (RID 3090)	Anandtha Jothi (RID 3000)
Highest expansion	Ghanshyam Kansal (RID 3090)	
Highest women membership growth	Jeetender Gupta (RID 3011)	
Highest existing membership retention	Nihir Dave (RID 3060)	Anandtha Jothi (RID 3000)
Highest new member retention	Mehul Rathod (RID 3055)	

रो ई अध्यक्ष स्टेफ़नी अर्चिक ने आईपीडीजी जीतेंदर गुप्ता को पुरस्कार प्रदान किया। बाएं से: आरपीआईसी पीडीजी पिंकी पटेल, रो ई निदेशक राजु सुब्रमण्यन, दीप्ति गुप्ता और रो ई निदेशक अनिरुद्धा रॉयचौधरी भी चित्र में उपस्थित हैं।

Public Image Champion Awards*

Zone 4	Zone 6	Zone 7
Nirmal Kunawat (RID 3056)	Asha Venugopal (RID 3030)	Subbarao Ravvuri (RID 3020)
Ghanshyam Kansal (RID 3090)	Nilesh Agarwal (RID 3240)	Manjoo Phadke (RID 3131)
Jeetender Gupta (RID 3011)	Rajendra Prasad Dhoju (RID 3292)	V Srinivas Murthy (RID 3192)
Nihir Dave (RID 3060)	Jayashree Mohanty (RID 3262)	

* Zone 5 Public Image Awards will be announced at a later date.

पब्लिक इमेज अवार्ड्स - 2023-24

Membership Awards	Zone 6	Zone 7
Highest membership growth	S P Bagaria (RID 3250)	Swati Herkal (RID 3132)
Highest membership growth in %age	S P Bagaria (RID 3250)	Swati Herkal (RID 3132)
Highest expansion	Rajendra Prasad Dhoju (RID 3292)	Swati Herkal (RID 3132)
Highest women membership growth	Rajendra Prasad Dhoju (RID 3292)	Manjoo Phadke (RID 3131)
Highest existing membership retention	S P Bagaria (RID 3250)	B C Geetha (RID 3182)
Highest new member retention	Nilesh Kumar Agarwal (RID 3240)	

रो ई मंडल 3234 के पीडीजी जे श्रीधर को रो ई अध्यक्ष स्टेफ़नी द्वारा पोलियो-मुक्त विश्व के लिए अंतरराष्ट्रीय सेवा पुरस्कार प्रदान किया गया। चत्र में पीआरआईपी केआर रविंद्रन और रो ई निदेशक नामांकित मार्था हेलमैन भी हैं।

अध्यक्ष स्टेफ़नी ने आईपीडीजी वी श्रीनिवास मूर्ति को पुरस्कार प्रदान किया। आरपीआईसी पीडीजी किशोर कुमार और रो ई निदेशक सुब्रमण्यन भी चित्र में शामिल हैं।

बाएं से: *पीआरआईडी कमल संघवी, आरआईडीएन टॉम गंप, आरआईडी सुब्रमण्यन, वैशाली और आईपीडीजी निहीर दवे, आरआईडीएन मार्था और आरआईडी रॉयचौधरी।*

चित्र: वी मुत्तुकुमारन

रो ई मंडल 3170

रोटरी क्लब होनावर

डीजी शरद पाई ने आल-इंडिया चेस फेडरेशन फॉर दी विजुअली चैलेंज्ड के साथ संयुक्त रूप से आयोजित दृष्टिबाधितों के लिए दो दिवसीय शतरंज प्रतियोगिता का उद्घाटन किया।

Rotary PEOPLE OF ACTION

मंडल गतिविधियाँ

रो ई मंडल 3201

रोटरी क्लब कोचीन मुज़िरिस सिटी

एसएनवी संस्कृत हायर सेकेंडरी स्कूल, एन परवुर, में एनएसएस इकाई की छात्राओं के लिए एक आत्मरक्षा प्रशिक्षण सत्र आयोजित किया गया।

रो ई मंडल 3211

रोटरी क्लब अंचल

अंचल की कुट्टनकारा आंगनवाड़ी को ₹15,000 मूल्य के खिलौने, गुड़िया, मिठाई और पेडस्टल पंखे दान किए गए।

रो ई मंडल 3250

रोटरी क्लब पटना कंकड़बाग

नवीन आदर्श मध्य विद्यालय, लोहियानगर, में कक्षा 1-8 के 170 से अधिक छात्रों की स्वास्थ्य जांच शिविर में जांच की गई।

रो ई मंडल 3191

रोटरी क्लब बैंगलोर सिटी सेंटर

अपने मासिक *प्रोजेक्ट ज़ीरो हंगर* के तहत, क्लब 300 से अधिक गरीब लाभार्थियों को भोजन वितरित करता है, जिसकी लागत 15,000 प्रति कार्यक्रम है।

रो ई मंडल 3261

रोटरी क्लब संबलपुर सेंट्रल

एक सरकारी स्कूल में WASH कार्यक्रम को निष्पादित किया गया और शौचालय खंडों के लिए एक पाइपलाइन बिछाई गई, जिससे लगभग 180 छात्र लाभान्वित होंगे।

रो ई मंडल 3291

रोटरी क्लब कलकत्ता

प्रोजेक्ट विज़न फॉर ऑल ने अब तक 15,000 से अधिक रोगियों को आंखों की जांच, चश्मा और मोतियाबिंद सर्जरी प्रदान की है।

वी मुत्तुकुमारन द्वारा संकलित

मंडल टीआरएफ योगदान

दिसंबर 2024 तक

वार्षिक कोष (AF) में SHARE, फोकस के क्षेत्र और विश्व कोष शामिल हैं।
पोलियोप्लस में बिल और मेलिंडा गेट्स फाउंडेशन शामिल नहीं हैं।

स्रोत: रो ई दक्षिण एशिया कार्यालय

(अमेरिकी डॉलर में)

मंडल संख्या		एनुअल फण्ड	पोलियो प्लस फंड	एंडोमेंट फण्ड	अन्य निधि	कुल योगदान
2981		47,869	11,361	0	38	59,269
2982		28,571	6,351	10,421	41,968	87,310
3000		32,037	2,681	1,000	295,336	331,055
3011		46,557	5,053	29,251	717,011	797,872
3012		7,032	151	1,500	641,188	649,871
3020		75,779	10,982	26,000	4,857	117,618
3030		26,990	3,375	4,190	74,000	108,555
3040		3,679	90	0	15,723	19,492
3053		46,946	300	0	0	47,246
3055		27,733	3,968	2,071	61,065	94,838
3056		16,241	1,218	60	133	17,651
3060		144,132	6,338	3,499	101,960	255,929
3070		15,837	682	0	0	16,519
3080		11,943	5,884	17,384	9,561	44,771
3090		14,066	109	17,000	0	31,175
3100		19,745	3,980	0	34,765	58,490
3110		15,231	777	1,129	183,643	200,780
3120		46,787	1,211	8,337	26,413	82,748
3131		405,593	15,704	48,524	242,463	712,284
3132		43,877	2,365	15,000	13,636	74,878
3141		356,169	26,964	104,000	1,442,227	1,929,360
3142		359,051	15,281	50,060	223,824	648,215
3150		96,590	12,394	92,251	734,364	935,599
3160		4,163	3,204	1,000	5,787	14,153
3170		32,633	20,135	2,000	93,014	147,782
3181		63,630	16,266	50	0	79,947
3182		56,120	3,298	12	8,509	67,939
3191		28,221	2,642	0	130,970	161,833
3192		94,453	3,008	1,000	33,105	131,566
3201		54,858	28,686	3,190	81,581	168,316
3203		30,805	9,651	15,000	4,690	60,147
3204		15,897	3,561	36,000	81	55,539
3211		16,261	3,287	0	11,212	30,760
3212		272,511	14,092	59,000	105,483	451,086
3231		14,449	5,346	65,115	30,400	115,309
3233		11,896	18,372	2,571	327,657	360,496
3234		104,891	24,261	69,746	725,960	924,858
3240		165,219	27,283	50,000	14,370	256,872
3250		136,590	4,677	1,000	53,327	195,594
3261		1,517	268	8,335	5,205	15,325
3262		62,712	2,187	1,307	0	66,206
3291		111,296	9,466	118,500	125,861	365,123
3220	Sri Lanka	43,188	3,072	4,052	17,247	67,559
3271	Pakistan	9,318	40,036	0	10,500	59,854
63	(former 3272)*	2,420	1,887	0	0	4,306
64	(former 3281)*	13,381	2,815	1,000	1,050	18,246
65	(former 3282)*	767	1,046	0	0	1,813
3292		68,575	21,629	30,026	100,052	220,283

*** Undistricted**

सदस्यता से बढ़कर, चलो एक समुदाय बनाएं

सुकुमारन नायर

लोगों से रोटरी में शामिल होने का उत्सुकता से आग्रह करने से पहले, यह आवश्यक है कि वे इसकी जड़ों-इसके उद्देश्य को समझें। इस दुनिया में पैदा हुए हर जीवन की तरह, रोटरी का जन्म एक उद्देश्य के साथ हुआ था, जिसे एक व्यक्ति की परिकल्पना ने आकार दिया गया था: पॉल हैरिस। उनका विचार सरल लेकिन गहरा था, विविध पृष्ठभूमि के पेशेवरों का विचारों को साझा करने, दोस्ती को बढ़ावा देने और सेवा में उद्देश्य खोजने के लिए एक साथ आना। इसका अर्थ सिर्फ एक क्लब खोलने का नहीं था; बल्कि एक आंदोलन की शुरुआत करना था। इन वर्षों में, रोटरी का मिशन वैश्विक मानवीय प्रयासों को शामिल करने के लिए विकसित हुआ, जैसे पोलियो के खिलाफ लड़ाई, जो 1979 में शुरू हुई और 125 प्रभावित देशों से इस बीमारी को सिर्फ दो देशों तक ले आई।

रोटरी सिर्फ एक ऐसी जगह नहीं है जहां लोग सामाजिक बनने के लिए इकट्ठा होते हैं। यह एक परिवार है जो दुनिया को बेहतर बनाने के जुनून एवं मूल्यों से बंधा है। मुझे याद है कि मेरे हजारों निवासियों के साथ एक टाउनशिप में जाने के बाद मैं रोटरी में शामिल हुआ था। काम के लिए लगातार यात्रा ने मेलजोल करना मुश्किल बना दिया, लेकिन रोटरी के साथ, मैं तुरंत एक समुदाय का हिस्सा बना गया - 40 से अधिक सदस्यों का एक परिवार - जिसने मेरा स्वागत किया। हमारा बंधन तेजी से बढ़ता गया, और जल्द ही हम सिर्फ परिचित नहीं थे; हम अपने समाज में वंचितों के उत्थान के लिए चलाई जाने वाली सार्थक परियोजनाओं में भागीदार थे। पृष्ठभूमि, उम्र और सामाजिक स्थिति में विविधता को देखना अविश्वसनीय रूप से प्रेरक है, और सभी परिवर्तन लाने के साझा लक्ष्य के साथ एक साथ काम कर रहे हैं।

रोटरी की सुंदरता यह है कि इसे केवल सदस्यों की भर्ती पर ध्यान केंद्रित नहीं करना चाहिए। इसे खुले दिल वाले स्वयंसेवकों की आवश्यकता है जो योगदान करने की स्वाभाविक पुकार को सुन सकते हो। रोटरी एक ऐसी जगह होनी चाहिए जहां लोग उन परियोजनाओं में शामिल हो जिनके साथ वे प्रतिध्वनित होते हो, और अपने परिवार एवं दोस्तों को साथ लाते हो। किसी बड़ी चीज़ का हिस्सा बनने की इच्छा से लेकर उसका हिस्सा बनने की आवश्यकता तक का यह परिवर्तन स्थायी बंधन बनाता है।

बहुत बार, उम्र और लिंग का कोटा पूरा करने की जिद में, क्लब उन सदस्यों को शामिल कर लेते हैं जो वास्तव में रोटरी के मूल्यों के साथ संरेखित नहीं होते हैं, और वे जल्द ही महसूस करते हैं कि वे फिट नहीं हो रहे हैं। मुझे याद है कि मैं बांग्लादेश में एक बैठक में गया था जहां क्लब अध्यक्ष ने सदस्यता के लिए तीन टी पर प्रकाश डाला था: टैलेंट, टाइम और *टका* (पैसा)। सदस्यों को रचनात्मक समाधान लाने, बैठकों एवं परियोजनाओं के लिए समय निकलने और यह समझने की आवश्यकता है कि अच्छा करने के लिए अक्सर संसाधनों की आवश्यकता होती है। केवल बकाया का भुगतान करना काफी नहीं होता - मन से एवं कर्म से प्रतिबद्ध होकर सच्ची भागीदारी निभाई जाती है।

लैंगिक समानता महत्वपूर्ण है, लेकिन विशिष्ट जनसांख्यिकी के लिए बहुत ज्यादा जोर देने से रोटरी का मिशन विचलित हो सकता है। मैंने कभी भी अपने क्लब या मेरे द्वारा देखे गए किसी भी क्लब में लैंगिक बाधाओं को महसूस नहीं किया है। कोटा के बजाय, रोटरी को ऐसे नागरिकों की आवश्यकता होती है जो एक दृष्टिकोण के साथ एवं पूरे जूनून से अच्छा करना चाहते हो - ऐसे लोग जो गहराई से जुड़ना चाहते हो, प्रामाणिक रूप से सेवा करते हो और स्थायी प्रभाव डालते हो। रोटरी को न केवल हाथों की जरूरत है, बल्कि सदस्यता के भीतर और उन लोगों के साथ स्थायी संबंधों को बढ़ावा देने के लिए ऐसे दिलों की भी जरूरत है जिनका हम उत्थान करना चाहते हैं।

आइए सीमाओं को तोड़ें, विभाजनों को मिटाए, और एक एकजुट रोटरी बनाए। साथ में, हम अधिक हासिल कर सकते हैं, दूसरों को प्रेरित कर सकते हैं और - एक रोटरी, एक विश्व - की शक्ति के प्रमाण के रूप में बड़ी, अधिक प्रभावशाली परियोजनाओं को चला सकते हैं।

लेखक रोटरी क्लब हिरानंदानी एस्टेट, रो ई मंडल 3142 के सदस्य हैं।

LBW

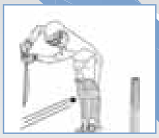

व्हाट्सएप ब्लूज़

टीसीए श्रीनिवासा राघवन

पिछले महीने तक मैं लगभग 15 व्हाट्सएप ग्रुप में था। फिर एक दिन मैंने परिवार और पेशेवर समूहों के छह ग्रुप्स के अलावा सभी को छोड़ दिया। जिन ग्रुप्स को मैंने छोड़ा, उनके शेष सदस्य आहत, भयभीत, क्रोधित और हैरान थे। मैंने उन्हें समझाने की कोशिश की कि मैंने इसलिए छोड़ा क्योंकि व्हाट्सएप ने उन लोगों को एक मंच पर ला दिया था जिनसे बचते हुए मैंने पूरी ज़िंदगी बिता दी। दस साल में एक बार नमस्ते कहना, हाल चाल पूछना एक बात है, मगर रोज़ सुबह उठकर इन लोगों को ऐसा व्यवहार करते हुए देखना बिल्कुल दूसरी बात है जैसे कि वे हर चीज के बारे में सब कुछ जानते हों। यहीं बात पारिवारिक ग्रुप्स के बारे में भी सच है, लेकिन जैसा कि किसी ने कहा है, दोस्तों की तरह आप अपने रिश्तेदारों को नहीं चुन सकते हैं। अटल बिहारी वाजपेयी ने चीन और पाकिस्तान जैसे पड़ोसियों के बारे में भी यही बात कही थी।

फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम और व्हाट्सएप जैसे इन सोशल मीडिया ग्रुप्स के साथ मेरी एक बड़ी समस्या यह है कि वे केवल परिचितों और यहां तक कि उन लोगों को आपसे असभ्य होने की अनुमति देते हैं जिन्हें आप जानते भी नहीं है। वास्तव में, यहां तक कि अच्छे दोस्त भी कभी-कभी लाइन पार करते हैं। हाल ही में मैंने कॉलेज ग्रुप्स में से एक पर एक चुटकुला पोस्ट किया और मुझे तुरंत फटकार मिली कि यह घटिया था और इसकी हमारे जैसे ग्रुप्स में इसका कोई जगह नहीं है। मैंने उससे कुछ *ईसबगोल* लेकर ग्रुप छोड़ने के लिए कहा।

वास्तव में, इन्हीं कारणों से मैंने कुछ साल पहले फेसबुक और ट्विटर दोनों छोड़ दिए थे, और इंस्टाग्राम पर कभी नहीं आया। मैं ईमानदारी से समझ नहीं पा रहा हूं कि कोई भी व्हाट्सएप ग्रुप का सदस्य क्यों बने रहना चाहेगा, जिसमें बूढ़े और युवा लोगों की एक प्रेरक भीड़ होती है, जो या तो कभी बातचीत नहीं करते, लेकिन एक दृश्यरतिक तरीके से सदस्य बने रहते हैं, या, जब वे बात करते हैं, तो एक बेख़बर राय व्यक्त करते है या अनगिनत फॉरवर्ड भेजते रहते है। मेरा मतलब है, अपने वार्ताकारों का सावधानीपूर्वक चुनाव करते हुए इसे द्विपक्षीय रूप से क्यों न किया जाये? एक आदमी की दिलचस्प खबर आमतौर पर हर किसी के लिए सामान्य बात होती है।

मेरे लिए यह चौंकाने वाला था, लेकिन मुझे यह मानना पड़ेगा और मैं शर्मिंदगी के साथ स्वीकार करता हूं कि मैं एक ऐसा व्यक्ति बन गया था जो हर तरह की चीजें दूसरों को फॉरवर्ड करता रहता था, यह सोचकर कि उन्हें वे मज़ेदार या दिलचस्प लगेंगे। इस निराशाजनक एहसास ने मुझे विभिन्न ग्रुप्स को छोड़ने के लिए प्रेरित किया। इन ग्रुप्स में सिर्फ एक, दो या शायद तीन लोग ही थे जिनकी रुचियां मुझसे मिलती थीं। तो फिर मैं बाकी लोगों के साथ ये सब क्यों साझा कर रहा था? इसका जवाब साफ़ था: क्योंकि मैं ऐसा कर सकता था। यह ठीक वैसा ही था जैसे एक कमरे में बहुत सारे लोगों के बीच जाकर उनसे बात करना, सिर्फ इसलिए कि वे वहां मौजूद हैं। दूसरे शब्दों में, मैं शायद एक उबाऊ इंसान बन चुका था। माफ़ करना, शायद नहीं... बल्कि निश्चित रूप से।

इसकी लत भी थी। शुरुआत में पुराने दोस्तों एवं परिचितों से संपर्क करने की जो ख़ुशी थी वह धीरे-धीरे एक जुनूनी में बदल गई। मुझे पता है कि दूसरों की भी ऐसा ही स्थिति है। हो सकता है वे कुछ पोस्ट नहीं करते हो लेकिन वे अपना फोन देखते रहते हैं। मैंने एक बार एक विश्वविद्यालय में व्याख्यान दिया था जहाँ लगभग 800 छात्रों ने शायद ही मेरी बात का एक भी शब्द सुना हो।

वे सभी अपना फोन देखने में व्यस्त थे... ■

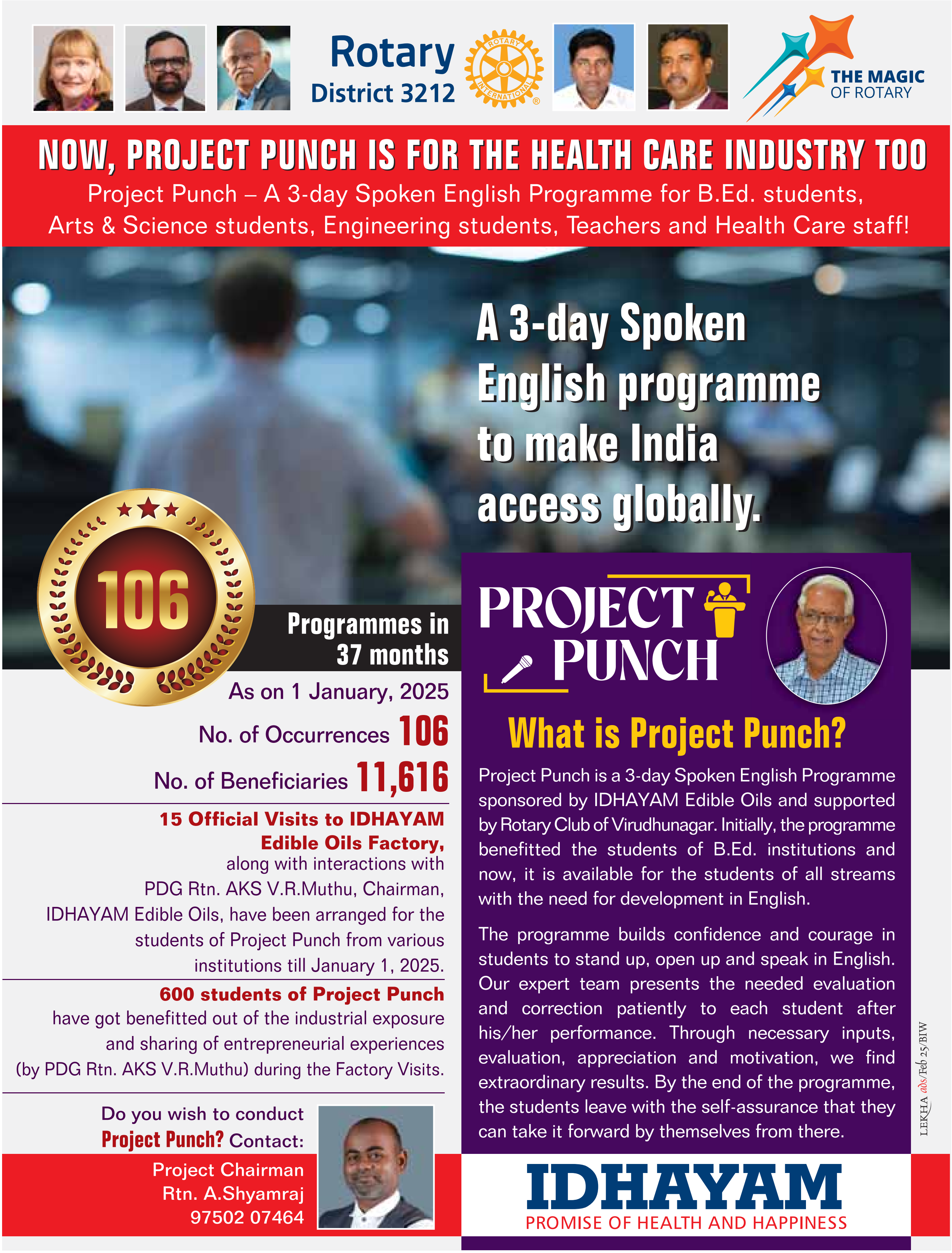
Rotary
District 3212
ROTARY INTERNATIONAL
THE MAGIC OF ROTARY
NOW, PROJECT PUNCH IS FOR THE HEALTH CARE INDUSTRY TOO
Project Punch – A 3-day Spoken English Programme for B.Ed. students, Arts & Science students, Engineering students, Teachers and Health Care staff!
A 3-day Spoken English programme to make India access globally.
106
Programmes in 37 months
As on 1 January, 2025
No. of Occurrences 106
No. of Beneficiaries 11,616
15 Official Visits to IDHAYAM Edible Oils Factory, along with interactions with PDG Rtn. AKS V.R.Muthu, Chairman, IDHAYAM Edible Oils, have been arranged for the students of Project Punch from various institutions till January 1, 2025.
600 students of Project Punch have got benefitted out of the industrial exposure and sharing of entrepreneurial experiences (by PDG Rtn. AKS V.R.Muthu) during the Factory Visits.
Do you wish to conduct Project Punch? Contact:
Project Chairman
Rtn. A.Shyamraj
97502 07464
PROJECT PUNCH
What is Project Punch?
Project Punch is a 3-day Spoken English Programme sponsored by IDHAYAM Edible Oils and supported by Rotary Club of Virudhunagar. Initially, the programme benefitted the students of B.Ed. institutions and now, it is available for the students of all streams with the need for development in English.
The programme builds confidence and courage in students to stand up, open up and speak in English. Our expert team presents the needed evaluation and correction patiently to each student after his/her performance. Through necessary inputs, evaluation, appreciation and motivation, we find extraordinary results. By the end of the programme, the students leave with the self-assurance that they can take it forward by themselves from there.
IDHAYAM
PROMISE OF HEALTH AND HAPPINESS
LEKHA ads/Feb 25/BIW

ADVT.

Registered No. TN/CCN/359/2024-2026 | Total number of pages in this monthly issue, including cover, 84. Price: ₹40
Licensed to post WPP No.TN/PMG(CCR)/WPP 421/24-26
Regd with RNI TNHIN/2001/05271. Rotary Samachar Published 1st week of every month. Posted at Egmore RMS Patrika Channel. Date of posting: 6–12 every month.

ADVT.